गुरुदत्त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनवासी

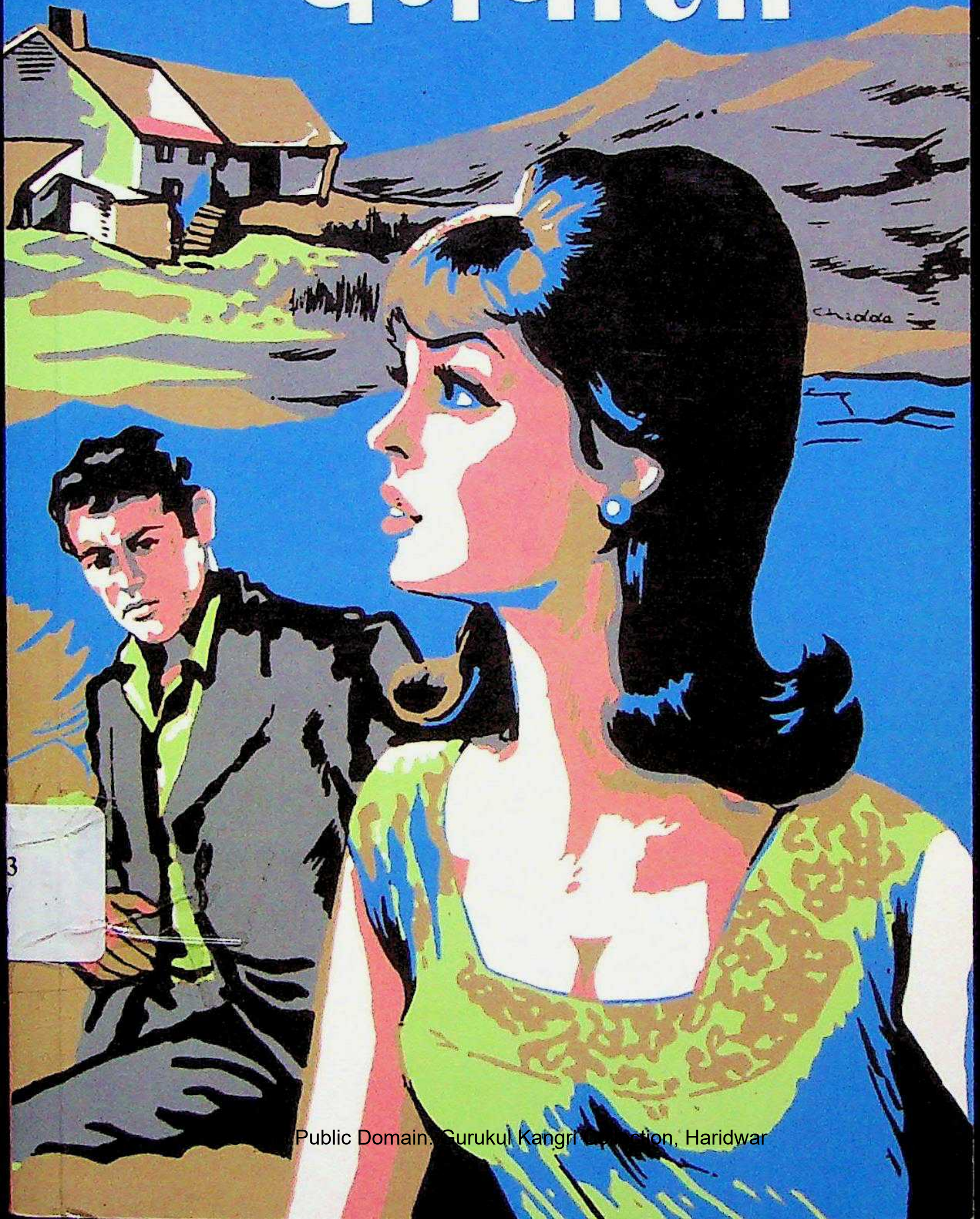

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167976

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्द पॉकेट बुक्स

वनवासी

गुरुदत्त स्वतंत्रता सेनानी और समाजसेवी के साथ-साथ हिन्दी के महान उपन्यासकार थे। विज्ञान के विद्यार्थी और पेशे से वैद्य होने के बावजूद वे बीसवीं शती के एक ऐसे सिद्धहस्त लेखक थे, जिन्होंने लगभग दो सौ उपन्यास, संस्मरण, जीवन-चरित आदि का सृजन किया और भारतीय इतिहास, धर्म, दर्शन, संस्कृति, विज्ञान, राजनीति और समाजशास्त्र के क्षेत्र में भी अनेक उल्लेखनीय शोध-कृतियाँ दीं। राष्ट्रसंघ के साहित्य-संस्कृति संगठन *यूनेस्को* के अनुसार गुरुदत्त 1960–1970 के दशकों में हिंदी साहित्य में सर्वाधिक पढ़े जानेवाले लेखक रहे हैं।

गुरुदत्त को क्रांतिकारियों का गुरु भी कहा जाता है। जब वे लाहौर के नेशनल कॉलेज में हेडमास्टर थे, तब सरदार भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु इनके सबसे प्रिय शिष्य थे।

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनवासी

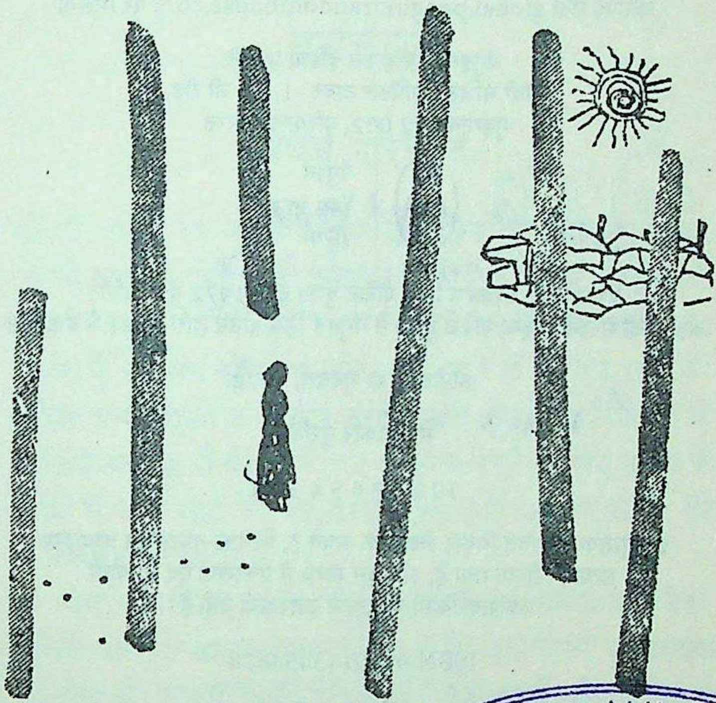

गुरुदत्त

Central Library
167976
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167976

हिन्द पॉकेट बुक्स
पेंगुइन रैंडम हाउस इम्प्रिंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्द पॉकेट बुक्स

यूएसए | कनाडा | यूके | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया
न्यू ज़ीलैंड | भारत | दक्षिण अफ्रीका | चीन

हिन्द पॉकेट बुक्स, पेंगुइन रैंडम हाउस ग्रुप ऑफ़ कम्पनीज़ का हिस्सा है,
जिसका पता global.penguinrandomhouse.com पर मिलेगा

पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्रा. लि.,
चौथी मंजिल, कैपिटल टावर -1, एम जी रोड,
गुड़गांव 122 002, हरियाणा, भारत

R
089.9143
GUP-V

पेंगुइन
रैंडम हाउस
इंडिया

प्रथम हिन्दी संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा 1972 में प्रकाशित
यह हिन्दी संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स में पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा 2021 में प्रकाशित

कॉपीराइट © गुरुदत्त, 1972

सर्वाधिकार सुरक्षित

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, जिनका यथासंभव तथ्यात्मक सत्यापन किया गया है, और इस संबंध में प्रकाशक एवं सहयोगी प्रकाशक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं हैं।

ISBN 9780143454878

मुद्रकः रेप्रो इंडिया लिमिटेड

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर विक्रय या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंद अथवा किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के ख़रीददार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं।

www.penguin.co.in

MIX
Paper from
responsible sources
FSC
www.fsc.org
FSC® C047271

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनवासी

प्रथम परिच्छेद

चौधरी धनिक का लड़का बड़ौज दस कोस की पैदल यात्रा कर अपनी बस्ती में पहुंचा था। असम देश की एक पहाड़ी की तलहटी में घने जंगल से घिरी हुई वनवासी पहाड़ियों की यह बस्ती थी। पचास के लगभग झोंपड़े थे और उनमें इतने ही परिवार रहते थे। ये लोग वन्य पशुओं का शिकार करते थे और अपनी आवश्यकताओं के लिए उन पशुओं की खालें तथा अस्थियां बेचने के लिए समीप के नगरों में जाते रहते थे। यह बस्ती सभ्य और असभ्य संसार की मध्यवर्ती सीमा पर थी।

जब, जहां भी मानवों का समूह बनता है, वहीं उनका कोई नेता, चौधरी, सरगना अथवा राजा बन जाता है। ऐसा बनना आवश्यक भी होता है। मानव-प्रकृति एक समान नहीं होती और उच्छृंखल प्रकृतिवालों को नियंत्रण में रखने के लिए सर्वमानित नेता अर्थात् सरगना बनाना अत्यावश्यक हो जाता है। यह प्रथा सभ्य-असभ्य, नगरों में बसे हुओं अथवा वनवासियों, सबमें समान रहती है। उस सरगने अथवा चौधरी की मान-प्रतिष्ठा ही उस क्षेत्र में, जिसमें उसका काम होता है, व्यवस्था बनाए रखने में सहायक होती है।

इसी आवश्यकता के अनुसार ही नागाओं में इस कबीले का चौधरी धनिक अपने कबीले में सम्मानित और प्रतिष्ठित माना जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। अपनी युवावस्था में वह अति बलशाली और सबसे अधिक बुद्धिमान पिता का पुत्र समझा जाता था। इसका पिता भी चौधरी था। यौवनारम्भ में धनिक ने कबीले की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी कन्या सोना से विवाह कर लिया था।

सोना के माता-पिता इस विवाह से प्रसन्न नहीं थे, परन्तु सोना के हठ के सम्मुख उनको नतमस्तक होना पड़ा। वे समझते थे कि धनिक के पिता ने अपनी पदवी का अनुचित लाभ उठाकर उनकी लड़की को बरगलाया है। सोना के धनिक को स्वीकार करने पर ही कबीले के सब परिवारों ने इस सम्बन्ध को स्वीकार किया था और इस अवस्था में सोना के माता-पिता को चुप कर जाना पड़ा। उनका अपना विचार तो अपनी लड़की को कबीले के बाहर एक नागा युवक के साथ, जो अब खेतीबाड़ी करने लगा था, विवाह करने का था। इस सम्बन्ध में वह कई बार सोना के माता-पिता से मिलने के लिए भी आया था। पर सोना का चयन तो धनिक ही था।

इस बात को बीते बीस वर्ष हो गए थे। धनिक के माता-पिता का देहान्त हो गया था और अब धनिक स्वयं चौधरी बन गया था। सोना का लड़का अब अपने तीर-कमान लेकर स्वतन्त्र रूप से शिकार खेलने के लिए जाता था और माता-पिता को अतिप्रिय था। सोना इच्छा कर रही थी कि वह उस जैसी ही सुन्दर कन्या के साथ विवाह कर उनका कुल चलाएगा; परन्तु कबीले में उसकी दृष्टि में अपने लड़के के लिए कोई लड़की ही नहीं जंचती थी।

इसपर भी बड़ौज की बहू का निर्वाचन हो चुका था—आज से तीन वर्ष पूर्व। वह भी कबीले की ही एक लड़की थी। उसका नाम था बिन्दू। लड़के-लड़की में बात हो चुकी थी, परन्तु लड़की के माता-पिता को अभी बताया नहीं गया था। बिन्दू की विवाह-योग्य आयु हो गई है, इसका निश्चय होना था; और यह निश्चय कबीले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पुरोहित साधू को करना था।

प्रथा के अनुसार इस निश्चय के होने की सूचना लड़की के माता-पिता को मिलती, तो वे उसको वधुओं के पहनने योग्य उत्त-रीय से ढांप देते और फिर इस बात का समाचार कि अमुक लड़की के विवाह का समय आ गया है, कबीले में फैल जाता था। उचित युवक उसके लिए यत्न करते और माता-पिता तथा चौधरी की अनु-मति से विवाह हो जाता।

बिन्दू के विषय में पुरोहित की घोषणा होती ही नहीं थी। बड़ौज विवाह की इच्छा करने लगा था और उसको बिन्दू पत्नी के रूप में उपयुक्त प्रतीत हुई थी। बस्ती के पास स्नान करती हुई बिन्दू को देखकर ही उसकी इच्छा विवाह करने की हुई थी और उसने बिन्दू को अपने मन की बात बताई तो बिन्दू ने कहा, "चौधरी से कहो कि मेरे माता-पिता से बातचीत करे।"

यह बात जब बड़ौज ने चौधरी से कही तो उसने बताया कि जब तक साधू उसको युवती घोषित नहीं करता, कोई उससे विवाह की इच्छा नहीं कर सकता।

बड़ौज धैर्य से इस घोषणा की प्रतीक्षा कर रहा था। बिन्दू से छोटी आयु की लड़कियों के विषय में घोषणा हो चुकी थी, परन्तु न जाने बिन्दू पर पुरोहित की दृष्टि क्यों नहीं गई कि उसके विषय में वह कुछ कहता ही नहीं था।

बड़ौज और बिन्दू मिलते-जुलते थे, परन्तु कबीले के नियम से बंधे हुए अपने मन की बात किसीसे कह नहीं सकते थे। इस प्रतीक्षा में तीन वर्ष व्यतीत हो गए। लड़की की छाती का उभार और अन्य यौवन के लक्षण तो अब सब कबीले वालों को दिखाई देने लगे थे और इस विषय में पुरोहित का मौन सबके लिए विस्मय का कारण बन रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीले के लोग अपनी खालें और दूसरी वन की उपज बेचने तथा कपड़ा इत्यादि आवश्यक पदार्थ क्रय करने नगरों में जाया करते थे। इसके लिए दस-बीस-तीस कोस की यात्रा करनी पड़ती थी।

एक ऐसी ही यात्रा पर चौधरी का लड़का बड़ौज गया हुआ था। वह तीन दिन की यात्रा के पश्चात् घर लौटा। अंतिम पड़ाव की दस कोस की यात्रा कर वह अंधेरा हो जाने के पश्चात् बस्ती में पहुंचा। वह अभी बस्ती से अन्तर पर ही था कि बिन्दू एक पेड़ के नीचे खड़ी उसकी प्रतीक्षा करती मिली। बिन्दू को विदित था कि बड़ौज आ रहा है और वह अनुमान लगा, उसके आने के समय मार्ग-तट पर जा खड़ी हुई थी।

बड़ौज को सन्देह हुआ तो वह ठहर गया और अपने थैले से, जो उसने कंधे से लटकाया हुआ था, एक लम्बी-लम्बी चमकदार वस्तु निकाली और उसको उस ओर कर दिया जिधर से उसको आहट सुनाई दी थी। वह बैटरी की टार्च थी जिसे वह लुमडिंग से दो रुपये में खरीदकर लाया था। बड़ौज ने बटन दबाया तो प्रकाश हो गया ओर बिन्दू सामने खड़ी मुस्कराती दिखाई दी। इस बस्ती में यह टार्च पहली बार आई थी और इसके प्रकाश से चकाचौंध बिन्दू ने अपनी आंखों के आगे हाथ धर लिया था।

बड़ौज ने बटन पर से अंगूठा उठाया और अंधेरा हो गया। बिन्दू लपककर उसके गले में बांह डाल उससे लिपट गई। बड़ौज ने कसकर आलिंगन किया और बोला, "यह मैं तुम्हारे लिए लाया हूं।"

"सत्य?"

"हां, यह एक नई प्रकार की लालटेन है, जो बिना तेल के जलती है।"

"परन्तु मुझे तो यह नहीं चाहिए।"

"तो तुम्हें क्या चाहिए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा दिल तो तुमसे विवाह करने के लिए करता है।"

"परन्तु अभी तुम्हारी विवाह के लायक आयु तो हुई नहीं!"

"मां कहती है कि हो गई है। कल मां और बाबा में बातचीत हुई है। मां ने कहा था कि मेरा विवाह हो जाना चाहिए। बाबा कहता था कि साधू से पूछूंगा। बाबा आज बहुत देर तक साधू से बातें करता रहा है। न जाने उसने क्या कहा है कि मां और बाबा परस्पर बहुत चिन्ता में बातचीत करते रहे हैं।"

"क्या कहा होगा उसने?"

"मैं क्या जानूं! तुम साधू से मिलकर पूछो, नहीं···"

"नहीं तो क्या?"

"पहले पूछ लो फिर बताऊंगी।" इतना कहकर उसने बड़ौज को छोड़, उससे पृथक् होकर कहा, "अब जाओ, तुम्हारी मां तुम्हारी : प्रतीक्षा कर रही है।"

"तुम कैसे जानती हो यह?"

बिन्दू ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और वह भाग गई। बड़ौज उसको अंधेरे में बस्ती की ओर विलीन होता देखता रहा। जब वह अंधकार में विलीन हो गई तो वह भी बस्ती की ओर चल पड़ा। वह अभी दो पग ही गया था कि उसको अपने कन्धे पर किसीके हाथ रखने का अनुभव हुआ। वह एक सतर्क युवक की भांति एकदम घूम-कर कंधे पर रखे हुए हाथ को पकड़ बैठा।

"छोड़ो।" यह साधू पुरोहित की आवाज़ थी।

"ओह!" बड़ौज के मन में भय समा गया। वह सोचने लगा कि साधू ने उसको बिन्दू से आलिंगन करते देख लिया है और यह कबीले के नियम के विरुद्ध है। इस कारण वह कांप उठा। साधू ने धीरे से कहा, "मैंने तुम दोनों को गले मिलते देख लिया है।"

बड़ौज ने साहस पकड़कर कहा, "तो फिर क्या हुआ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह विवाह के पूर्व वर्जित है।"

"मां का पुत्र से प्यार भी?"

"वह तुम्हारी मां नहीं है।"

"बहन तो हो सकती है।"

"वह तुमसे विवाह करना चाहती है, मैंने सुन लिया था।"

"किया तो नहीं।"

"चलो चौधरी के पास। तुम दण्ड के भागी हो।"

बड़ौज चुप रहा। साधू ने उसको बांह से पकड़कर ऐसे ले जाना चाहा जैसे वह उसका बन्दी हो। बड़ौज ने झटका देकर अपनी बांह छुड़ा ली और बोला, "मैं भाग नहीं रहा, चलो चलता हूं।"

चारों ओर अंधेरा था। सब खाना-पीना कर सोने की तैयारी में लगे थे। ये दोनों बस्ती से गुज़रते हुए बस्ती के पार, ठीक किनारे पर चौधरी के झोंपड़े के बाहर जा खड़े हुए। साधू ने आवाज़ दी, "चौधरी! बाहर आओ!"

धनिक झोंपड़े से निकल आया। बड़ौज यह कहकर कि वे दोनों बातें करें और वह स्वयं भीतर सामान रखने जा रहा है, भीतर चला गया। वह भीतर गया और थैला अपनी मां के पास रख और अपनी टेंट से रुपये निकालकर मां को देते हुए बोला, "मां! तुम इनको समेटो, मैं आता हूं।"

"क्या बात है?"

"कुछ नहीं, साधू झगड़ा करने के लिए आया है।"

"क्या झगड़ा करता है?"

बड़ौज ने बताया नहीं। झोंपड़े से निकलकर उन दोनों बड़ों के समीप खड़ा हो गया। साधू कह रहा था, "पचास रुपये।"

"बहुत अधिक हैं।" धनिक का कहना था।

"बिन्दू जैसी लड़की से विवाह भी तो बड़ी बात है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु यह विवाह का मूल्य तो नहीं है। यह तो इस बात का मूल्य है कि तुमने बड़ौज को किसी लड़की से आलिंगन करते देखा है।"

"दोनों में घना सम्बन्ध है।"

"देखो साधू! तुमने इतनी बड़ी होने पर भी बिन्दू को अभी विवाह के योग्य घोषित नहीं किया, जबकि उससे छोटी लड़कियों के विवाह हो चुके हैं।"

"भगवान ने प्रेरणा नहीं दी।"

इससे चौधरी का मुख बन्द हो गया। परन्तु बड़ौज ने कह दिया, "बाबा, यह झूठ बोलता है। भगवान ने कहा है, परन्तु इसके मन में पाप है।"

साधू बोला, "देखो चौधरी! तुम्हारा लड़का क्रिस्तान हो गया है।"

"यह भी झूठ है।"

"तो कल पंचायत निर्णय करेगी।"

"करने दो! तुम जैसे झूठे की कोई नहीं सुनेगा।"

दोनों बाप-बेटे को वहीं छोड़ साधू ने अपने झोंपड़े का रास्ता पकड़ा। चौधरी कुछ देर तक खड़ा विचार करता रहा; फिर साधू के पीछे चल पड़ा। बड़ौज भागा हुआ झोंपड़े में गया और वहां से कोई चीज़ लेकर उन दोनों के पीछे-पीछे चल पड़ा।

उसे जाते देख सोना पुछने लगी, "कहां जा रहे हो?"

"मां! अभी आया।"

इसके लगभग चौथाई घण्टे बाद घायल अवस्था में चौधरी अपने झोंपड़े में आया। उसने आते ही अपनी पत्नी से कहा, "सोना, शीघ्र ही प्रकाश करो!"

सोना ने चकमक घिसा, बत्ती जलाई और देखा कि उसके पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कन्धे से रक्त बह रहा है। उसने तुरन्त आग जलाई और झोंपड़ी के किसी कोने में रखी एक जड़ी निकालकर पानी में उबाल चौधरी के घाव पर बांध दी।

अभी वह बांध ही रही थी कि बड़ौज भी लौट आया। उसके हाथ में रक्त रंजित छुरा था। वह पिता को रक्त से लथपथ देख बोला, "बाबा! अब क्या हाल है?"

"तुम कहां से आ रहे हो?"

"तुमपर किए आक्रमण का बदला लेकर।"

"क्या किया है तुमने उसको?"

"उसका शव नदी में बहा दिया है।"

"यह तो घोर पाप हो गया है!"

"नहीं बाबा, उसे उसके किए का फल मिला है। उसने अपने मन का पाप भगवान के नाम लगाकर भारी अपराध किया था।"

"तो भगवान उससे निपट लेता!"

"उसने ही तो मुझे ऐसा करने के लिए कहा था।"

"मुझे भय लग रहा है।"

"चिन्ता न करो बाबा! मैं निपट लूंगा।"

साधू की पत्नी का देहान्त हुए कई वर्ष हो चुके थे और वह बिन्दू से विवाह की इच्छा रखता था। यही कारण था कि वह बिन्दू के सज्ञान होने की घोषणा नहीं करता था। उसका विचार था कि बिन्दू के माता-पिता उससे यह घोषणा करने के लिए कहेंगे, तो वह बिन्दु से विवाह का प्रस्ताव कर देगा। बिन्दू के माता-पिता आए नहीं और इसलिए घोषणा भी नहीं हुई।

बिन्दू की सखी काजू, जो उससे दो वर्ष छोटी थी, के विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोषणा हुई तो बिन्दू की मां को चिन्ता लगने लगी। उसने बिन्दु के पिता से कहा और उस दिन वह साधू से मिलकर इस बात की घोषणा किए जाने की मांग करने लगा। साधू ने पूछ लिया, "किससे विवाह करना चाहते हो लड़की का?"

"चौधरी के लड़के बड़ौज से।"

"मैं भी उससे विवाह का इच्छुक हूं।"

"ऐसी स्थिति में लड़की ही निर्णय करेगी।"

"तुम क्यों नहीं?"

"प्रथा ऐसी ही है।"

इसपर साधू ने लेन-देन की बात करनी चाही। बहुत बातें हुईं और निर्णय हुआ कि बिन्दू की मां से पूछकर बात होगी। साधू ने कह दिया, "विवाह मेरे साथ मान जाओगे तो घोषणा कर दूंगा, नहीं तो इस विषय में भगवान की अनिच्छा बनी रहेगी और बिन्दू भी लीमा की लड़की लुग्गी की भांति क्रिस्तानी के पास भाग जाएगी और फिर वे ही उसका विवाह करेंगे।"

बिन्दू का पिता अपने झोंपड़े में लौट अपनी पत्नी से बात करता रहा। बिन्दू उनकी बातें सुन नहीं सकी, पर उसको कुछ ऐसा समझ आया कि उसके विवाह के विषय में ही बात हो रही है। पिछले दिन उसकी मां ने अपने पति को कहा था कि वह साधू के पास जाए और लड़की के विवाह की स्वीकृति ले आए।

इस विचार से बिन्दू को बड़ौज की याद आ गई। उसको विदित था कि वह लुमडिंग गया हुआ है। खालों का गट्ठर पीठ पर उठाए हुए उधर को जाते हुए बिन्दू ने देखा था। उसके वापस आने की बात जानने के लिए वह बड़ौज के झोंपड़े को चल पड़ी। वहां सोना चावल छांट रही थी। उसके समीप बैठती हुई वह बोली, "लाओ मौसी! मैं छांट दूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोना ने बिन्दू को देखा तो पूछ लिया, "तेरा विवाह कब होगा?"

"मैं क्या जानू!"

"तुम्हारी सखी काजू का तो हो गया है।"

"बड़ौज कब आएगा।"

"क्यों पूछती हो, क्या उससे विवाह करोगी?"

"वह ठीक नहीं है क्या?"

भला सोना अपने लड़के को कैसे कह सकती थी कि वह अच्छा नहीं! वह चुपचाप बिन्दू का मुख देखने लगी। बिन्दू के मुख पर लाली दौड़ गई। सोना बिन्दू की रूपरेखा देखकर विचार कर रही थी कि वह बड़ौज की बहू के रूप में ठीक है अथवा नहीं। यद्यपि सोना जितनी सुन्दर तो वह नहीं थी, इसपर भी कबीले की अन्य लड़कियों में वह सबसे सुन्दर थी। साथ ही वह अब यौवन में पदार्पण कर चुकी थी। उसकी आंखों में यौवन की मस्ती भी दिखाई देने लगी थी।

सोना को अपनी ओर ध्यान से देखने पर बिन्दू लजा गई और उसने सोना के हाथ से चावल की टोकनी लेकर, उसके कंकड़ बीनने आरम्भ कर दिए।

"बड़ौज से बात की है?" सोना ने पूछा।

उसने अपनी आंखें चावलों से उठाए बिना सिर हिलाकर इनकार कर दिया। इसपर सोना ने पूछ लिया, "तो यह कैसे होगा?"

बिन्दू ने अब सोना की आंखों में देखते हुए कह दिया, "उसके आने पर पूछूंगी।"

"वह आज सायंकाल तक लौटेगा।"

बिन्दू के मन में उमंग उठी और टोकनी भूमि पर रख वह नाचने लगी। सोना हंस पड़ी। बिन्दू गाती हुई अपने झोंपड़े की ओर भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई।

सोना के हंसने का शब्द सुनकर चौधरी झोंपड़ी से बाहर निकल आया था। सामने खूंटे से बंधी गाय बांय-बांय कर कर रही थी।

"क्यों, हंस क्यों रही हो?" चौधरी ने कहा, "गाय को ले जाओ और लीमा के सांड से मिला लाओ! बांय-बांय करने लगी है।"

"मैं गाय की बात पर नहीं हंस रही। एक और गाय बांय-बांय करती हुई यहां से गई है।"

"कौन थी?"

"गदरे की बेटी बिन्दू! वह भी अपने उगते सूरजवा की प्रतीक्षा कर रही है।"

"हां, वह विवाहने योग्य हो गई है। साधू के मन में कुछ मैल प्रतीत होता है। उसके विषय में वह भगवान का आदेश सुनाता ही नहीं।"

"वह बड़ौज से विवाह करना चाहती है।"

"सच?"

"वह मुझको कह गई है।"

"कल बड़ौज से पूछकर मैं साधू से बात करूंगा।"

"हां, उस गौ का उद्धार कर दो!"

बात रात को ही हो गई। साधू आया और विवाह से पूर्व ही बिन्दू और बड़ौज के परस्पर मिलने की बात करने लगा। चौधरी ने कह दिया, "साधू! लड़की सज्ञान हो गई है। उसके विषय में भगवान का आदेश सुना दो। और फिर वह बड़ौज से विवाह कर लेगी।"

"क्या दोगे?"

"क्या चाहते हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पचास रुपये।"

इतने में बड़ौज वहां आ गया और झगड़ा हो गया। साधू गया तो चौधरी उसके पीछे समझाने चला गया। बड़ौज को सन्देह था कि झगड़ा होगा। इस कारण वह भी अपना छुरा निकाल उसके पीछे चल पड़ा। दोनों नदी के किनारे खड़े हो गए। चौधरी ने पूछा, "यहां किसलिए आए हो?"

"भगवान से उसका सिर मांगने के लिए, जो मुझे पापी कह रहा है।"

"मैं तुमसे भाव-ताव करने के लिए आया हूं। पचीस रुपये लोगे?"

"अब एक सौ! पचास लड़के-लड़की के विवाह से पूर्व मिलन को छिपाने के लिए और पचास बड़ौज के मुझको पापी कहने के बदले में।"

"परन्तु पापी तो तुम हो ही। रुपया लेकर तुम भगवान की बात बदलना चाहते हो?"

"नहीं, तुम झूठ बोलते हो। यह तो तुम्हारे बेटे का पाप छिपाने के लिए मांग रहा हूं।"

झगड़ा बढ़ गया। चौधरी ने साधू के मुख पर एक घूंसा दे मारा। साधू ने कमर से बंधे हुए छुरे को निकालकर वार कर दिया। वार तो हृदयस्थल पर किया गया था, परन्तु चौधरी उसको दूसरा मुक्का मारने के लिए कुछ समीप हो गया था। इस कारण छुरा कन्धे पर लगा।

"चौधरी 'हा!' कहकर वहीं बैठ गया। साधू ने समझा, मर गया है। अत: वह वहां से टल जाने के लिए अपने झोंपड़े की ओर लौटा। इस समय तक बड़ौज वहां पहुंच गया। उसने एक को भूमि पर ढेर हुए देखा और दूसरे को लौटते। अंधेरे में पहचानने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में कठिनाई हुई कि किसने किसको मार डाला है। वह जीवित के पीछे-पीछे पहचानने के लिए चल पड़ा। जीवित को साधू के झोंपड़े की ओर जाते देख वह समझ गया कि उसके पिता की हत्या हो गई है।

यह समझते ही उसने साधू को गरदन से पकड़ा और उसके हृदय-स्थल पर छुरा घोंप दिया। साधू को वहीं गिरता छोड़कर वह अपने पिता की ओर भागा। वहां जाकर उसने देखा कि वे वहां पर नहीं हैं। वह समझ गया कि पिताजी जीवित हैं और झोंपड़े को चले गए हैं। वह पुनः वहां गया जहां साधू को पड़ा छोड़ गया था। उसने देखा कि वह समाप्त हो चुका है। इस बात को छिपाने के लिए उसके शव को लेकर वह नदी की ओर चल पड़ा। शव को नदी के गहरे जल में छोड़ वह लौट आया।

अपनी मां को अपने पिता के कंधे पर पट्टी बांधते देख वह समझ गया कि सब ठीक है।

अगले दिन साधू लापता था और चौधरी घायल। एक ने साधू के झोंपड़े के समीप रक्त के छींटे देखे। कबीले के लोगों को समझने में देर नहीं लगी कि चौधरी और साधू में झगड़ा हुआ है और साधू मार डाला गया है।

पंचायत बुलाने का ढोल बज गया। बंधे कन्धे के साथ झोंपड़े से निकल चौधरी पंचायत में जा बैठा। पंचायत मन्दिर के बाहर जमा थी। कबीले के सब प्रौढ़ व्यक्ति उसमें सम्मिलित थे। चौधरी सरपंच था, किन्तु उसको अपराधी मान उसके स्थान पर नहीं बैठने दिया गया; और एक अन्य व्यक्ति को सरपंच के स्थान पर बैठा दिया गया।

सरपंच ने घोषणा कर दी, "साधू लापता है। उसके झोंपड़े के बाहर बहुत-सा रक्त बिखरा पड़ा है। चौधरी धनिक के कन्धे पर घाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस कारण मैं चौधरी से पूछता हूं कि यह क्या बात है?"

चौधरी ने खड़े होकर कहा, "कल गदरे की बेटी बिन्दू मेरी पत्नी के पास आकर कह गई थी कि साधू उसके सज्ञान होने की घोषणा नहीं करता और वह विवाह करना चाहती है।"

"मैंने सायंकाल साधू से जाकर पूछा। उसने कहा कि वह तब तक इसकी घोषणा नहीं करेगा जब तक कि बिन्दू उससे विवाह करने के लिए राज़ी नहीं हो जाती। मैंने उससे कहा कि यह तो अधर्म हो रहा है। इससे मैं अगले दिन बुलाकर उसको पंचायत के सम्मुख उपस्थित करूंगा। इस बात से भयभीत हो उसने अपना छुरा निकालना चाहा। मैं उसकी इस नीयत को समझ वहां से चला आया। वह मेरे पीछे-पीछे आकर मुझपर वार कर बैठा। मैं संभल गया और अपना छुरा निकालकर उसपर लपका। वह असावधानी में फिसल गया और मेरे छुरे पर गिर पड़ा। मैंने उसका शव उठाया और नदी में बहा दिया है।"

"रक्त दो स्थानों पर देखा गया है।"

"वह इसलिए कि जब मैं उसका शव उठाकर ले जा रहा था तो अपने घाव के कारण थक गया और सांस लेने के लिए मैंने उस स्थान पर विश्राम किया था।"

"परन्तु शव को बहाने की आवश्यकता क्या थी?"

"मैं उसको मारना नहीं चाहता था। मैं तो अपना ही बचाव कर रहा था, किन्तु वह मरा तो है मेरे छुरे पर स्वयमेव फिसलकर गिरने से। मैं चौधरी हूं और मैंने उसके शव को बहा दिया है।"

"कोई साक्षी है?"

"झगड़े और लड़ाई का कोई साक्षी नहीं है।"

"और किस बात का है?"

"बिन्दू के आने और घोषणा-सम्बन्धी बात कहने का।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन है?"

"मेरी पत्नी सोना।"

"उसकी साक्षी मान्य नहीं।"

चौधरी चुप कर रहा। इसपर पर गदरा उठकर कहने लगा, "मैं भी इसी सम्बन्ध में कल साधू से मिला था। हमारे पड़ोसी की लड़की काजू के, जो बिन्दू से दो वर्ष छोटी है, सज्ञान होने की घोषणा हो चुकी है। मेरी पत्नी ने कहा कि साधू से मिलकर मैं इसका कारण पूछूं।

"साधू ने बताया था कि वह स्वयं बिन्दू से विवाह करना चाहता है। इसके लिए वह मुझे एक सौ रुपया देना चाहता था। मैंने रुपया लेने से इनकार करते हुए कहा कि लड़की स्वयं इस विषय में निर्णय करेगी।"

"इसपर साधू ने कहा, वह उसके सज्ञान होने की घोषणा नहीं करेगा। मेरा कहना था कि यह पाप होगा। उसका कहना था कि वह पाप से निपट लेगा।"

"मैं लौट आया था। लड़की सोना से कुछ कहने गई थी। उसने क्या कहा, यह मुझे विदित नहीं है।"

कबीले की पंचायत से पूछकर सरपंच ने निर्णय सुनाते हुए कहा, "चौधरी का अपराध यह है कि उसने शव को नदी में बहा दिया। उसको पहले भगवान की सेवा में उपस्थित नहीं किया। इस अपराध के लिए एक सौ रुपये दण्ड दिया जाता है। इन रुपयों से कबीले में भोज होगा।"

"मेरे पास सौ रुपये नहीं हैं।"

"इसके लिए तुम कबीले के लोगों से ऋण ले सकते हो । बाद में चुका देना। किन्तु दंड कम नहीं किया जाएगा।"

पंचायत उठने से पूर्व गदरे ने पूछा, "मेरी लड़की बिन्दू का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या होगा?"

"नये पुरोहित के आने तक वह विवाह नहीं कर सकती ।"

बड़ौज अपने पिता के साथ झोंपड़े को लौट आया। मार्ग में चौधरी ने देखा कि उसके लड़के की आंखों में विद्रोह भर उठा है। उसने लड़के को समझाया।

"मैं समझता हूं कि सस्ते में छूट गए हैं।"

"तो हमने भारी पाप किया था क्या?"

"और नहीं तो क्या?"

"पापी को दण्ड देना भी पाप है क्या?"

"अपने कबीले के झगड़ों का फैसला पंचायत करती है और दूसरे कबीले के साथ हुए झगड़ों का निर्णय युद्ध से होता है।"

"तो अब क्या होगा?" लड़का निरुत्तर हो गया था।

"तुम कल लुमडिंग से कितना रुपया लाए हो?"

"नकद साठ रुपये और बीस रुपये का सामान। पचास दुकानदार से लेने हैं।"

"तो चालीस गदरे से ऋण लेना पड़ेगा!"

"नहीं बाबा! एक पैसा नहीं देंगे।"

"तो क्या करोगे?"

"कल रास्ते में आते हुए पादरी मिला था। वह कहता था कि प्रभु यीषु मसीह सबको आश्रय देता था। हम चाहें तो उसके आश्रम में जा सकते हैं।"

"वह हमारा धर्म भ्रष्ट कर देगा।"

"क्या यह धर्म था जो साधू कर रहा था? पंचायत ने भी न्याय नहीं किया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि बिन्दू से विवाह करूंगा और आज ही करूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-U
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे करोगे?"

"उसको लेकर पादरी के पास चला जाऊंगा।"

चौधरी टुकर-टुकर मुख देखता रह गया। बाप-बेटा झोंपड़े में पहुंचे तो बिन्दू सोना से बातें कर रही थी। दोनों झोंपड़े के बाहर ही बैठी थीं।

बिन्दू ने बड़ौज को देखा तो सोना के समीप से उठ उसको एक और ले जाकर बातें करने लगी। बातें करते-करते दोनों झोंपड़े के साथ लगी बाड़ से निकल गए। चौधरी अपनी पत्नी से पूछने लगा, "क्या कहने के लिए आई थी यह?"

"पंचायत का निर्णय जानने के लिए आई थी।"

"मुझे एक सौ रुपये दण्ड मिला है।"

"और बड़ौज को?"

"सारा दोष मैंने अपने सिर ले लिया था।"

"तो वह बच गया है?"

"हां, परन्तु लड़का कहता है कि साधू पापी था, इसलिए दण्ड नहीं देना चाहिए। पापी को मारना पाप नहीं हो सकता।"

"और आप क्या कहते हैं?"

"अपराध यह नहीं हुआ कि साधू मार दिया गया है, परन्तु यह कि मैंने उस अपराध को पंचायत को नहीं बताया। पंचायत के निर्णय के बिना उससे झगड़ा किया है।"

"परन्तु आक्रमण तो उसने किया था।"

"पहले मुक्का मैंने मारा था।"

"यह तो साधारण बात है। छुरे से वार तो उसने किया था।"

चौधरी के मन में पंचायत के निर्णय पर संशय हो गया। इसपर भी उस निर्णय की अवहेलना करने की वह क्षमता नहीं रखता था। वह विस्मय में मुख देखता रह गया। सोना अपने पति के मन

Central Library
167976
Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भावों को समझ गई। उसको चौधरी के निर्णयों को सुनते बीस वर्ष हो गए थे। वह जानती थी कि पंचायत के निर्णय को चौधरी भगवान के आदेश से कम नहीं मानता।

सोना ने चौधरी से पूछा, "तो दण्ड कहां से दोगे?"

"कुछ रुपया तो कल बड़ौज लाया है और कुछ किसीसे ऋण ले लूंगा।"

ऋण की बात सुनी तो सोना के मन में भी दुःख हुआ। लोग उससे ऋण लेने के लिए आते थे। आज वे स्वयं ऋण लेने वाले बन रहे थे।

बड़ौज के बिन्दू से पादरी के पास जाकर विवाह के निर्णय की बात चौधरी ने अपनी पत्नी को नहीं बताई। कबीले में इस अपराध का दण्ड मृत्युदण्ड ही था, परन्तु तब तक ही जब तक कि कबीले में ही रहे। एक बार कबीले से चला जाए और पादरियों के संरक्षण में पहुंच जाए तो वह सुरक्षित हो जाता था। कबीले वाले चाहते हुए भी उसको दण्ड नहीं दे सकते थे।

इस कारण वह हल्ला नहीं करना चाहता था कि उसका लड़का कबीले की किसी लड़की को भगाकर क्रिस्तानों के पास ले जाना चाहता है। औरतें कबीले की सम्पत्ति थीं और उनको भगाना कबीले की चोरी करना माना जाता था। एक बात थी; कुछ कबीलेवाले मुसलमान भी हो गए थे। परन्तु वे संख्या में कम थे, इस कारण उनसे बदला लेना सुगम था। परन्तु इन क्रिस्तानों को छूना भी असम्भव बात थी। तनिक से सन्देह पर भी अंग्रेज़ों के सैनिक आ धमकते थे और कबीले को मौत के घाट उतार देते थे।

जहां वह यह नहीं चाहता था कि बड़ौज पर सन्देह हो जाए कि वह कबीले की एक लड़की को भगाकर पादरियों के पास ले जा रहा है, वहां वह यह भी नहीं चाहता था कि पादरियों से किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार का झगड़ा हो। इस कारण वह आराम से अपने लड़के को समझाना चाहता था।

परन्तु इस समय तो मुख्य प्रश्न दण्ड के लिए रुपये बटोरना था। वह अपने पड़ोसी लीमा के घर पहुंचा। उसके तीन लड़के थे। सबके सब शिकार करते थे और खालें इकट्ठी कर नगर में बेचने के लिए जाते थे। लीमा की लड़की लुग्गी भागकर क्रिस्तानों के पास चली गई थी और वह अब सुखी कही जाती थी। पहले तो लीमा भी अपने कबीलेवालों की भांति लुग्गी से घृणा करता था; परन्तु उसके लड़के जब लुमडिंग जाते थे तो उससे मिलते थे और उसको सुखी देख उससे घृणा छोड़ चुके थे।

लुग्गी से परिचय के कारण लीमा के घर में कई परिवर्तन हो रहे थे और वह धनी भी हो रहा था। धनिक का विचार था कि उसके पास पर्याप्त धन है। इसीलिए वह उसको चालीस-पचास तो उधार दे ही देगा।

जिस समय धनिक लीमा के घर पहुंचा, वह घर पर नहीं था। उसका छोटा लड़का चीतू अपनी बीवी सूजा के साथ बैठा रस्सी बट रहा था । धनिक ने पूछा, "कहां है तुम्हारा बाबा?"

"खेत पर गया है।"

"तो तुमने खेत ले लिया है?"

"लिया नहीं, बनाया है। नदी के पार कुछ भूमि थी, उसपर हमने अधिकार कर लिया है और वहां धान बोने का विचार कर रहे हैं। नीतू लुमडिंग के पास खेती-बाड़ी होती देख आया है और इस वर्ष हम वहां धान बो देंगे।"

"लुग्गी यहां आती है?"

"नहीं, वह तुमसे डरती है। वह कहती है कि तुम उसको पकड़कर मरवा डालोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु वह आना चाहती है क्या?"

"हां, उसका चित्त मां से मिलने के लिए करता है।"

"तो मां को वहीं क्यों नहीं ले जाते?"

"सोचते तो हैं, लेकिन बाबा अभी मान नहीं रहे।"

धनिक इस वार्तालाप से चकित रह गया। उसने कहा, "मुझे कुछ रुपये ऋण के रूप में चाहिए!"

"दण्ड का भुगतान करने के लिए?" चीतू ने पंचायत का निर्णय सुन लिया था।

"हां!"

चीतू कहने लगा था कि उसका पिता सायंकाल तक आएगा, किन्तु उससे पूर्व ही उसकी पत्नी सूजा ने कहा, "हमारे पास रुपया नहीं है ।"

"है तो।" धनिक ने आग्रहपूर्वक कहा।

"परन्तु इस दण्ड के भुगतान के लिए नहीं है।"

"तो किस काम के लिए हैं?"

"खेत पर काम करने के लिए।"

"परन्तु मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

"तुमने हमारी ननद को घर से निकाल दिया है। जब लुग्गी वयस्क हुई तो उसने कहा था कि वह आमुख से विवाह करेगी। तुम और साधू इसमें बाधा बन गए; और फिर बेचारी को घर से भाग जाना पड़ा था।"

"सुना है, वह वहां बहुत खुशी है। इससे तो हमारा धन्यवाद करना चाहिए। मैंने उसका भला ही किया है।"

"तो अपना भी भला क्यों नहीं कर लेते? दण्ड का रुपया क्यों दे रहे हो?"

धनिक छितर-बितरकर मुख देखता रह गया। सूजा एक दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीले की लड़की थी। उस समय दोनों कबीलों में मित्रता थी। लड़कियों का आदान-प्रदान हो रहा था। मित्रता तो अब भी थी | इसपर भी वह कबीला बहुत दूर चला गया था। वह अब बर्मा की सीमा के पास जाकर रहने लगा था। इससे कितने ही वर्षों से परस्पर विवाह नहीं हो रहे थे।

सूजा अपने पति से संतुष्ट थी। उसके दो बच्चे हो चुके थे। दोनों लड़के थे। वह अपने पिता के कबीले के साथ घूम चुकी थी और उसको बहुत बातों का ज्ञान था। इसी कारण वह चौधरी को अपने मन की बात सुनाने में संकोच नहीं करती थी। सूजा के पति के मन में चौधरी के लिए मान था। उसने कह दिया, "चौधरी, इसकी बात का क्रोध नहीं करना। लुग्गी बहिन वहां बहुत सुखी थी, परन्तु पिछले वर्ष उसके घरवाले का स्वर्गवास हो गया है और उसने दूसरा विवाह कर लिया है। यह नया पति अच्छा आदमी नहीं है। इसीसे सूजा कह रही है।"

"तो वह सुखी नहीं है?"

"आमुख के मर जाने के पश्चात् वह यहां कबीले में लौट आना चाहती थी, परन्तु पुरोहित ने सिर हिलाकर कह दिया, 'भगवान को स्वीकार नहीं।'"

इसपर सूजा ने फिर कहा, "भगवान की बात वह मन से कहता है, भगवान तो बोलता ही नहीं।"

धनिक इस लड़की का मुख देखता रहा। सूजा और उसका पति रस्सी बटने में लीन थे। धनिक मन में विचार करता था कि बड़ौज ठीक कहता है। यदि साधू भगवान की बात झूठ कहता था तो पापी था। वह पापी था तो उसकी हत्या से पाप नहीं हुआ। अतः वह दण्ड का भागी नहीं है।

इसपर भी उसको दण्ड देना चाहिए। केवल इस कारण कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचायत ने निर्णय दिया है। यह निर्णय गलत है, परन्तु वह इस निर्णय की अवहेलना तो भागकर ही कर सकता है। यहां तो भोज के लोभ में कबीले का कोई भी व्यक्ति पंचायत के निर्णय को गलत नहीं कहेगा। मद्य-मांस और भांति-भांति के पकवान भोज में मिलने-वाले थे।

वह इस द्विविधा में पड़ा हुआ अपने झोंपड़े को लौट आया। वह बड़ौज से विचार करना चाहता था। अपने झोंपड़े में पहुंच उसे पता चला कि उसका लड़का अभी तक लौटा नहीं। वह उसकी प्रतीक्षा में बैठा रहा।

मध्याह्नोत्तर बिन्दू का पिता गदरे आया और सोना से पूछने लगा, "यहां बिन्दू आई थी, कहां गई है?"

"यहां से तो वह थोड़ी देर में ही चली गई थी।"

"लेकिन वह घर तो गई नहीं, किधर गई थी?"

"बड़ौज के साथ नदी की ओर गई थी।"

गदरे को भी वही सन्देह हो रहा था जो चौधरी को हुआ था, परन्तु न तो चौधरी ने अपनी पत्नी से मन की बात बताई थी, न ही उसने बिन्दू के पिता को कुछ बताया। गदरे भी इस बात को मुख से कहना नहीं चाहता था।

गदरे लौट गया। अब धनिक ने कहा, "तो बड़ौज भी तब का नहीं लौटा?"

"नहीं।"

"वह कबीला छोड़ भाग गया है।"

सोना ने मुख पर उंगली रखकर चुप रहने का संकेत कर दिया। वह भी यही विचार कर रही थी। इसपर चौधरी ने कहा, "रुपये का प्रबन्ध नहीं हो रहा। मैं भी भाग जाने में ही कल्याण मानता हूं।"

"भागकर कहां जाएंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पादरियों की बस्ती में।"

"मन नहीं करता।"

"क्यों।"

"वे गौ-मांस खाते हैं।"

"हम नहीं खाएंगे। कोई ज़बरदस्ती तो खिलाता नहीं।"

"कैसे कहते हो यह?"

"ये पादरी ही बताते हैं।"

सोना चुप कर गई। बड़ौज रात होने तक नहीं आया। रात को प्रातः की पंचायत का सरपंच आया और धनिक से पूछने लगा, "चौधरी! दण्ड का रुपया कब तक दोगे?"

"एक-दो दिन में दे दूंगा।"

"हमको कल चाहिए।"

"यत्न करूंगा कि कल तक दे सकूं।"

"बड़ौज कहां गया है?"

"लुमाडिंग के दुकानदार से रुपया लेने के लिए गया है।"

"परन्तु बिन्दू भी तो गायब है!"

"मुझे पता नहीं है।"

सरपंच चला गया।

बड़ौज बिन्दू को साथ ले झोंपड़े से निकल गया। वहां से वे नदी की ओर चले गए। नदी के समीप पहुंच, बड़ौज ने अपने मन की बात बता दी, मैं आज तुमसे विवाह करूंगा।"

बिन्दू की आंखों में चमक द्विगुणा हो गई। उसने मुस्कराते हुए पूछा, "कैसे करोगे?"

"नदी पार करके पादरियों के मन्दिर में जाकर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु, वहां हमारा देवता नहीं है।"

"हम गांव से चले जाएंगे तो गांव का देवता भी छूट जाएगा।"

"तो फिर गांव को लौट नहीं सकेंगे?"

"क्या करेंगे लौटकर?"

बिन्दू विस्मय से बड़ौज का मुख देखने लगी। मन ही मन वह अपने विवाहित जीवन का चित्र बनाने लगी थी। एकाएक उसमें काम का आवेग उठा। उसने कूदकर कहा, "तो चलो।"

दोनों नदी में पैठ गए। जहां गहरा पानी आया, दोनों तैरने लगे। बड़ौज उन्नीस वर्ष का युवक था। बिन्दू अभी चौदह वर्ष की कुमारी थी। नदी का बहाव अधिक आया तो बिन्दू ने बड़ौज के कन्धे पर हाथ रख लिया। तैरकर पार गए, तो दोनों ने सुख का सांस लिया। बड़ौज ने कहा, "अब हम कबीले के देवता के प्रभाव से दूर हो गए हैं। यहां हमको कोई नहीं रोक सकता।"

दोनों जल में भीगे हुए कपड़े निचोड़ रहे थे। बिन्दू की चोली उसके शरीर के साथ सट गई थी और उसके दोनों उरोजों की रेखाएं स्पष्ट दिखाई देने लगी थीं। बड़ौज अपने मन पर काबू नहीं पा सका। वह भुजाएं फैलाकर बिन्दू को आलिंगन-पाश में आबद्ध करने की इच्छा करने लगा तो बिन्दू ने दो पग पीछे हटकर कहा, "विवाह के पश्चात्।"

"परन्तु रात तो···"

बिन्दू ने होंठों पर उंगली रखकर उसको चुप रहने का संकेत किया और बोली, "उस समय अंधेरा था। अब···"

बड़ौज हंस पड़ा। कपड़े निचोड़ और गीले वस्त्रों के साथ ही दोनों क्रिस्तानों की बस्ती की ओर चल पड़े। वहां से तीन कोस चलना था।

मध्याह्न के बाद वे उस बस्ती में पहुंचे। यह भी वनवासियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस्ती थी, परन्तु प्रबन्ध ईसाई मिशनरियों के हाथ में था। प्रायः झोंपड़े पक्के बने थे। सब झोंपड़े पंक्तियों में थे। बीच-बीच में चौड़े मार्ग थे। झोंपड़ों के बीचोबीच एक ऊंची इमारत थी, वह गिरजा-घर था। बस्ती के चारों ओर पक्की दीवार थी और दीवार में द्वार थे। चारदीवारी के भीतर तीन सौ से कुछ अधिक निवास स्थान थे। सबकी सब झोपड़ियां एक ही आकर और विस्तार की थीं।

बड़ौज और बिन्दू झोंपड़ियों की दो पंक्तियों के बीच से गिरजा-घर की ओर जा रहे थे। वहां के रहनेवाले उनको देख विस्मय करते थे। इस बस्ती के रहनेवालों का पहरावा बड़ौज और बिन्दू के पहरावे से सर्वथा भिन्न प्रकार का था। स्त्रियां प्राय: यूरोपियन ढंग का पहरावा पहनती थीं, और पुरुष प्राय: उस देश के नगरों में रहनेवालों की तरह का। कुछ तो पतलून और कमीज़ पहने थे। शेष प्राय: लुंगी और कुरता पहने थे। सबके कपड़े धुले, साफ और उज्ज्वल थे। औरतों ने बाल संवारे हुए थे और सिर के पीछे जूड़ों में बांधे थे।

इनके विपरीत बिन्दू घाघरा पहने हुए थी, जो पर्याप्त मैला था। चोली थी, जो मैली थी और घाघरे के ऊपर जांघों तक लटक रही थी। यद्यपि छः मील की यात्रा पर कपड़े सूख गए थे, इसपर भी वे अस्त-व्यस्त हो रहे थे। बड़ौज ने तो चमड़े का जूता पहना था। परन्तु बिन्दू सिर और पांव से नंगी थी। बिन्दू के खुले बाल सिर और कन्धों पर फैले हुए थे, जो सर्वथा खुश्क और बिखरे हुए थे।

बस्ती के लोग खड़े हो इनको देखने लगे थे। बड़ौज इस बात का अनुभव कर रहा था, परन्तु उनकी दृष्टि से बच सकने का उपाय उसके पास नहीं था। बिन्दू तो वहां की स्त्रियों का पहरावा देख-देख-कर ही चकित हो रही थी।

आखिर वे गिरजाघर के द्वार पर जा पहुंचे। एक काले रंग का चोगा पहने व्यक्ति इनको गिरजाघर के अहाते में प्रवेश करते देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके समीप आकर पूछने लगा :

"कहां से आए हो?"

"नदी पार नाग लोगों की एक बस्ती से।"

"क्यों आए हो?"

"विवाह के लिए।"

"वहां क्यों नहीं कराया?"

"नहीं हो सका। पुरोहित स्वयं इससे विवाह करना चाहता था।"

वह गिरजाघर का पादरी था। इनकी बात सुन कुछ क्षण तक लड़की को देखता हुआ खड़ा रहा। फिर पूछने लगा, "लड़की!. क्या आयु है तुम्हारी?"

"मैं नहीं जानती। मुझे किसीने बताया नहीं।"

"लड़के! तुम्हारी आयु कितनी है?"

"हमारे यहां आयु की गिनती नहीं रखी जाती। केवल विवाह के योग्य आयु को देखा जाता है। सो हम हैं।"

पादरी पुनः गम्भीर विचार में डूब गया। फिर बोला, "आओ, भीतर आ जाओ।"

दोनों उसके पीछे-पीछे गिरजाघर में चले गए। भीतर की सफाई और बैठने के लिए बेंचें और कुर्सियां देखकर वे चकित रह गए। पादरी उनको कुर्सियों के बीच में से ले जाकर एक ऊंचे मंच पर ले गया। वहां एक स्त्री की एक सुन्दर तस्वीर बनी थी। वह श्वेत उत्तरीय से ढंपी थी, केवल उसका मुख ही खुला था।

पादरी ने उसके सम्मुख रखी पांच मोमबत्तियां जला दीं। मोम-बत्ती के प्रकाश में मरियम की सौम्य मूर्ति के सामने पादरी ने घुटने टेक दिए। उसने इन दोनों को भी ऐसा ही करने के लिए कहा। दोनों ने घुटने टेक दिए तो पादरी ने कहा, "सौगन्धपूर्वक कहो कि हम दोनों वयस्क हैं और विवाह की इच्छा रखते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों ने यही कहा तो पादरी ने उठकर दोनों पर वहां रखा जल छिड़का और भगवान का आशीर्वाद सुना दिया, "तुम्हारा विवाह होता है। तुम जीवन-पर्यन्त इकट्ठे प्रेम से रहने का वचन देते हो। सो प्रभु स्वीकार करते हैं।···"

इसके पश्चात् उनको उठाकर वह इस बड़े कमरे के बगल वाले कमरे में ले गया। वहां रखी एक किताब पर दोनों का नाम-धाम और माता-पिता का नाम लिख, दोनों के अंगूठे लगवा लिए।

जब यह हो चुका तो पादरी ने अपने भी हस्ताक्षर कर दिए और उनसे पूछने लगा, "अब कहां जाओगे?"

"हमें पता नहीं।"

"यहां काम करोगे?"

"करेंगे।"

"तो तुम यहां नौकरी कर लो। तुमको रहने के लिए मकान मिलेगा, पहनने के लिए कपड़े मिलेंगे और वेतन मिलेगा जिससे दोनों मज़े में रह सकोगे।"

"हमें स्वीकार है।" बड़ौज ने कहा।

"ठीक है, चलो मेरे साथ!"

वह उनको एक दूसरे मकान में ले गया। यह मकान समीप ही गिरजाघर के बगल में था। वहां एक अन्य पादरी था, जो वैसे ही वस्त्र पहने हुए था। पादरी ने उनको उसके हवाले कर अंग्रेज़ी में कुछ कहकर समझा दिया।

इस नये पादरी ने उनसे कहा, "मैं इस बस्ती का 'वार्डन' हूं। अभी तुम मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें अपनी पत्नी के पास ले चलता हूं। वह तुम दोनों को पहनने के कपड़े देगी और रहने के लिए स्थान बता देगी। तुम्हारे खाने की भी व्यवस्था करेगी। कल से यह युवक तो काम पर जाएगा और तुम स्कूल में पढ़ोगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार इस बस्ती में आने के एक घण्टे के भीतर ही वे पति-पत्नी वन सुन्दर वस्त्रों से सज्जित और भोजन से संतुष्ट होकर एक कमरे में बैठे एक-दूसरे का विस्मय से मुख देख रहे थे।

"क्या देख रहे हो जी?"

"अपनी पत्नी का सुन्दर मुख।"

"मुख तो वही है, जो तीन वर्ष से लगातार देख रहे हो, पर पहले तो ऐसे कभी नहीं देखा!"

"आज तुम बहुत सुन्दर लग रही हो।"

"घर की मालकिन भी यही कह रही थी। उसने कहा था कि अब तक यह कमल कीचड़ में पड़ा था, अव उद्यान में आ गया है।"

"यह क्या होता है?"

"मैंने उससे पूछा तो वह मुझे घर के पिछवाड़े में ले गई और वहां पर उसने मुझे एक खुला स्थान दिखाया। वहां भांति-भांति के फूल खिले थे। बहुत सुन्दर स्थान था वह। उसने कहा, जैसे ये फल लगे हैं वैसे ही तुम इस बस्ती में हो। उनका कहना था कि इस पूर्ण बस्ती में मेरी जैसी सुन्दर लड़की नहीं है।'

"मैं बहुत प्रसन्न हूं।"

"क्यों?"

"इसलिए कि सबसे सुन्दर लड़की मेरी पत्नी है।"

इसपर आवेग में लपककर बिन्दू बड़ौज की गोद में जाकर बैठ गई।

रात भोजन के समय उस बस्ती के वार्डन मिस्टर बीडन पाल की पत्नी ने दरवाज़ा खटखटाकर उनको सचेत किया। दोनों अभी भी परस्पर प्यार कर रहे थे।

भोजन के समय मिस्टर पाल ने बताया, "देखो लड़की! तुम गिरजाघर के दूसरी ओर जो स्कूल है उसमें भर्ती कर दी गई हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें नित्य वहां पढ़ने को जाना होगा।...और मिस्टर! क्या नाम है तुम्हारा?"

"बड़ौज!"

"यह नाम सुन्दर नहीं। तुम्हारे जैसे सुन्दर युवक का नाम भी सुन्दर होना चाहिए।"

"तो आप बता दीजिए।"

वार्डन ने कुछ विचारकर कहा, "असल नाम तो बड़ौज ही रहेगा, परन्तु मैं बड़ौज के साथ एक उपनाम रख देता हूं। वह उप-नाम होगा ग्रीन। तुम्हारा अब पूरा नाम होगा बड़ौज ग्रीन। यह होगी बिन्दू ग्रीन।"

"समझ गया हूं।"

"हां, तो मिस्टर ग्रीन! तुम कल मेरे साथ चलोगे। मैं तुमको काम बताऊंगा वह तुम्हें करना होगा। तुमको एक रुपया नित्य मिलेगा और काम देखकर तरक्की भी मिलेगी।"

अगले दिन उसको एक इमारत पर ईंट ढोने को लगा दिया गया। यह काम उसे कठिन तो प्रतीत नहीं हुआ, परन्तु वह स्वयं को इससे किसी अच्छे काम के योग्य समझता था। इसपर भी उसने कुछ कहा नहीं। आठ घंटा काम कराकर उसके हाथ पर एक रुपया रख दिया गया। जब वह घर आया तो बिन्दू उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने दिन-भर का हाल कह सुनाया कि पहले उसको एक किताब में से पढ़ाया गया। जब घण्टे तक पढ़ाई और लिखाई हो गई तो फिर उसे एक स्थान पर सिलाई का काम सिखाने के लिए ले गए। कुछ-कुछ तो वह जानती थी, कुछ और बताया गया तो वह समझ गई। चार घंटे काम कराकर उसे आठ आने दे दिए गए।

बड़ौज ने अपना एक रुपया दिखाया। इसके बाद जीवन में पहली बार बिन्दू वार्डन की पत्नी के साथ रसद-पानी खरीदने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए गई। वह आठ आने की रसद ले आई और घर आकर मिसेज़ पाल के दिए हुए बर्तनों में अपने ढंग से खाना बनाने लगी।

आठ आने में इतनी सामग्री मिली थी कि प्रात:-सायं दो बार का भोजन बनाने के बाद भी उसमें से बच गई थी।

तीन महीने में ही बड़ौज ने कह दिया कि वह राजगीर का कार्य कर सकता है। उसकी परीक्षा ली गई; और उस दिन से वह दो रुपये रोज़ का कारीगर मान लिया गया।

जिस दिन बड़ौज और बिन्दू अपनी बस्ती से लापता हुए थे, उसी रात चौधरी धनिक और सोना अपनी सब नकदी और जो कुछ वे उठा सकते थे, लेकर लुमडिंग की ओर चल पड़े। दिन निकलने से पूर्व वे बीस मील निकल गए थे। दिन निकलते ही सरपंच दंड का रुपया वसूल करने चौधरी के पास आया तो उसकी झोंपड़ी खाली देख, विचार करने लगा। झोंपड़ी का सामान अस्त-व्यस्त पड़ा था। एक-दो स्थान पर भूमि खोदी हुई थी। मानो वहां पर गाड़ी हुई कोई वस्तु निकाली गई हो।

सरपंच ने पड़ोसियों से पूछा, किन्तु किसीको इस विषय में ज्ञात न था। केवल लीमा की सबसे छोटी बहू सूजा सरपंच की बात सुनकर हंस पड़ी।

उसको हंसते देख सरपंच ने कहा, "तुम्हें विदित है क्या?"

"क्या विदित है?"

"चौधरी कहां गया है?"

"मुझे क्या पता? रात को सोना मौसी आई थी। यहां बहुत देर तक बैठी रही थी।"

"क्या करती रही थी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कल सुबह से उसका लड़का बड़ौज घर नहीं लौटा था। उसके विषय में चिन्ता कर रही थी।"

"बिन्दू भी लापता है। उसकी मां रोती रही है।"

सूजा फिर हंस पड़ी। इसपर सरपंच को क्रोध चढ़ आया। उसने क्रोध में ही कहा, "तुमको हंसी सूझ रही है!"

"क्या हंसना मना हो गया है?"

सरपंच ने पंचायत बुलाने को ढोल पीट दिया। पंचायत एकत्रित हो गई। आज पंचायत में चीतू भी उपस्थित था। वह वहां तमाशा देखने के लिए आया था।

जब सब आनेवाले आ गए तो गेंदा सरपंच ने कहा, "कल से चौधरी का बेटा बड़ौज और गदरे की बेटी बिन्दू भाग गए हैं। आज पता चला कि चौधरी धनिक और उसकी पत्नी सोना भी अपना झोंपड़ा खुला छोड़ चले गए हैं।"

"बस्ती की कोई वस्तु ले गए हैं क्या?" चीतू ने खड़े होकर पूछा।

"हां, दो पुरुष दो औरतें ले गए हैं।"

"क्या उनकी गठरी बांधकर सिर पर उठा ले गए हैं?"

सरपंच इसका अर्थ नहीं समझ सका। इससे वह चीतू का मुख देखता रह गया। चीतू ने सरपंच को चुप देख कह दिया, "मेरे कहने का अभिप्राय है कि चौधरी की पत्नी सोना अपने पांवों से चलकर ही गई होगी। इसी प्रकार बिन्दू भी गई होगी। कल पंचायत के बाद मेरे पिता ने दो व्यक्तियों को नदी पार करते देखा था। मेरा अनुमान है कि वे बड़ौज और बिन्दू ही होंगे। दोनों स्वेच्छा से नदी तैर रहे थे।"

"औरतें कबीले की सम्पत्ति हैं। बिना पंचायत की स्वीकृति के कोई उन्हें बाहर नहीं ले जा सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चौधरी का विवाह तो पंचायत की स्वीकृति से ही हुआ था और सोना अपने पति के साथ ही गई है। रही बिन्दू की बात, कल उसके विवाह की बात हुई थी। पंचायत ने उसको विवाह करने की स्वीकृति क्यों नहीं दी? उसको सज्ञान हुए दो वर्ष से भी अधिक हो गए हैं।"

"किन्तु यह कोई कारण नहीं कि उसको कोई भगाकर ले जाए।"

"कारण तो है। विवाह करने की इच्छा सबकी होती है। उसको रोकना अनुचित था; और अनुचित बात का विरोध उचित ही कहा जा सकता है।"

"परन्तु भगवान की इच्छा के बिना किस प्रकार स्वीकृति मिल सकती थी?"

"भगवान की इच्छा से ही तो बिन्दू और बड़ौज विवाह की इच्छा कर रहे थे। साधू ने भगवान की इच्छा का विरोध किया और भगवान ने उसको चौधरी के हाथों मरवा डाला। फिर कल-वाली पंचायत ने भगवान की इच्छा का विरोध किया और बड़ौज ने पंचायत की आवहेलना की और वह चढ़ी हुई नदी पार करने में सफल हो गया।"

सरपंच ने निरुत्तर होने पर कह दिया, "बैठ जाओ! तुम्हारी सुन ली है। पंचायत ने तुम्हारी बात स्वीकार नहीं की।"

इसपर एक पंच खड़ा होकर पूछने लगा, "चीतू क्या चाहता है, हमको यह अभी तक पता नहीं चला। बताओ चीतू! तुम क्या चाहते हो?"

सरपंच ने कहा, "वह पंच नहीं है।"

"किन्तु उसको अपने मन की बात कहने का अधिकार तो है, निर्णय हम अपने मन से करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे पंचों ने भी इस बात का समर्थन किया तो सरपंच को चुप होना पड़ा। चीतू अब भी खड़ा था। जब वह कहने लगा, "सोना और बिन्दू की बात भिन्न है। पहले बिन्दू की सुन लीजिए। उसको विवाह योग्य हुए दो वर्ष से ऊपर हो चुके हैं। साधू बेईमान था। उस ने बिन्दू के माता-पिता को तंग कर स्वयं उसके साथ विवाह करना चाहा था। किसीको विवश कर विवाह करना कबीले के नियम के विरुद्ध है। कल पंचायत ने पुनः उसके विवाह की बात पर विचार नहीं किया। इस कारण वह बड़ौज के साथ विवाह करने के लिए चली गई है। उसने कोई पाप नहीं किया। उसने भगवान की इच्छा का पालन किया है। साधू और पंचायत ने भगवान की इच्छा का विरोध किया था। दोषी बिन्दू नहीं है।"

इस समय पुनः सरपंच बोल उठा, "इसका क्या प्रमाण है कि बिन्दू के विवाह के लिए भगवान की इच्छा थी?"

"हम सब अन्न खाते हैं और उससे हमारा शरीर बनता है। यह भगवान ही तो करता है। अन्न खाने से हममें विवाह करने की इच्छा और शक्ति उत्पन्न होती है। यह भगवान की इच्छा से ही होता है कि लड़कियां रजस्वला होती हैं, और बच्चों को दूध पिलाने के लिए उनके स्तन बढ़ जाते हैं। यह भगवान के किए से ही होता है। विवाह उस इच्छा को पूर्ण करने के लिए होता है। यह बात साधू जैसे कामान्धों को नहीं दिखाई दे सकती थी और कल की पंचायत को भी दिखाई नहीं दी।

"इससे मैं कहता हूं कि बिन्दू और बड़ौज ने भगवान की इच्छा का विरोध नहीं किया। भगवान की इच्छा का विरोध साधू और पंचायत ने किया है।"

"सोना की बात पृथक् है। उसका विवाह भगवान की इच्छा और पंचायत की स्वीकृति से हुआ था। इस बात को बीस वर्ष हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुके हैं। विवाह के बाद पत्नी पति की सम्पत्ति होती है। पंचायत उसको वापस नहीं ले सकती। चौधरी गया तो अपनी पत्नी को साथ लेकर गया है। कोई बुरी बात नहीं है। जो होना चाहिए था, वह ही हुआ है।"

"परन्तु चौधरी गया ही क्यों?"

"इसलिए कि पंचायत ने उसपर अन्याय किया था। चौधरी ने साधू को मारा नहीं था। साधू ने उसपर छुरे से वार किया था। पीछे पांव फिसलने पर वह स्वयं छुरे पर गिर गया था। धनिक यहां का चौधरी था। उसने अपराधी के शव को ठिकाने लगा दिया था तो कोई बुरी बात नहीं की थी। उसको सौ रुपये दण्ड देना अन्याय था, और यह दण्ड था भी बहुत अधिक। उस दण्ड को सबने अन्याय मानते हुए भी भोज के लोभ से उसका विरोध नहीं किया।"

इसपर उसी पंच ने, जिसने चीतू की सम्मति चुनने की इच्छा प्रकट की थी, कहने लगा, "चीतू ठीक कहता है। साथ ही मैं कहता हूं कि यदि धनिक और बड़ौज को अपराधी मान भी लें, तो उनकी अनुपस्थिति में उनकी बात सुने बिना निर्णय देने का लाभ ही क्या है, हम उनको दण्ड तो दे नहीं सकते।"

यह अंतिम युक्ति मान ली गई और निर्णय हो गया कि यदि वे लोग वापस आ जाएं, तो फिर उनके लिए पंचायत बैठाई जाए।

युक्तिपूर्वक बात करने से लोग चीतू से प्रभावित हुए और उसे कबीले का चौधरी चुन लिया गया।

चीतू की इच्छा थी कि वह लुग्गी को कबीले में वापस ला सके और साथ ही सोना और बिन्दू को भी। उसका विचार था कि औरतें वापस आएंगी तो उनके घरवाले स्वयं ही आ जाएंगे। अपनी इस योजना को पूर्ण करने के लिए उसने एक ओर तो कबीले के पंचों को समझाना आरम्भ कर दिया और दूसरी ओर बिन्दू और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोना का पता करना आरम्भ कर दिया। अपनी बहन लुग्गी से तो वह स्वयं लुमडिंग में जाकर मिलना चाहता था।

पंचों को समझाने में चीतू को कठिनाई उठानी पड़ रही थी। वह कठिनाई पुरोहित के निर्वाचन के समय उपस्थित हुई। साधू का एक चाचे का लड़का था। वह पुरोहित बनना अपना अधिकार मानता था और पंचों से मिल-मिलकर वह अपने पुरोहित बनने के लिए यत्न कर रहा था।

पूर्णिमा की रात को इस विषय पर निर्णय होनेवाला था। इसका पंचायत ही निर्णय करनेवाली थी। जिस मंदिर में पंचायत बैठनी थी वह एक झोंपड़े में था, और उस झोंपड़े का रहस्य साधू के भाई सन्तू को, जो पुरोहित बनने के लिए यत्न कर रहा था, विदित था । झोंपड़े की भूमि के नीचे एक तहखाना बना था। उसका रास्ता साधू के झोंपड़े को जाता था। उस झोंपड़े पर साधू ने अधिकार कर लिया था।

सन्तू जानता था कि मन्दिर के देवता से जो कुछ कहलाना होता था, साधू सन्तू को उस तहखाने में जा, मूर्ति के नीचे मुख कर, कहने को बता देता था। अनेकों विवाह इस प्रकार करा दिए गए थे और अनेकों होते-होते रोक दिए गए थे। चीतू को सदा इस बात का संदेह रहता था—उसके अपने विवाह के विषय में भी इसी प्रकार की बात हुई थी। पहले तो देवता ने विवाह के विरूद्ध आदेश दें दिया था, फिर बाद में बीस रुपये देने पर देवता ने विवाह के पक्ष में आदेश दे दिया था।

चीतू का विचार था कि पुरोहित बनाया ही न जाए। पंचायत ही पुरोहित का कार्य करे। सन्तू का कहना था कि कबीले के पूर्वजों ने जो प्रथा बनाई है, उसको तोड़ना नहीं चाहिए।

पूर्णिमा के दिन सन्तराम मन्दिर में आने की बजाय साधू की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झोंपड़ी में जाकर सो रहा। उसने कह दिया, "मैंने नियम बता दिया है, अब पंचायत जाने अथवा उसका काम।"

पंचायत बैठी। नियमानुसार पंचों ने हरिण भूनकर खाया और मद्यपान किया। इसपर नशे में चूर वे मन्दिर में जाकर विचार करने लगे। चीतू चौधरी ने अपनी सम्मति सुनाई तो एक पंच ने इसपर सन्तू की आपत्ति भी सुना दी। घोर वाद-विवाद के पश्चात् यह निर्णय हुआ कि देवता से आवाज़ ली जाए।

चीतू को संदेह हो रहा था। उसने कहा भी कि भगवान ऐसे नहीं बोलता। वह तो पंचों के मन में ही अपनी बात कहता है। इस कारण पंचों का निर्णय ही भगवान का आदेश होता है। परन्तु मद्य के नशे में चीतू की युक्ति को कोई समझ नहीं सका। सब कहने लगे, "भगवान बोलता है और वह बोलेगा ।"

अतः भगवान का पूजन होने लगा। अभी पूजन चल ही रहा था कि भगवान की पीछे से आवाज़ आने लगी, "सुनो! सुनो!"

एक मिनट ठहरकर पुनः शब्द हुआ, "सुनो! सुनो!"

सब दत्तचित्त होकर सुनने लगे। चीतू विचार कर रहा था कि यह मिट्टी की बनी मूर्ति कैसे बोल सकती है! जब सब सुन रहे थे तो चीतू उस समय विचार कर रहा था।

मूर्ति के नीचे से शब्द होने लगा, "पुरोहित पंचों से पृथक् होना चाहिए। सन्तू ही पुरोहित होने के योग्य है ।"

पुनः आवाज़ आई, "सुनो! सुनो! पुरोहित पंचों से पृथक् होना चाहिए और सन्तू ही इस काम के योग्य है।"

अभी तीसरी बार यह आदेश सुनाया जानेवाला था कि चीतू अपने स्थान से उठा और पत्थर की मूर्त्ति को उठाकर एक ओर करने लगा। मूर्ति बहुत भारी थी, परन्तु चीतू भी मद्य पिए हुए था। उसने मूर्ति को उठा ही लिया। मूर्ति के नीचे भूमि में छिद्र था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे पंच तो अभी समझ ही नहीं पाए थे। चीतू को अपने सन्देह की पुष्टि होती दिखाई दी। उसने फावड़ा लेकर भूमि ख़ोद डाली। भूमि के नीचे तहख़ाना दिखाई दिया। सन्तू तो भगवान की मूर्ति उठती देख भाग गया था।

पंचों ने जब वह तहख़ाना देखा तो उसमें उतर गए और दीपक लेकर तहख़ाना देखते-देखते साधू की झोंपड़ी तक पहुंच गए। सन्तू वहां से भी भाग गया था। परन्तु पंचों को विदित था कि इस झोंपड़ी में सन्तू रहता है और रात भी वहीं सोया हुआ था।

जब पंचों को यह रहस्य विदित हुआ तो विस्मय में सब एक-दूसरे का मुख देखने लगे। इसपर चीतू उन सबको पुनः मन्दिर में ले गया और मूर्ति को यथास्थान रखवा दिया गया। उसी समय यह भी निर्णय कर लिया गया कि अब पंचायत ही पुरोहित का कार्य करेगी।

अगले दिन जब सन्तू को ढूंढ़ा गया तो सारी बस्ती में उसका कहीं पता नहीं मिला।

पंचायत ने मन्दिर के भीतर तहख़ाने और साधू की झोंपड़ी की सुरंग की बात गुप्त रखी। परन्तु चौधरी ने तहख़ाना और सुरंग को मिट्टी से पटवा दिया। अतः इसके बाद भगवान के नाम के निर्णय पंचायत द्वारा होने लगे।

सोना और धनिक लुमडिंग में अपना वनवासियों का पहरावा नहीं रख सकते थे। वन में तो प्राय: स्त्रियां कमर के ऊपर नंगी रहती थीं। कानों में बड़े-बड़े कांच के छल्ले और गले में कौड़ियों और कांच के मनकों की मालाएं पहनती थीं। धनिक को ज्ञात था कि नगर में न तो इन कांच और कौड़ियों के भूषण चल सकेंगे, न ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई स्त्री अपना वक्ष नग्न कर रह सकेगी। इस कारण अपनी बस्ती से कुछ दूर निकलकर और दिन होने से पूर्व ही उसमे सोना के भूषण उतरवा दिए और उसको तन ढांकने को एक उत्तरीय दे दिया। चौधरी धनिक ने भी अपने सब नागजातीय चिह्न उतार दिए।

इससे भी कठोर समस्या नगर में ठहरने और फिर काम ढूंढ़ने की थी। लुमडिंग सैनिक छावनी थी और गोरे और गोरखे सिपाही सड़कों पर घूमते-फिरते थे। वे इन दोनों को देख पहचान जाते थे कि वे नागजातीय हैं। इसपर भी इनको नागाओ के साधारण अस्त्रों से भी रहित देख वे इनसे कुछ कहते नहीं थे।

एक स्थान पर दो गोरखा सिपाही कन्धों पर बन्दूक रखे दिखाई दिए। बड़ौज ने बन्दूक की रूपरेखा अपने पिता को बताई थी और उसके कार्य के विषय में भी समझाया था। इस कारण उसने दो सिपाहियों को बंदूक लिए एक स्थान पर खड़ा देखा, तो भयभीत हो कुछ अन्तर पर खड़ा हो गया। सोना उसके साथ खड़ी थी। दोनों के कंधों पर सामान की गठरियां थीं।

इसपर एक सिपाही ने संकेत से उसे अपने पास बुलाकर पूछा, "कौन हो?"

"धनिक।"

"नागजातीय हो?"

"हां।"

"यहां क्यों घूम रहे हो?"

"रहने की जगह और काम ढूंढ़ने के लिए।"

सिपाही ने हंसते हुए कहा, "भाग जाओ यहां से, नहीं तो गोली का निशाना बना दूंगा।"

"क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह 'कमांडिंग आफिसर' का बंगला है।"

धनिक अभी इस बात को समझने का यत्न ही कर रहा था कि एक अंग्रेज़ औरत घोड़े पर सवार, घोड़े को सरपट दौड़ाती हुई आई और इनके समीप से गुज़रने लगी। सिपाही इनको एक ओर को हटा रहा था और ये घबराहट में सड़क के बीच होते जाते थे। औरत ने सोना को घोड़े के नीचे आने से बचाने के लिए घोड़े की लगाम रोकने तथा एक ओर से निकल जाने का यत्न किया। इस-पर भी सोना को घोड़े का धक्का लग ही गया और वह चक्कर खाकर सड़क पर गिर पड़ी। धनिक ने कन्धे की गठरी भूमि पर रखी और उसको उठाने लगा। सोना के कंधेवाली गठरी तो लुड़ककर दूर चली गई थी।

उस औरत ने घोड़ा रोक लिया। किन्तु तब तक वह बंगले के अन्दर बहुत दूर तक पहुंच चुकी थी। उसने घोड़ा घुमाकर देखा और औरत को पुरुष के आश्रय उठकर लंगड़ाते हुए सड़क की एक ओर हटते देख, घोड़ा पुन: घटनास्थल पर ले आई। सोना के माथे से रक्त निकलता देख वह घोड़े से नीचे उतर गई।

उसने देखा कि उस आदमी के कंधे पर भी पट्टी बंधी है। यह घुड़सवार औरत कमांडिंग आफिसर की पत्नी सोफी थी। उसने देखा कि घायल एक अधेड़ आयु की सुन्दर औरत है। उसने औरत को घायल देख सिपाही को अंग्रेज़ी में आर्डर दिया, "अर्दली को बुलाओ।"

इस समय सोना सड़क की एक ओर बैठ, अपने आंचल से माथे के रक्त को बन्द करने का यत्न कर रही थी । धनिक उसकी गठरी को उठा लाया था और उसको अपनी गठरी के समीप रख, सोना से बोला, "यहां से चलना चाहिए।"

"चल सकूं, तब तो । मुझे तो सख्त चोट आई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनिक परेशानी अनुभव करने लगा था । इसी समय कोठी का अर्दली भागता हुआ आया। उस अंग्रेज़ औरत ने उससे कहा, "इस औरत को स्ट्रेचर पर डालकर भीतर ले जाओ और इसके माथे पर मरहम-पट्टी कर दो।"

सोना ने उस अंग्रेज़ औरत की बात न समझते हुए उठकर चलने का यत्न किया। परन्तु वह उठ न सकी ; वह पुनः चक्कर खाकर भूमि पर गिर पड़ी। इसपर उस अंग्रेज़ औरत ने उसको अपने हाथ से बैठे रहने का संकेत किया।

अर्दली दो सिपाहियों के साथ स्ट्रेचर लेकर आ पहुंचा। अब सोना को स्ट्रेचर पर लिटा दिया गया, और वे उसको कोठी के भीतर ले गए। चौधरी मुख देखता रह गया। इसपर उस बन्दूकची ने कहा कि वह भीतर जा सकता है। धनिक ने अपनी गठरियां उठाई और उनके पीछे-पीछे चल पड़ा।

अर्दली टिंचर आयोडीन लगा अभी उसकी पट्टी कर ही रहा था कि इतने में एक डाक्टर और एक नर्स वहां पर आ गए। इस समय वह अंग्रेज़ औरत भी, जिसके घोड़े से उसकी टक्कर हो गई थी, आ गई और डाक्टर से अंग्रेज़ी में बात करने लगी।

डाक्टर ने धनिक को बताया, "इस औरत की कमर में चोट लगी है इस कारण इसको हस्पताल ले जाएंगे। दो-तीन दिन वहां रखना पड़ेगा।"

"कहां?" धनिक ने पूछ लिया।

"हस्पताल में।"

"क्या होता है वहां?"

डाक्टर ने समझाया कि उसकी कमर पर दवाई लगाएंगे। परन्तु धनिक ने डाक्टर को कहा, "मेरे पास इसकी दवाई है। यह अभी ठीक हो जाएगी। मैं इसको वहां नहीं ले जाने दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर ने मुस्कराते हुए कमांडिंग आफिसर की पत्नी को कहा, "यह औरत और यह आदमी नागजातीय प्रतीत होते हैं। इनके पास सच ही ऐसी औषधियां होती हैं कि मरते-मरते प्राणी को एक चुटकी-भर में ठीक कर देते हैं।"

"तो इसको लगाने दो।"

"तो मैं जाऊं? अपने सामने मैं ऐसी 'क्वेकरी' होते नहीं देख सकता।"

"तो आप कैसे कहते हैं कि ये ठीक कर लेते हैं?"

"यह एक दूसरी बात है।"

सोफी हंस पड़ी। उसने हंसते हुए कहा, "तो ठीक है, आप जा सकते हैं। आवश्यकता हुई तो मैं फोन कर दूंगी ।"

डाक्टर गया तो उसने अर्दली से कहा, "इसके घरवाले को कहो कि यहीं पर ही वह इसपर दवाई लगा सकता है। साथ ही वह जो कुछ मांगे दे दो, और जैसा कहे वैसा करो।"

इतना कह सोफी कोठी के 'ड्राइंगरूम में' चली गई और वहां अपने पति और उसके मित्रों के बीच डाक्टर की बात बताने लगी, "डाक्टर कहता है कि थे नागजातीय हैं और ऐसी जड़ी-बूटियां जानते हैं कि जिनसे वे रोगी को बहुत जल्दी ठीक कर लेते हैं। परन्तु इस 'क्वेकरी' को वह अपने सामने नहीं करने देगा।"

इन परस्पर-विरोधी बातों का अर्थ न समझ सब विस्मय में सोफी का मुख देखते रह गए। सोफी ने आगे बताया, "औरत उठ-बैठ और करवट भी नहीं बदल सकती। मुझे भय है कि कहीं उसकी 'हिप-बोन'[1] न टूट गई हो।"

"तो अब क्या हो रहा है?" कमांडिंग आफिसर मिस्टर माइ-कल ने पूछ लिया।

1. चूतड़ की हड्डी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसका घरवाला इलाज कर रहा है, और डाक्टर हस्पताल को लौट गया है।"

"क्या चिकित्सा कर रहा है?"

"अपनी गठरी में से कुछ निकालकर पानी में उबालने की बात कर रहा है ।"

मिस्टर माइकल अपने मित्रों के साथ दो रेजिमैण्टों में फुटबाल का मैच देखने के लिए चला गया। सोफी बरामदे में रखी एक कुर्सी पर बैठ नावल उठाकर पढ़ने लगी।

डेढ़ घंटे बाद मैच देख मिस्टर माइकल लौटा। उसने अपनी पत्नी से उस घायल औरत का हाल पूछा। इस समय अर्दली ने आकर सलाम करते हुए बताया, "सरकार! वह आदमी और औरत जाना चाहते हैं।"

"तो वह जा सकती है क्या?"

"हां हुज़ूर! वे उठकर गठरी कंधे पर उठाए खड़े हैं।"

"उनको यहां ले आओ।"

अर्दली गया और उनको लेकर आ गया। धनिक पीछे-पीछे था और सोना आगे-आगे।

जब वे सामने आकर खड़े हो गए तो सोफी ने अर्दली से पूछा, "इस औरत से पूछो कि यह ठीक है क्या।"

अर्दली ने पूछकर बताया, "सरकार! कहती है कि वह ठीक है। वह चल तो सकती है ; परन्तु माथे पर पीड़ा है, डाक्टर की दवाई से घाव जल गया है, इस कारण।"

"पूछो कि ये कहां जा रहे हैं?"

"पूछा है सरकार! यह कह रहा है कि आज ही जंगल से आए हैं और रहने का स्थान और कुछ करने के लिए काम ढूंढ़ रहे हैं।"

"ये वन से आए क्यों हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहते हैं कि कबीले वालों से लड़कर मारे जाने के भय से भाग आए हैं।"

"उनसे पूछी, हमारा नौकरी करेंगे?"

अर्दली ने पूछा और बताया, "तैयार हैं।"

"इन्तको एक 'आउट हाउस' में ठहरा दो। इनके खाने-पीने का प्रबन्ध कर दो। कल इनसे बात करेंगे।"

जब अर्दली उनको लेकर चला गया तो मिस्टर माइकल ने कहा, "क्या करोगी इनसे?"

"यह औरत बहुत ही सुन्दर है।"

"बूढ़ी हो रही है।"

"इससे क्या होता है! इसका चित्र बनाऊंगी। साथ ही इसका घरवाला जादूगर है। एक घंटे में उसने वह कुछ कर दिखाया हैं, जिसके करने में डाक्टर को तीन-चार दिन लग जाते; और इसपर भी उसको सन्देह भी था कि ठीक हो भी जाएगी!"

"डाक्टर को बुलाकर दिखाओ।"

"हां, मैं टेलीफोन कर रही हूं।"

डाक्टर का मज़ा लेने के लिए माइकल वहीं कुर्सी पर बैठ गया। सोफी ने फोन से डाक्टर से पूछा, "क्या आप आ सकते हैं?"

"क्यों, क्या बात है?"

"उसी औरत को दिखाना है।"

"उसे अस्पताल में भेज दीजिए, उसकी कमर पर प्लास्टर लगेगा।"

"क्यों?"

"शायद उसकी 'हिप-बोन' में 'फ्रैक्चर'[1] हो गया है।"

1. टूटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है, इस समय वहां कोई काम न हो तो आ जाइए। कमांडिंग जनरल आपको चाय पर बुला रहे हैं।"

"बहुत अच्छा, मैं आ रहा हूं ।"

पांच मिनट में डाक्टर वहां पहुंच गया। उसके आने पर सोफी ने बैरा को चाय लाने का आदेश दे दिया।

डाक्टर ने बैठते हुए कहा, "तब तक आप उस औरत को स्ट्रेचर पर अस्पताल भेज दीजिए।"

"पहले आप देख लीजिए। उससे पहले साहब आपसे कुछ बात करना चाहते हैं।"

इसपर माइकल ने पूछा, "डाक्टर साहब! 'क्वेकरी' किसको कहते हैं?"

"जिसका कोई साइंटिफिक[1] आधार न हो।"

"किन्तु उससे रोगी किस प्रकार ठीक हो जाते हैं?"

"केवल-मात्र घटनावश।"

"किसी इलाज से कई बार रोगी ठीक हो जाने पर वह इलाज 'क्वेकरी' नहीं रह जाता!"

इसपर डाक्टर को सन्देह होने लगा कि औरत ठीक हो गई है। इस काररणा उसने कह दिया, "ठीक होना निर्णायक नहीं है। उसके ठीक होने में वैज्ञानिक कारण ढूंढ़ना पड़ता है।"

"यह तो आप ढूंढ लीजिएगा। हम पूछ रहे हैं कि कितने रोगी ठीक होने पर आप उसका कारण ढूंढ़ना आरम्भ करेंगे?"

विवश डाक्टर को कहना पड़ा, "कम से कम बीस रोगी ठीक होने के बाद ही उसपर कुछ विचार किया जा सकता है।"

माइकल ने कहा, "हमने उस औरत को ठीक करनेवाले को अपने पास नौकर रख लिया है, और हम उसकी दवाई का ऐसे ही

1. वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगियों पर प्रयोग करके परिणाम जानना चाहते हैं।"

डाक्टर का मुख मलिन हो गया। सोफी देख रही थी। उसने कहा, "मैं चाहती हूं कि उसको अस्पताल में चिकित्सा। करने के लिए न ले जाया जाए। इससे आपको 'क्वेकरी' देखने का अवसर नहीं मिलेगा। ठीक है न? आप यही तो चाहते हैं?"

"एक बात और है। यदि कोई चोट से घायल व्यक्ति हो तो उसे हमारे 'आउट हाउस' में भेज दीजिए। हम आपकी बदनामी देखना नहीं चाहते।"

चाय आई। पीते हुए माइकल ने कहा, "आज एक फुटबाल प्लेयर आया होगा। उसकी टांग में स्प्रेन हो गई है। उसको यहां भेज दीजिए।"

"मैं उसको प्लास्टर लगाने के लिए कह आया हूं।"

"उसको यहां बुला लीजिए।"

डाक्टर ने अस्पताल को टेलीफोन किया। जब तक उन्होंने चाय समाप्त की, हस्पताल से टांग पर प्लास्टर लगे हुए उस सिपाही को ले आया गया। उसको उसी कमरे में लिटाया गया, जिसमें सोना की चिकित्सा हो रही थी।

फिर धनिक को वहां बुलाया गया। माइकल ने अर्दली द्वारा उससे कहा कि यदि इस सिपाही की टांग वह ठीक कर दे तो उसको बीस रुपये पुरस्कार मिलेगा।

प्लास्टर को चीरकर उतारा गया। धनिक ने टांग को देखा और उसके अनुसार दवा बनाकर लगानी आरम्भ की। डाक्टर भी इस समय उसका कृत्य देखने के लिए वहीं बैठा रहा। एक घण्टे के उपचार के बाद वह सिपाही अपनी टांग पर खड़ा हो गया। जब वह सिपाही उस कमरे से निकल बरामदे में इधर-उधर चलने लगा तो माइकल ने सिपाही की पीठ ठोंकते हुए कहा, "कल प्रातःकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर दिखा जाना।"

सिपाही ने बड़े साहब को सलाम किया और पैदल ही कोठी से बाहर हो गया। इस समय माइकल ने अपनी जेब से बीस रुपये निकालकर धनिक को देने चाहे, तो उसने कह दिया, "मुझे तो मेम साहब ने नौकर रख लिया है। इस कारण मेरा मेहनताना मेरे वेतन में ही आ जाएगा।"

अर्दली ने जब माइकल को उसका कथन बताया तो वह हंस पड़ा और उसने अपनी पत्नी को बीस रुपये देते हुए कहा, "ठीक है, यह तुम ही इनको दे देना।"

सोफी ने रुपये रख लिए।

उक्त घटना को छः मास व्यतीत हो चुके थे। धनिक चौधरी के नाम से विख्यात हो गया था। वह अस्पताल में कम्पाउण्डर के स्थान पर नियुक्त था और चोटों की तथा घावों की चिकित्सा करता था। उसकी चिकित्सा से डाक्टर सर्वथा सन्तुष्ट था। वह अब साहब के पतलून-कोट तथा अन्य उतरे हुए कपड़े पहनता था। उसे इस समय चालीस रुपये मासिक वेतन मिलता था। सिपाहियों में वह बहुत ही प्रख्यात हो रहा था।

सोना सोफी की सेवा-टहल करती थी। सोफी की 'हॉबी'[1] थी चित्र खींचना; और वास्तव में वह सोना को इसी कारण अपने पास रखे हुए थी। उसने सोना को 'मॉडल' बना कई चित्र खींचे। उसकी लालसा थी कि वह उसका 'न्यूड'[2] चित्र खींचे। इसके लिए सोना को तैयार करने में बहुत दिन लग गए। इसके लिए वह तब

1. रुचि 2. नग्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हुई जब सोफी ने उसको अपनी एलबम में अपना नग्न चित्र दिखाया।

ज्यों-ज्यों चित्र बनता गया, सोफी को भी अपने चित्र में सौन्दर्य देख अपने पर गर्व होता गया। जब सोना चित्र के लिए दो घण्टे बैठ कपड़े पहन अपने 'आउट हाउस' में चली जाती तो माइकल उस चित्र को देखने के लिए आ जाता और सोना के सौन्दर्य को देख मुग्ध खड़ा रह जाता।

सोना ने चौधरी को भी बताया था कि जनरल की पत्नी उससे क्या काम ले रही है। एक दिन सोना ने बताया, "चित्र लगभग तैयार हो गया है।"

"कैसा है?" चौधरी ने पूछा।

"बहुत सुन्दर है। मुझे तो अपने से भी अधिक सुन्दर दिखाई दिया है।"

"अपनी मालकिन से कहना कि मैं देखना चाहता हूं।"

"आप तो मुझे बाल्यकाल से देखते रहे हैं। तब तो मैं इससे भी अधिक सुन्दर थी।"

इसपर चौधरी उसकी उस समय की रूपरेखा स्मरण करने लगा···आंखें मूंदकर उसने पत्नी का वह दृश्य स्मरण किया, जो उसने नदी के किनारे निर्वस्त्र देखा था। उसे देखते ही वह उससे विवाह की इच्छा करने लगा था। उसके साथ उसका एक मित्र 'सौतकी' भी खड़ा था। मित्र को तो सोना में किसी प्रकार का आकर्षण प्रतीत नहीं हुआ। वह सात-आठ वर्ष की बालिका-मात्र थी। वहां कुछ अन्य लड़कियां और लड़के भी स्नान कर रहे थे। सौतकी ने धनिक से पूछा, 'कया देख रहे हो?'

'उस लड़की को ।'

'ओह, गारू की लड़की सोना को?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हां।'

'ऊंह, मैं तो इससे विवाह नहीं कर सकता।'

'तो तुम किससे करोगे?'

'किसी दिन बताऊंगा। यह तो हड्डियों का ढांचा है।'

'मुझे तो भली प्रतीत हो रही है।'

'वह तो अभी विवाह-योग्य हो भी नहीं रही, मेरा निर्वाचन पूर्ण है।'

'कहां है?'

'यहां नहीं है।'

धनिक ने मन में विचार किया कि सत्य ही उस समय वह इतनी पतली-दुबली थी कि हड्डियों का पिंजर ही कही जा सकती थी। वह स्वयं उस समय ग्यारह-बारह वर्ष का कुमार था। अभी वह यौन-आकर्षण का अर्थ नहीं समझता था। इसपर भी वह जानता था कि लड़के-लड़कियों का विवाह होता है। औरतों और लड़कियों को भी वह प्राय: जंगलों में नग्न देखता रहता था। और किसी लड़की को इस प्रकार नग्न देखने में उसे कोई आकर्षण प्रतीत नहीं होता था। वे प्राय:कमर से ऊपर नग्न तो रहती ही थीं। इसपर भी उसको सोना बहुत पसन्द थी, और तब से वह उसके वयस्क होने की प्रतीक्षा करने लगा था।

इसके बाद तो उसको वह कई बार नग्न देख चुका था। वर्ष पर वर्ष व्यतीत होते गए और उसकी हड्डियों पर मांस चढ़ता गया और एक दिन कबीले में वह सर्वश्रेष्ठ लड़की मानी जाने लगी।

सोना वयस्क हुई तो यौवनारम्भ का सूचक उत्तरीय उसके कंधे पर डाल दिया गया और उसके लिए युवक की तलाश होने लगी। इस समय तक सौतकी अपनी प्रेमिका से विवाह कर चुका था और जब धनिक सोना के पिता को अपने मन की बात कह आया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौतकी ने मान लिया था कि उसका चयन श्रेष्ठ था। सौतकी की पत्नी बहुत मोटी हो गई थी।

सोना से विवाह हुआ तो वह उस दिन भी अपने मन में उसके पहले दिन की रूपरेखा का चिन्तन करने लगा था । विवाह के पश्चात् वह उसको बांह से पकड़कर घने वन में ले गया। उसको ले जाते देख उसके कबीले वाले हंसने लगे थे।

दूर वन में एकांत स्थान पर ले जाकर उसने उसको कहा, 'सोना! मैं तुमको निर्वसना देखना चाहता हूं।'

'क्यों?'

मैं तुम्हारी आज की रूपराशि की उस दिन की रूपराशि से तुलना करना चाहता हूं, जिस दिन मैंने तुम्हें पहले-पहल देखा था।'

'कब देखा था पहले-पहल?'

धनिक ने उसको स्मरण कराया, परन्तु सोना को स्मरण नहीं आया। जीवन के अनेक दिनों में से वह एक था और उसका पति कबीले के सब युवकों में से एक था, जिन्होंने उसे कभी नदी में नहाते हुए देखा था।

धनिक के आग्रह पर उसने अपना रूप दिखाया था। आज भी उसकी वे सब पुरानी स्मृतियां मन में उठने लगी थीं।···उन स्मृतियों का रसास्वादन कर उसने कहा, "मैं तुम्हारा चित्र देखना चाहता हूं।"

"क्या करेंगे देखकर, मैं स्वयं जो उपस्थित हूं ।"

इस चित्र के पूर्णा होने पर तो माइकल सोना में आसकित अनुभव करने लगा था। उसने अपनी पत्नी से अपने मन की बात बताई तो सोफी ने उसको मना कर दिया। सोफी का कहना था कि ये वनवासी नग्न होने में तो संकोच नहीं करते, परन्तु अपनी स्त्री के लिए सतीत्व की बहुत महिमा मानते हैं। इसके लिए हत्या कर देना तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके लिए साधारण-सी बात है।

परन्तु माइकल को अपनी पत्नी के कथन पर विश्वास नहीं आया। वह उस समय तो कुछ बोला नहीं, इसपर भी वह मन ही मन अपनी कामना पूर्ण करने की योजना बनाने लगा।

अब सोफी सोना को अपनी टूटी-फूटी पहाड़ी भाषा में बात बताकर समझाने लगी और सोना भी कुछ अवश्यक अंग्रेज़ी के शब्द सीख गई थी और अपनी मालकिन की आवश्यकताओं को समझ, उनको पूरा कर देती थी।

बिन्दु ने बड़ौज को भी अंग्रेज़ी पढ़ाने का यत्न किया था। परन्तु बड़ौज मज़दूरी करने से थककर पढ़ने की ओर ध्यान नहीं दे सकता था। जब बिन्दू अंग्रेज़ी की तीसरी पुस्तक पढ़ रही थी, बड़ौज अभी अक्षरबोध ही पढ़ रहा था। एक वर्ष के निरन्तर प्रयत्न के बाद उसने पढ़ना छोड़ दिया। इससे बिन्दु को निराशा हुई, परन्तु उसके पति ने जब कहा, "क्या तुम्हारी पुस्तक पढ़ लेने से मैं कुछ अधिक प्यार कर सकूंगा!" तो वह चुप हो गई।

इसपर भी वह अपने पति और बस्ती के अन्य पढ़े-लिखे युवकों में अन्तर समझने लग गई थी। रहन-सहन, वस्त्र पहनने तथा बात-चीत करने में अन्तर प्रतीत होने लगा था। साथ ही मज़दूर तथा राजगीर के काम में तथा एक पढ़े-लिखे के काम में भी अन्तर उसकी समझ में आने लगा था।

उसको अंग्रेज़ी तथा गणित सिखानेवाला एक मास्टर सेमुएल स्टीवन्सन था। वह इंग्लैण्ड के एक धनी परिवार का युवक था। वह पिछड़ी जातियों में भगवान के ज्ञान का प्रकाश करने का पुण्य-लाभ करने के लिए ही अपनी जीवन-भर की सेवाएं क्रिश्चियन मिशन को दे बैठा था। जब वह भारत में अन्धकार दूर करने के विचार से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया था तब उसकी आयु तेईस वर्ष की थी। लगभग आठ वर्ष से वह इसी बस्ती में काम कर रहा था। पूर्ण बस्ती में वह एक धर्म-परायण और शुद्ध-पवित्र आचरण का व्यक्ति समझा जाता था।

बिन्दु के आने से पूर्व कई नाग लड़कियों ने उससे विवाह करने का यत्न किया था, परन्तु कोई भी उसके मन को आन्दोलित नहीं कर सकी। और इकतीस वर्ष की आयु से वह सर्वथा किसी प्रकार के लगाव से रहित जीवन व्यतीत कर रहा था। रहने के लिए उसको एक पक्की 'काटेज' मिली हुई थी और अपना अधिकांश समय अध्ययन एवं पूजा-पाठ में व्यतीत करता था।

जब से बिन्दू उसकी श्रेणी में आई थी, अपने मन में वह उसके लिए आकर्षणा अनुभव करने लगा था। परन्तु यह जानकर कि वह विवाहित है, अपने मन की भावनाओं को सदा दबाने का यत्न करता रहता था। इसपर भी दिन-प्रतिदिन उसको देख वह विकलता अनुभव करने लगा था। वह आकर्षण एकपक्षीय नहीं था । बिन्दू भी इसका अनुभव करती थी। यद्यपि वह इस आकर्षण का अर्थ नहीं समझ रही थी, तथापि वह स्पष्ट देख रही थी कि बड़ौज की संगत से अधिक मास्टर से बातें करने तथा उसकी बातें सुनने में आनन्द आता है।

बिन्दू को पढ़ते एक वर्ष से अधिक हो गया था। अब वह अंग्रेज़ी में बातें करने लगी थी। स्टीवन्सन उसको उपहार देने लगा था। कभी कोई शाल, और कभी बालों में लगाने का कोई पिन। कभी लिखने का कोई पेन, और कभी कोई सचित्र पुस्तक। बिन्दू उपहार की इन वस्तुओं को अपने घर पर एक मेज़ पर सजाकर रखने लगी। इस समय तक वह स्टीवन्सन के घर भी जाने लगी थी। अपने घर और स्टीवन्सन के घर में वह अन्तर देखने लगी थी। इस समय तक स्टीवन्सन के मस्तिष्क में शैतान का राज्य हो चुका था। वह बिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अब अपनी अविवाहिता पत्नी बनाने का यत्न करने लगा था।

धनी बाप का बेटा होने से वह अपने पिता की सम्पत्ति में से प्रतिमास इंग्लैंड से रुपया पाता था और प्रतिमास वह लुमडिंग से कुछ न कुछ वस्तु लाकर बिन्दू को भेंट दे देता था । मास के प्रथम शनिवार को वह एक घोड़े पर सवार हो लुमडिंग जाता। रविवार के पूर्ण दिन वहां रहता और सोमवार को घोड़ा भगाता हुआ मध्याह्न तक स्टोप्स नगर में आ पहुंचता। आते ही स्नान आदि से निवृत्त हो वह स्कूल में उपस्थित हो जाता और स्कूल के समय के बाद लुमडिंग से लाई हुई वस्तु बिन्दू को भेंट करता।

उस समय बड़ौज की आय सवा दो रुपये दैनिक थी। उस आय में से वह उसको वस्त्र आदि से अधिक कुछ भी लाकर नहीं दे सकता था। वह भी देख रहा था कि प्रतिमास बिन्दू को कुछ न कुछ नवीन वस्तु उसके मास्टर से मिलती रहती है और भेंट रखने की मेज़ अब भरती जा रही है। बड़ौज के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हो रही थी। वह बिन्दू को अपने मास्टर की प्रशंसा करते सुनने लगा था और कभी-कभी तो वह उसकी रूपरेखा की प्रशंसा कर देती थी।

बड़ौज स्वयं को मास्टर से छोटा अनुभव करने लगा था। इससे वह कभी कह नहीं सकता था कि बिन्दू क्यों उसकी प्रशंसा करती है। एक बार मास के प्रथम सोमवार को बिन्दू घर पर बहुत विलम्ब से आई। बड़ौज जानता था कि आज वह कोई वस्तु भेंट की ग्रहण करके लाएगी। इस विचार से वह ठण्डा सांस लेकर रह गया था और अपने भाग्य पर संतोष करने लगा था। उस दिन नित्य से कुछ अधिक विलम्ब हो गया था और वह बेचैनी से बिन्दू की प्रतीक्षा में अपनी कुटिया के बरामदे में आकर खड़ा हो गया था। यद्यपि अंधेरा प्रसारित हो रहा था, तथापि अभी कुछ-कुछ प्रकाश अवशेष था। इस घुसमुसे में दूर से उसको बिन्दू और उसका मास्टर दिखाई दिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिन्दू की बांह मास्टर की बांह में थी और स्टीवन्सन का नौकर कोई बड़ी-सी वस्तु उठाए पीछे-पीछे आ रहा था।

एकाएक बिन्दू ने मास्टर की बांह से अपनी बांह निकाल ली। बड़ौज को संदेह हुआ कि उसने उसको वहां पर खड़ा देख लिया है। इससे तो उसका मस्तिष्क भन्ना उठा। वह समझ गया कि बिन्दू के मन में कुछ चोर आ बैठा है, जो वह अब मास्टर से अपनी घनिष्ठता अपने पति से छिपाकर रखने का यत्न करने लगी है।

इस विचार से उसके हृदयस्थल में एक टीस उठी और वह और अधिक सहन न कर सकने के कारण भीतर बैठने के कमरे में आ गया और प्रकाश करने के लिए मिट्टी के तेल का लैम्प जलाने लगा। वह अभी माचिस से लैंप जला ही रहा था कि बिन्दू और उसका मास्टर आ गए और मास्टर ने बड़ौज को सम्बोधित कर कहा, "मिस्टर ग्रीन! कैसे हो?"

"ठीक हूं साहब!" दीघे निःश्वास छोड़ते हुए बड़ौज ने कहा।

जब कमरे में प्रकाश हो गया तो स्टीवन्सन ने नौकर को बुलाकर कहा कि वह उस वस्तु को वहां पर रख दे।

बिन्दू ने बड़ौज की बांह पर हाथ रखकर उसे अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा, "देखो जी, मास्टरजी मेरे लिए क्या लाए हैं!"

बड़ौज को कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि बिन्दू का हाथ जल रहा है। उसने उसके हाथ को हटाते हुए घूमकर पूछा, "क्या है?"

बिन्दू ने वह वस्तु खोल दी। एक कागज़ में लपेटा हुआ सन्दुक-सा था। बिन्दू ने कागज़ को हटाकर सन्दूक खोला। यह ग्रामोफोन था। बड़ौज ने देखा कि चीज़ तो सुन्दर है ; परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब बिन्दू ने उसमें चाबी भर, उसपर रिकार्ड रखकर बजाना आरम्भ किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अंग्रेज़ी डांस-ट्यून थी। जब बाजा बजने लगा तो बिन्दू अपना वनवासियों का नृत्य करने लगी। बड़ौज उसको प्रसन्नता में नाचती देख बहुत प्रसन्न हुआ ; परन्तु जब बाजा बजना बन्द हुआ तो यह समझ कि उसकी पत्नी को प्रसन्न करनेवाला वह स्वयं नहीं प्रत्युत कोई अन्य है, उसका हृदय भीतर ही भीतर बैठने लगा।

अब स्टीवन्सन उठा और बड़ौज से हाथ मिला और बिन्दू को 'चियरो' कह विदा हो गया। जब वह चला गया तो बड़ौज उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए बोला, "आज कुछ खाया नहीं जाएगा क्या?"

"ओह! तो आपने चाय नहीं पी?"

"मैं तो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।"

बिन्दू ने बाजा बन्द किया और रसोईघर में जा, चूल्हा जला, चाय बनाने लगी। चाय पीते समय बड़ौज को अनुभव हुआ कि बिन्दू कुछ भी नहीं खा रही, प्रत्युत उसको ही खिला-पिला रही है। उसको जब इस बात का ज्ञान हुआ तो उसने बिन्दू से पूछा, "बिन्दू! कुछ खा नहीं रही हो। क्या बात है?"

"मैं मिस्टर स्टीवन्सन के साथ चाय पी आई थी।"

बड़ौज ने पुनः एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा और मौन हो गया। रात का खाना भी बिन्दू ने कम ही खाया। बड़ौज ने अब अधिक नहीं पूछा। सबसे विशेष बात यह हुई कि बिन्दू ने आज पहली बार थकावट का बहाना कर जल्दी सो जाने का आयोजन किया।

अपने मन का संशय निवारण करने के लिए बड़ौज ने पूछा, "यह बाजा कितने का होगा?"

"स्टीवन्सन कह रहे थे कि एक सौ पचास रुपये का तो बाजा ही है और दो रुपये आठ आने का एक रिकार्ड है, इस प्रकार दस रिकार्ड के पच्चीस रुपये हो गए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ौज पूर्ण कीमत गिन नहीं पाया। इसमें उसने अपनी गणितज्ञा पत्नी से ही पूछा, "कुल कितने बने?"

"पौने दो सौ रुपये।"

"और इसके बदले में तुमने मास्टर को क्या दिया है?"

"मेरे पास है ही क्या जो मैं देती?" बिन्दू ने कहा। इसपर भी वह बड़ौज का अभिप्राय समझ गई थी और उसके मुख पर ईर्ष्या के चिह्न भी उसको दिखाई दे रहे थे। उसने आगे कहा, "मैं सुन्दर नाचती हूं। मिस्टर स्टीवन्सन ने उससे प्रभावित होकर यह बाजा ला दिया है, ताकि मैं जब चाहूं घर पर इसको बजाकर नाच सकूं। और अब तुम भी मेरे साथ नाचोगे।"

"बस, या कुछ और भी?"

"और क्या हो सकता है?"

"मास्टर की आंखों में तुम्हारा प्रेम दिखाई देता था!"

"वे तो सबसे ही प्रेम करते हैं। वे बहुत ही प्रेममय हैं। उनके चित्त में प्रभु यीशुमसीह का प्रेम भरा पड़ा है। और जैसे परमात्मा के पुत्र हम पापियों के लिए खुद सूली पर चढ़ गए, वैसे ही ये भी अपने बाप की लाखों की सम्पत्ति छोड़ हम भटकते हुए वनवासियों के लिए प्रेम लिए हुए हमारा उद्धार करने यहां आए हुए हैं।"

बड़ौज तो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण देख रहा था, और इस आश्वासन से वह चुप हो गया।

इसके कई दिन बाद एक दिन स्टीवन्सन उसके घर आया और बोला, "मिस्टर ग्रीन! मैं कल लुमडिंग और फिर वहां से शिलांग जा रहा हूं। तुम्हारी पत्नी मेरे साथ जाना चाहती है। उसको जाने की स्वीकृति दे दो।"

"यह कैसे हो सकेगा?"

"हो जाएगा। इसके लिए मैं एक घोड़ा तैयार कर रहा हूं। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़े पर सवार हो जाएगी। हम यहां से लुमडिंग, फिर गोहाटी और अन्त में शिलांग जाएंगे। इस यात्रा में एक मास लग जाएगा। तुम्हें कष्ट तो होगा, परन्तु यह लड़की संसार देखना चाहती है, इस कारण तुम इसे इजाज़त दे दो। मैं बहुत सावधानी से इसकी देखभाल करूंगा।"

बड़ौज इसका अर्थ नहीं समझ सका। ग्रामोफोन आने के दिन जो सन्देह उसको हुआ था आज वह परिपक्व हो रहा था। उसको अनिश्चिनतमत देख बिन्दू ने उसके गले में अपनी बांह डाल और अपने गाल को उसके गाल से सटाकर कहा, "मुझे जाने दो, इससे मैं जीवन-भर तुम्हारी आभारी रहूंगी।"

बड़ौज जाल में फंस गया। उसने कहा, "मैं यहां अकेला क्या करूंगा?"

"खाना स्वयं बना लिया करना। मैं तुम्हारा बहुत एहसान मानूंगी। मैं बड़े-बड़े नगर देखना चाहती हूं।"

अगले दिन दोनों घोड़ों पर सवार हो चल दिए। बड़ौज मुख देखता रह गया। उनकी वनवासी बस्ती में तो ऐसा सम्भव नहीं था। परन्तु यहां की तो रीति ही निराली थी। इस वनवासियों की बस्ती में यूरोप का रहन-सहन आ रहा था। मर्द-औरत इकट्ठे नाचते-गाते और परस्पर मेल-जोल रखते थे। एक की पत्नी दूसरे पुरुष के साथ घूमने में संकोच नहीं करती थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि बड़ौज देख रहा था कि उसकी पत्नी एक स्वर्ग की अप्सरा की भांति है और वह है केवल एक-दो रुपये रोज़ का मज़दूर।

बिन्दू और स्टीवन्सन गए तो फिर लौटकर नहीं आए। दो मास की प्रतीक्षा कर उसने गिरिजाघर के पादरी से मास्टर स्टीवन्सन के विषय में पूछा तो उसे विदित हुआ कि वह तो छः मास के अवकाश पर गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु फादर! वह तो मेरी पत्नी को साथ लेकर गया है।"

"सत्य! तब तो तुम किसी अन्य से विवाह कर लो। यहां बहुत लड़कियां हैं।"

बड़ौज सब समझ गया। अपने जीवन से निराश वह पुनः अपने बाप-दादाओं की बस्ती में लौट जाने का विचार करने लगा। वहां स्त्रियां नंगी घूमती थीं, परन्तु किसीकी पत्नी की ओर कोई पुरुष कुदृष्टि से नहीं देखता था। सब भगवान से डरते थे। कभी किसीके मन में पाप आता था तो मिट्टी के देवता के सामने गिड़गिड़ाकर वह क्षमा-याचना कर लेता था और पुजारी जो प्रायश्चित्त बताता था, वह पूर्ण कर दिया जाता था। एक बात अवश्य थी। जब कभी किसी अन्य कबीले से लड़ाई हो जाती तो युद्ध में जितनी स्त्रियां मिलती, उनको अपने देवता के सम्मुख कबीले की सम्पत्ति घोषित कर दिया जाता; और तब उनसे विवाह कर लिया जाता था। प्राय: एक पति की एक ही पत्नी होती थी। परन्तु जब युद्ध में प्राप्त हुई स्त्रियां आतीं तो दूसरी और तीसरी पत्नियां भी रख ली जाती थीं।

बड़ौज अपने कबीले के वृद्ध जनों से ऐसा सुन चुका था, परन्तु उसके जीवन में किसीसे भी युद्ध नहीं हुआ था और इस कारण उसने दो-दो पत्नियों की बातें सुनी ही थीं, देखी नहीं थीं।

पादरी ने उसको उसके वार्डन मिस्टर पाल के पास भेज दिया। मिस्टर पाल ने पूर्ण बात सुनकर कह दिया, "बिन्दू अवश्य ही अब तक मिस्टर स्टीवन्सन की पत्नी बन चुकी होगी। तुमको अब अपने नये विवाह का प्रबन्ध करना चाहिए।"

"परन्तु साहब!" बड़ौज ने कहा, "मैंने सुना है कि आपके यहां तो एक विवाह के रहते कोई पति अथवा पत्नी दूसरा विवाह नहीं कर सकते?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु तुम्हारे साथ बिन्दू का विवाह तो अनियमित था। विवाह के समय तो वह नाबालिग थी। इस कारण उसको तलाक की अवश्यकता नहीं पड़ी होगी।"

बड़ौज गम्भीर हो वहां से लौटकर आया। अगले दिन बस्ती-वालों ने देखा कि उसकी झोंपड़ी का द्वार खुला है ; वह वहां नहीं था। और उसके बाद वह फिर बस्ती में दिखाई नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

पिछले परिच्छेद का कथानक सन् 1920-21 का था। प्रथम यूरोपीय युद्ध के बाद ईसाई मिशनरियों का भारतवर्ष पर विशेष अभियान आरम्भ हुआ। इससे पूर्व तो भारत में केवल अंग्रेज़ी और पुर्तगाली ईसाई ही धर्म-प्रवार के लिए आते थे। परन्तु इस युद्ध के बाद दुनिया का राजनीतिक चित्र बदलता प्रतीत होने लगा और ईसाइयों के धर्म-प्रचार में भी इस बदलती हुई परिस्थिति के साथ परिवर्तन आया था।

प्रारम्भ में तो ईसाइयों ने अपना काम बड़े-बड़े नगरों में आरम्भ किया। भारतवासियों के शिष्टवर्ग में प्रभु यीशुमसीह के प्रेम का प्रसाद देने के लिए उन्होंने सरकारी शिक्षा के प्रसार में अपने स्कूल और कॉलेज खोले। सरकारी अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त युवकों की ऊंची पदविया, बड़े वेतन और विशेष सेवाओं के लिए रायसाहब, रायबहादुर, सरदार बहादुर इत्यादि उपाधियां मिलती थीं। इस वर्ग में ईसाइयों ने अपना प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास किया। परन्तु उनकी इस नीति का विरोध बंगाल में ब्रह्मसमाज, मद्रास में थियोसॉफिकल सोसाइटी और उत्तरी भारत में आर्यसमाज ने आरम्भ किया तो ईसाइयों की नीति में अन्तर आया और इन्होंने अपना प्रचार भारतीय शिष्टवर्ग तथा बड़े-बड़े स्कूलों-कॉलेजों में करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान पर छोटी जातियों में करना आरम्भ कर दिया, और स्कूलों के स्थान पर यतीमखाने खोलने में अपनी शक्ति लगानी आरम्भ कर दी। इसका भी विरोध हुआ। आर्यसमाज ने इस चाल को निष्प्रभाव कर दिया। रही-सही बात महात्मा गांधी के अछूतोद्धार-आन्दोलनों ने समाप्त कर दी।

इस कारण ईसाइयों को अपने कार्यक्रम पर विचार करने के लिए विवश होना पड़ा और इस सम्बन्ध में इन्होंने 'वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ क्रिश्चियन मिशन्स इन दि ईस्ट' की शिलांग में एक कान्फ्रेंस की। इसमें उन सब संस्थाओं के प्रतनिधि आए थे, जो भारत, इंडोनेशिया, चीन, मलाया इत्यादि देशों में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए इंग्लैंड, फ्रांस तथा अमेरिका से धन एकत्रित कर भेजते थे।

मिस्टर स्टीवन्सन इसी कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए गया और जाते-जाते वह बिन्दू को अपना असिस्टेण्ट बनाकर साथ ले गया था। वह यत्न तो कई दिन से कर रहा था, परन्तु उसको पूर्ण विजय तो उस दिन मिली जिस दिन उसने बिन्दू को ग्रामोफोन भेंट में दिया था।

उसी दिन बिन्दू ने बड़ौज के मन में उत्पन्न होनेवाले सन्देह के निराकरण का यत्न भी किया था, परन्तु वह मन में समझ रही थी कि वह उसका समाधान कर नहीं सकी। उसने उसकी सफाई देते ही सन्देह उत्पन्न किया था। वह यह समझ गई थी कि यह स्थिति चिरकाल तक नहीं चल सकती। और अपने कबीलेवालों के रीति-रिवाज वह जानती थी कि उसके चरित्र पर संदेह होते ही बड़ौज उसको मार डालेगा। इस कारण उसने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि या तो वह अपने मास्टर से सम्बन्ध रखना बन्द कर देगी, अन्यथा वह स्टीवन्सन से कहेगी कि उसको कहीं ऐसे स्थान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ले जाए जहां बड़ौज पहुंच ही न सके। उसका मन कहता था कि उसने अपने पति के साथ विश्वासघात किया है, परन्तु अपने सौंदर्य और अपने पति की आर्थिक अवस्था देख वह मन में विचार करने लगी थी कि उसका उसके साथ विवाह एक भूल थी।

उसके मन में अभी तक ईसाइयों की देवी मरियम की प्रतिष्ठा वह नहीं बनी थी जो अपने मिट्टी के बने कबीले के देवता की थी। इसी कारण वह समझी थी कि उसके सामने दिया वचन तो वचन है ही नहीं।

इस प्रकार अपनी अन्तरात्मा में अपने व्यवहार के विरुद्ध उठ रही आवाज़ का गला घोंटकर वह स्टीवन्सन के सामने आत्मसमर्पण कर सकी थी। जब बड़ौज उससे उसके मास्टर को बदला देने के विषय में पूछ रहा था, तब इसी युक्ति से वह अपनी आत्मा की आवाज़ को दबा रही थी। वह स्टीवन्सन के बिस्तर की दुग्ध-समान श्वेत सुवासित चादर का मुकाबला करने लगी थी बड़ौज के पन्द्रह दिन के मैले और कठोर बिस्तर के साथ। स्टीवन्सन के नित्य हजामत किए गोरे-चिकने मुख का मुकाबला करती थी बड़ौज के आठ दिन से हजामत किए हुए गन्दे और खुरदरे मुख से। उसके मन ने निर्णय कर लिया था, परन्तु वह अभी मरना नहीं चाहती थी और वर्तमान मन की अवस्था में बड़ौज का सन्देह विश्वास में बदलने में मारा जाना निश्चित था···

अगले दिन वह उठी तो बड़ौज के बिस्तर में चली गई और उससे गाढ़ आलिंगन कर कहने लगी, 'यदि मास्टर की भेंट देने पर नाराज़ हो तो मैं उसकी ये सब वस्तुएं वापस कर आती हूं।'

'मैं इन वस्तुओं को लेने से नाराज़ नहीं; मैं तो चिन्ता कर रहा था उस वस्तु के विषय में जो तुमको इसके बदले में देनी पड़ेगी।'

'मुझे कुछ नहीं देना पड़ेगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो ठीक है।'

उसी दिन स्कूल के बाद वह स्टीवन्सन से मिली तो उसने अपना भय व्यक्त करते हुए कहा, 'अब आप मुझसे क्या चाहते हैं?'

स्टीवन्सन बोला, 'एवरलास्टिंग लव।'[1]

'परन्तु वह इस बस्ती में रहते हुए नहीं हो सकता। बड़ौज हम-पर सन्देह करने लगा है। मैंने सन्देह-निवारण करने का यत्न तो किया है, परन्तु सन्देह पक्का होने पर वह मेरी और आपकी हत्या कर देगा। नाग लोग अपनी अनिष्ठावान पत्नी और उसके मित्र का यह अन्त धर्मानुकूल मानते हैं।'

'तो तुम क्या चाहती हो?'

'मुझे कहीं अन्यत्र ले चलो।'

स्टीवन्सन गम्भीर विचार में पड़ गया। उसने कुछ विचार कर कहा, 'तुम्हारे लिए मैं दुनिया के अन्तिम छोर तक जाने के लिए तैयार हूं। कुछ दिन प्रतीक्षा करो, हम चल देंगे।'

···शिलांग के पादरियों की सभा होनेवाली थी। स्टीवन्सन ने उस कानफ्रेंस में जाने का प्रबन्ध कर लिया। साथ ही उसने बिन्दू ग्रीन को अपने सेक्रेटरी के रूप में ले जाने की स्वीकृति ले ली। पादरी का कहना था कि उसको बिन्दू के पति से स्वीकृति ले लेनी चाहिए। वह ले ली गई और अगले दिन दोनों बस्ती के घोड़ों पर लुमडिंग को चल पड़े।

लुमडिंग में वो वे केवल कुछ घण्टे ही ठहरे, फिर वहां से गौहाटी और गौहाटी से शिलांग जा पहुंचे।

उस सम्मेलन में लगभग एक सौ प्रतिनिधि उपस्थित थे। भारत

1. अमर प्रेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के चीफ आर्चबिशप इस सम्मेलन के प्रधान थे। बिन्दू को तो केवल सम्मेलन के पण्डाल की लॉबी में बैठने की स्वीकृति थी। स्टीवन्सन सम्मेलन में सक्रिय भाग ले रहा था।

पहले दिन प्रधान का भाषण हुआ। भाषण छपा हुआ था। उसमें पिछले आठ वर्ष के ईसाई धर्म के भारत में प्रचार का इतिहास था, फिर उन शक्तियों का उल्लेख था जो धर्म-प्रचार में बाधक हो रही थीं। इन शक्तियों में इस्लाम भी एक था। आर्चबिशप महोदय का विचार था—

इस्लाम ईसाइयत का सबसे बड़ा विरोधी है। यद्यपि खिलाफत के मिट जाने से इस्लाम दुर्बल है, इसपर भी वह एक ऐसी शक्ति है जो विश्व के एक बहुत बड़े गुट को संगठित करने में सशक्त है।

देश के अन्दर ईसाइयत का सफल विरोध आर्यसमाज ने किया है; परन्तु देश में अछुतोद्धार का काम एक राजनीतिक नेता के हाथ में आ जाने से आर्यसमाज निष्प्रभ हो गया है।

इसपर भी ईसाइयत को जो खतरा है, वह कम नहीं हुआ। राजनीति जनता के हाथ में आ जाने से और अछुतोद्धार महात्मा गांधी के हाथ में जाने से हिन्दुस्तानी ईसाई तो अपने को सुरक्षित मान अफीम खाए मानव की भांति निश्चिन्त हो सो जाएंगे, और भारत में स्वराज्य मिलने पर बहुसंख्या वाले हिन्दू ईसाइयत को निर्मुल कर देंगे। देश में राजनीतिक ढांचा बदलने के साथ राज्य की ओर से जो संरक्षण हमको मिल रहा है, वह नहीं रहेगा; और भारतवर्ष जैसा जहालत में फंसा देश भगवान के पुत्र प्रभु यीशुमसीह की दया के हाथ से वंचित रह जाएगा।

इस देश में राजनीति की करवट बदलने से हमको भी अपने प्रयास का रूप बदलना चाहिए। हमको देश के कुछ क्षेत्रों में अपना काम उग्र रूप से आरम्भ कर देना चाहिए और कुछ क्षेत्रों में अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धर्मानुयायियों का बहुमत बना वहां ईसाई राज्य स्थापित कर लेना पड़ेगा। भारत में वह ईसाई फेडरेशन का अंग बनकर रहेगा अथवा इस महाद्वीप में एक स्वतंत्र राज्य बनकर, यह बाद में विचार कर लिया जाएगा।

—इस प्रकार देश में बदल रहे राजनीतिक चित्र के साथ ईसाई धर्म प्रचार की योजना के विषय में विचार होने लगा।

यह सम्मेलन एक मास तक चलता रहा और स्टीवन्सन उग्र रूप में इसमें भाग लेता रहा।

इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए लुमडिंग के कमांडिंग जनरल की पत्नी मिसेज़ सोफी माइकल भी आई हुई थीं। वे अपने साथ सोना को भी लाई थीं। सोफी तो सम्मेलन में भाग लेने के लिए हाल में चली जाती थी, परन्तु सोना बाहर लॉबी में बैठी अपनी मालकिन के लिए ऊनी स्वेटर बुनती रहती थी। बिन्दू ने पहले दिन ही उसको पहचान लिया था और उससे छिपकर बैठी रही थी। रात को बिन्दू ने मिस्टर स्टीवन्सन को बताया, "यहां बड़ौज की मां बैठी दिखाई दी है। वह एक अंग्रेज़ औरत के साथ यहां आई है, जो आपकी मीटिंग में भाग ले रही है।"

"तो फिर?"

"फिर कुछ नहीं। उसके सम्मुख हो जाने पर क्या कहना होगा, इसका निश्चय कर लेना चाहिए।"

"बस, यही कि तुम मेरी सेक्रेटरी बनकर आई हो और तुम्हें इस काम का दस रुपये दैनिक वेतन मिलता है।"

"और उसके लड़के के विषय में?"

"यही कि वह स्टोप्सगंज में रहता है और नौकरी करता है।"

"यदि वह मुझे अपने साथ ले चलना चाहे तो?"

"तुम उसका पता पूछ लेना और यह कह देना कि अवसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिलने पर हम उसके नगर में जाएंगे।"

इस प्रकार बात तय हो गई और अगले दिन जब सोना अपनी मालकिन के साथ सम्मेलन में आई, तो बिन्दू ने स्टीवन्सन को बता दिया। स्टीवन्सन मिसेज़ माइकल को जानता था। वे प्रचार-कार्य के लिए सरकारी कर्मचारियों से बहुत धन एकत्रित किया करती थीं। अंग्रेज़ी सैनिक विभाग से भी उस क्षेत्र में बहुत सहायता दिलवाया करती थीं। स्टीवन्सन जब भी लुमडिंग में जाया करता था, मिसेज़ माइकल से मिला करता था।

इस कारण बिन्दू के संकेत करने पर वह मिसेज़ माइकल से जाकर मिलने लगा। बिन्दू देख रही थी कि सोना ने उसे पहचाना नहीं। उसकी पूर्ण रूपरेखा बदल चुकी थी। वह यूरोपियन पोशाक में थी और उसके सिर के बाल कट चुके थे। इसके अतिरिक्त उसने पाउडर और लिपस्टिक का भी प्रयोग किया हुआ था।

बिन्दू ने सोना के सामने खड़ी हो आवाज़ दी, "मौसी!"

सोना ने सामने खड़ी यूरोपियन लड़की को अपनी भाषा में उसको मौसी कहकर पुकारते सुना तो ध्यान से देखने लगी। वह पहचान गई। पहचानते ही दोनों गले मिलने लगीं। सोना ने पूछा, "बिन्दू! बड़ौज कहां है?"

"घर पर है।"

"कहां बनाया है घर?"

इसपर दोनों लॉबी की बेंच पर बैठ गईं। और बिन्दू ने अपने भागने से लेकर उस दिन तक की पूर्ण कथा बता दी। केवल अपने स्टीवन्सन से सम्बन्ध की बात उसने नहीं बताई।

सोना ने पूछा, "तो बड़ौज को साथ क्यों नहीं लाई?"

"वह वहां नौकरी करता है।"

"तुम तो बहुत ही सुन्दर निकल आई हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मौसी! तुम्हारी जितनी नहीं। तुम तो इस आयु में भी अद्वितीय हो।"

इस प्रशंसा से सोना का मुख लाल हो गया। उसने बात बदलकर अपनी कहानी बता दी और फिर बिन्दू से पूछने लगी, "कहां रहती हो?"

"हम 'ग्राण्ड होटल' में ठहरे हैं।"

"वापस जाते समय लुमडिंग से चलोगी तो मैं तुम्हारे साथ अपने लड़के से मिलने के लिए चलूंगी।"

"साहब यहां से कलकत्ता और बम्बई चलेंगे। अगर में उनके साथ न गई तो तुम्हारे साथ चलूंगी ।"

दूसरी ओर जब बिन्दू और सोना गले मिलीं तो सोफी ने स्टीवन्सन से पूछा, "यह लड़की तो यूरोपियन प्रतीत नहीं होती?"

"यह मेरी सेक्रेटरी है। यह कहती है कि वह औरत इसकी सास है।"

"ओह! वह औरत मेरी नौकरानी है।"

स्टीवन्सन ने देखा तो बोला, "यह औरत तो 'ग्राण्ड ब्यूटीफुल'[1] है।"

"तुम्हारी सेक्रेटरी तो इससे अधिक सुन्दर है।"

"वह युवा है। यह बड़ी आयु की होने पर भी बहुत सुन्दर है ।"

"यह मेरे हसबैंड की मिस्ट्रेस है।"

"सत्य? यह तो उससे बड़ी आयु की है।"

"हां, और इसका पति भी हमारे घर में रहता है। परन्तु धन और बढ़िया शराब ने वह कुछ कर दिया है कि जिसकी मुझको आशा नहीं थी।

1. बहुत सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं लुमडिंग में आया तो तुम्हारे पति को बधाई दूंगा। परन्तु क्या तुम उससे नाराज़ नहीं हो?"

"मुझको आवश्यकता अनुभव नहीं होती। मुझे इससे सुख अनुभव होने लगा है।"

इसपर भी स्टीवन्सन ने बिन्दू के साथ अपने सम्बन्धों के विषय में कुछ नहीं बताया। सोफी ने मुस्कराते हुए कहा, "यदि तुम इस लड़की को वहां लेकर गए तो जनरल साहब इसको छोड़ेंगे नहीं।"

"यह लड़की बहुत नेक और अपने पति पर इसकी निष्ठा अटूट है।"

स्टीवन्सन सब कुछ बता देता, परन्तु वह सब कुछ तो बिन्दू से राय करके ही बता सकता था। बिन्दू ने कह दिया, "मैं नहीं चाहती कि इस औरत को मेरे विषय में ठीक बात बताई जाए। मैं इस देश से, जहां हमारे सजातीय रहते हैं, दूर चली जाना चाहती हूं। मुझे भय है कि ये लोग मुझे मार डालेंगे।"

इस संभावना से स्टीवन्सन कांप उठा। बिन्दू उसको बहुत प्रिय हो गई थी। वह उसको अपनी जीवनसंगिनी ही समझ रहा था।

शिलांग के सम्मेलन के समाप्त होने से पूर्व बिन्दू ने घोषणा कर दी कि उसके रजोदर्शन नहीं हुआ। स्टीवन्सन ने कहा, "तो, तुम तो मां बननेवाली हो!"

"इसमें विचित्र बात तो कुछ नहीं।"

"मैं सोचता हूं कि इस बच्चे का बाप मैं हूंगा अथवा बड़ौज?"

"आप। मुझे यही विश्वास है।"

"देखें।"

"मैंने देखा है, पिछले रजोदर्शन के बाद बड़ौज मुझे छू नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाया।"

"तब ठीक है।"

इस सूचना पर स्टीवन्सन विचार करने लगा था कि यह बच्चा कहाँ पर होगा। सम्मेलन समाप्त होने तक उसने निश्चय कर लिया था कि वह अपना निवास-स्थान कहां बनाएगा। यूरोप में वह जाना नहीं चाहता था। उसको भय था कि कोई भी धनी-मानी उसकी पत्नी को बरगलाकर उससे पृथक् कर देगा। हिन्दुस्तान में किसी पहाड़ी स्थान पर रहने पर उसके अंग्रेज़ होने से वे लोग इससे भयभीत रहेंगे। यहां सरकार भी उसकी रक्षा करेगी। इसपर भी इस गर्भावस्था में वह बिन्दू को निर्भय रखने के लिए वहां से किसी दूर स्थान पर ले जाना चाहता था।

उसने निश्चय कर लिया कि वह पंजाब में कुल्लू की घाटी में अपना मकान बनाकर सुख से जीवन व्यतीत करेगा और यदि बिन्दू ने कुछ लड़के-लड़कियां पैदा कर दीं, तो वह आनन्द से उनकी शिक्षा-दीक्षा में जीवन व्यतीत कर देगा।

स्टीवन्सन ने हिन्दुस्तान का नक्शा खोल उंगली से कुल्लू की ओर संकेत कर बिन्दू को बताया, "मैं यहां जाकर रहूंगा और मेरी बिन्दू यहां बच्चे को जन्म देगी।"

"यहां से कितनी दूर होगा यह स्थान?"

"दो हज़ार मील।"

"तब तो ठीक है। कब चलेंगे?"

"दो दिन में हमारी मीटिंग समाप्त होगी। हम तुम्हारी सास को कलकत्ता कहकर जाएंगे और फिर इस दुनिया से विलोप हो जाएंगे।"

जिस दिन बिन्दू को कलकत्ता के लिए जाना था, उस दिन वह स्टीवन्सन के साथ मिसेज़ माइकल के निवास-स्थान पर गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टीवन्सन ने सोफी को बताया, "मैं इस लड़की के सम्मोहन में फंस गया हूं। अत: इसको लेकर मैं इंग्लैंड जा रहा हूं। वहां इससे विवाह कर लूंगा।"

"यह मान गई है?"

"नहीं, अभी नहीं ।"

"तुम भी उसके साथ वही उपाय प्रयुक्त क्यों नहीं करते, जो जनरल साहब ने सोना के साथ किया है?"

"मैं डरता हूं कि कहीं यह नाराज़ न हो जाए। मेरा ढंग दूसरा है।"

"आई विश यू गुड लक!"[1]

"थैंक यू। परन्तु तुम सोना को कुछ नहीं बताना। हमारे हिन्दुस्तान से जाने तक इसको अथवा इसके सजातियों को पता नहीं लगना चाहिए। मेरा तुमको यह बताने का प्रयोजन यह है कि कहीं इसका हसबेंड वहां लुमडिंग में आ गया, तो तुम उसको 'मिसगाइड' कर सको[2] ।

सोफी मुस्कराती हुई स्टीवन्सन को देखती रही।

बिन्दू सोना से मिली। दोनों मकान के बरामदे में बैठी बातें करती रहीं।

बिन्दू ने बताया, "मास्टर कह रहे थे कि मैं वापस जा सकती हूं। परन्तु मेरा जी दुनिया देखने को करता है। इस कारण मैंने साहब को कहा और वे मान गए हैं।"

"कब तक लौटोगी?"

"एक मास लग सकता है।"

"लुमडिंग आओ तो मिलना। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।"

1. ईश्वर करे तुम सफल होओ। 2. बहका सको ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है।"

सोना लुमडिंग गई तो उसका माइकल उसके लिए व्याकुल हो रहा था। सोना का पति धनिक भी विकल था। दोनों प्रेमियों में वह पिसने लगी । माइकल धनिक की व्याकुलता जानता था, परन्तु धनिक को माइकल के विषय में ज्ञात नहीं था।

सोना के व्यवहार से उसको सन्देह हो गया। सोना कहती रहती थी कि अब हमारी उम्र बड़ी हो गई है। इस कारण हमें संयम से रहना चाहिए। साथ ही वह कहती थी कि उसकी मालकिन उसको अपने पास रखना चाहती है।

धनिक को सन्देह हुआ तो वह एक दिन मध्याह्न के समय जनरल की कोठी पर जा पहुंचा। सोफी लॉन में पेड़ के नीचे कुर्सी पर बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। सोना घर के भीतर थी। धनिक सोफी की दृष्टि बचा कोठी में जाना चाहता था कि अर्दली ने उसको रोक दिया। धनिक ने पूछा, "क्यों, क्या बात है?"

"साहब भीतर हैं।"

"मैं अपनी बीवी से मिलना चाहता हूं।"

"उसको खबर कर देते हैं और वह तुम्हारे घर में तुमसे मिलने के लिए आ जाएगी।"

विवश धनिक कोठी से लौटने के लिए घूमा तो जनरल साहब कोठी से बाहर निकले उसने धनिक को नहीं देखा और बाहर खड़े अपने घोड़े पर सवार हो चला गया। धनिक वहीं खड़ा विचार कर रहा था कि अब तो वह भीतर जा सकता है। वह अभी विचार ही कर रहा था कि उसी द्वार से, जिस द्वार से माइकल निकला था, सोना भी बाहर निकली। अपने पति को वहां खड़ा देख वह झिझकी, फिर मन को दृढ़ कर उसके सामने आ खड़ी हुई। धनिक की आखों में रक्त उतर रहा था। सोना ने भयभीत स्वर में पूछ लिया, "कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आए हैं?"

"घर चलो, बताता हूं।"

"अभी मुझे मालकिन से काम है, थोड़ी देर में आती हूं।"

धनिक अपने क्रोध को रोक नहीं सका उसने सोना के मुख पर एक चपत दे मारी। सोना चक्कर खाकर भूमि पर जा गिरी। सोफी लॉन में बैठी देख रही थी। सोना गिरी तो धनिक ने उसको लातों से पीटना आरम्भ कर दिया। सोफी ने हल्ला कर दिया। कोठी पर पहरा देनेवाले सिपाहियों ने भागकर धनिक को पकड़ लिया और उसको सोफी के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

"क्यों पीट रहे हो इसको?" सोफी ने पूछा।

"यह बदकार हो गई है।"

"तुम्हारे पास क्या प्रमाण है इसका?"

"मेरा मन कहता है।"

"यह बात गलत है।"

"नहीं सरकार! आप झूठ कहती हैं।"

"देखो, यहां से भाग जाओ, नहीं तो गोली से उड़ा दिए जाओगे।"

"मैं इस औरत की हत्या करके मरूंगा। मेरे देवता का कथन असत्य नहीं हो सकता।"

"तुम पागल हो गए हो।" फिर सोफी ने सिपाहियों की ओर देखकर कहा, "ले जाओ इस आदमी को और जनरल साहब के सामने पेश करना।

सिपाही उसको हाथ-पांव बांधकर ले गए और वैसे ही 'गार्डरूम' में डाल दिया।

सोना अभी तक अपना सिर पकड़े बरामदे में बैठी थी। सोफी ने उसको उठाया और 'ड्राइंगरूम' में ले गई। वहां बैठाकर उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "तुम्हारे घरवाले को सन्देह हो गया है?"

"हां।"

"अब क्या करोगी?"

"वह मुझको पकड़कर मार डालेगा।"

"मैं यह नहीं पूछ रही। मैं तो पूछ रही हूं कि तुम जाना चाहती हो क्या?"

"सरकार! मरना कौन चाहेगा?"

"वह अगर वचन दे कि तुम्हें मारेगा नहीं, तब भी जाओगी कि नहीं?"

"वह वचन तोड़कर मार डालेगा।"

सोफी समझ गई कि औरत भयग्रस्त है और ठीक प्रकार से विचार नहीं कर सकती। इस कारण उसके चित्त को स्थिर करने के लिए अवसर देने के विचार से कहने लगी, "तुम अभी मेरे कमरे में ही काम करो। अपने घर अभी मत जाना।"

सोना के शरीर में दर्द हो रहा था। इसपर भी उठी और लंगड़ाती हुई सोफी के कमरे में चली गई।

सायंकाल चाय के समय माइकल आया। सोफी ने उसको पूर्ण घटना बता दी और यह भी बताया कि धनिक को 'गार्डरूम' में बन्द कर रखा हैं। जनरल तो एक योग्य आफिसर था। वह इस घटना का भावी प्रभाव भी विचारता रहा। फिर उसने कहा, "मैंने सोना के साथ सम्बन्ध के परिणामों पर विचार किया है। यदि मैं इसके आदमी को दंड देता हूं तो यह अपील करेगा, उसमें यह सोना वाली घटना बता देगा। मैं अपने अधिकारियों को इस बात का ज्ञान होने देना नहीं चाहता। यदि उसको गोली से मरवा डालूं तो भी हल्ला होगा और जांच होगी। कहीं यह बात पब्लिक में फैल गई तो देश-भर में आन्दोलन खड़ा हो जाएगा। हिन्दुस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में जनता की अवस्था विस्फोटक हो जाएगी। अगर इसको छोड़ देता हूं, तो यह नागजातीय कबीलों को लड़ाई पर तैयार कर देगा। इन जंगलों और पहाड़ों में लड़ाई करनी ठीक नहीं होगी।

"इस कारण मैं एक बात करने जा रहा हूं। एक झूठा बहाना बना इसके कबीले को पकड़ लेना चाहता हूं और उनको मिशनरियों के हवाले कर दूंगा।"

सोफी शिलांग में हुई कान्फ्रेंस में कुछ इसी प्रकार का निर्णय कराकर आई थी। वहां प्रस्ताव हुआ था कि नागजातीय कबीलों को सुसंस्कृत करने के लिए इनको ईसाई बनाने का यत्न किया जाए। इसके लिए इनमें रुपया बांटा जाए। इनकी औरतों को सभ्य बनाने के लिए उनमें कपड़े बांटे जाएं और इन बातों में सरकार से सहायता ली जाए।

यद्यपि इस निर्णय में सैनिक अभियान की चर्चा नहीं थी तो भी आवश्यकता पड़ने पर सैनिक सहायता का उल्लेख था।

सोफी मुख देखती रह गई। जब चाय आई तो माइकल ने कहा, "धनिक को बुलाओ।"

गार्ड गया और हाथ-पांव बांधे धनिक को वहां ले आया। जनरल ने उसके हाथ-पांव खोलने की आज्ञा दे दी। उसके बन्धन खोल दिए गए। जनरल ने उसको सामने रखे स्टूल पर बैठने के लिए कहा। धनिक बैठना नहीं चाहता था, किन्तु जनरल की डांट सुनकर बैठ गया। सोफी ने अपने पति के लिए चाय बनाई। माइकल ने वह प्याला धनिक को देते हुए कहा, "इसे पियो।"

धनिक इस सबका अभिप्राय समझ नहीं पा रहा था। विस्मय में वह मालिक और मालकिन का मुख देख रहा था। जनरल ने फिर डांटकर कहा, "चाय पियो, इससे तुम्हारा होश ठिकाने होगा।"

धनिक ने चाय ले ली और एक घूंट पीकर कहने लगा, "मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुट्टी दे दी जाए।"

"तुमको छुट्टी है।"

"मेरी पत्नी को मेरे साथ कर दिया जाए।"

"उसको भय है कि तुम उसको मार डालोगे। यह अपराध है। सरकार उसकी तुमसे रक्षा करना चाहती है।"

"मैं नहीं मारूंगा।"

"इसका विश्वास एक ही ढंग से हो सकता है कि तुम स्टोप्स-बस्ती में जाकर रहने लगो और तुम्हारी पत्नी वहां तुम्हारे साथ रहेगी।"

"वह तो ईसाइयों की बस्ती है। मुझको ईसाई होना पड़ेगा, नहीं तो वहां खाने-पीने को नहीं मिलेगा।"

"ऐसी कोई बात नहीं। तुम वहां जाकर काम कर सकते हो। तुमको वेतन मिलेगा।"

"मैं वहां जाने के लिए तैयार हूं। शर्त यह है कि मेरी पत्नी को मेरे साथ भेज दिया जाए।"

"तुम वहां जा सकते हो। तुम्हारी बीवी को सैनिकों की सुरक्षा में वहां भेज दिया जाएगा।"

"मेरे साथ क्यों नहीं?"

"तुमने आज उसके साथ जो कुछ व्यवहार किया है, उसके बाद तुमपर विश्वास नहीं किया जा सकता। तुम वहां चलो। जब तुम्हारा दिमाग ठीक हो जाएगा, तब सोना को भेज दिया जाएगा।"

धनिक विचार कर ही रहा था कि वह क्या करे। जनरल का कहना मान लेने के अतिरिक्त उसको कोई अन्य उपाय प्रतीत ही नहीं हो रहा था। उसने चाय पीनी आरम्भ कर दी और पीते-पीते अपनी योजना भी बना ली। उसने कहा, "सरकार! आप बड़े लोग हैं। मैं आपसे झगड़ा नहीं कर सकता। मैं आज स्टोप्सगंज चला जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं।

"सोना को आप लोग कब तक भेज देंगे?"

"तुम हमारी चिट्ठी लेकर वहां चले जाओ। दो-तीन दिन में सैनिकों के संरक्षण में हम सोना को भी भेज देंगे। तुम दोनों वहां मिल सकोगे और जब वहां के वार्डन को विश्वास हो जाएगा कि तुम दोनों में किसी प्रकार का मनमुटाव नहीं रहा, तब तुमको पृथक् मकान में रहने दिया जाएगा।"

धनिक मान गया और बिना सोना से मिले जाने के लिए तैयार हो गया। सैनिक गार्ड उसको अपने मकान पर ले गई और जो कुछ वह वहां से उठाकर ले जाना चाहता था, उसको ले जाने दिया गया।

जब धनिक अपना सामान लेने चला गया तो सोफी ने कहा, "यह आपने क्या कर दिया? अपनी बला स्टोप्सगंज वालों के सिर पर डाल दी।"

"मुझे विश्यास है कि वह वहां नहीं जाएगा। यदि गया भी तो सोना वहां नहीं जएगी।"

सोफी देख रही थी कि उसका पति अभी इस जंगली औरत के सम्मोहन में फंसा हुआ है। वह जानना चाहती थी कि सोना क्या चाहती है। इस कारण वह चाय छोड़ सोना से बात करने कोठी के भीतर चली गई।

अपने कपड़ों और नकदी को गठरी में बांध धनिक कमांडिंग जनरल की कोठी से निकल गया। वह लुमडिंग की सड़क के तट पर खड़ा होकर विचार करने लगा कि किधर जाए। उसका चित्त ईसाई बस्ती में जाने के लिए नहीं कर रहा था। वह समझता था कि वहां जाकर वह अपनी पत्नी तक पहुंच भी नहीं सकेगा। उससे अनिष्ठा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वान होने का बदला लेने की तो बात ही दुर रह जाएगी; साथ ही वह किसी ऐसे काम पर लगा दिया जाएगा, जिससे एक-दो वर्ष में ही उसकी मृत्यु हो जाएगी।

उसके मन में अपनी बस्ती की ओर जाने का विचार उत्पन्न हुआ था। वहां जाकर भी वह जीवित बच सकेगा क्या?—उसको इसकी आशा नहीं थी। उसका विचार था कि वहां साधू का सम्बन्धी सन्त पुरोहित होगा और वह साधू की हत्या का बदला लेने का यत्न करेगा।

इन दो स्थानों के अतिरिक्त अन्य कोई स्थान नहीं था, जहां उसके जाने की सम्भावना हो सकती थी। सबसे बड़ी बात सोना की थी। उसको विश्वास हो गया था कि उसकी पत्नी अनिष्ठावान है। इसका दण्ड उसकी हत्या के अतिरिक्त उसकी समझ में अन्य कुछ नहीं आता था।

जब वह कमांडिंग जरनल की कोठी में रहता था तो उसकी मित्रता कोठी के नौकर और कुछ हिन्दुस्तानी सिपाहियों से हो गई थी। उनकी बातों से वह कुछ इस प्रकार समझ पाया था कि सोफी भी एक अनिष्ठावान औरत है। इतना तो वह स्वयं देख चुका था कि युवक सिपाहियों के साथ बैठ शराब पिया करती थी और घंटों तक उनके साथ नाचा भी करती थी। इसपर भी उसने प्रत्यक्ष कुछ नहीं देखा था। अपनी पत्नी के विषय में आंखों-देखी बात तो वह कुछ नहीं जानता था । इसपर भी उसका मन कहता था कि उसकी पत्नी बदकार हो गई है। उसके संगी-साथी सोना के विषय में सन्देह प्रकट किया करते थे। वह मन में विचार किया करता था कि संगी-साथी तो साहब की बीवी के विषय में भी कहा करते थे।

इस विचार का निष्कर्ष था कि अपनी पत्नी के विषय में उसका सन्देह गलत भी हो सकता है। यदि वह बदकार नहीं, तो उसने उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटकर अच्छा नहीं किया। यों तो कबीले में पति पत्नियों को पीटा करते थे और वहां इसको साधारण बात ही समझा जाता था, परन्तु उसने तो सोना को कभी पीटा नहीं था।

इस प्रकार के परस्पर-विरोधी भावों में वह मन में निर्णय नहीं कर सका था कि ईसाई बस्ती में जाए अथवा नहीं । वहां सड़क के किनारे खड़े:खड़े उसको कुछ ऐसा प्रतीत होने लगा कि जनरल की कोठी का मुसलमान नौकर उसके सामने दो-तीन बार आ-जा चुका है, और उसके सम्मुख निकलते समय एक अर्थपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखता भी था। उसको सन्देह होने लगा कि साहब की ओर से वह उसको देखने के लिए भेजा गया है, जिससे कि वह बता सके कि वह बस्ती की ओर गया अथवा नहीं। इस विचार के आते ही वह वहां से चल पड़ा।

कुछ दूर जाकर वह छावनी की हिन्दुस्तानी बस्ती की ओर चल पड़ा। वहां जाकर एक गली में घुस, वह पीछे मुड़कर देखने लगा कि वह मुसलमान उसका पीछा कर रहा है अथवा नहीं। उसको वह दिखाई नहीं दिया। इससे वह वहां से ईसाई बस्ती की ओर प्रस्थान कर जंगल में जाकर विचार करना चाहता था कि क्या करे। वह अभी चलना ही चाहता था कि किसीने पीछे से उसके कन्धे पर हाथ रख उसको खड़ा कर दिया। वह चौंक उठा और घूमकर हाथ रखनेवाले की ओर देखने लगा। उसने पहचान लिया, यह लीमा का लड़का चीतू था। उसने कहा, "अरे चीतू! यहां क्या कर रहे हो?"

"बहिन से मिलने आया था।"

"मिली फिर?"

"हां।"

"कहां रहती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहीं एक मकान में। उसका पति, जिसके साथ वह भागकर आई थी, एक सैनिक के साथ लड़ने में मारा गया था। दोनों शराब पिए हुए थे। लुग्गी ने एक असमी से विवाह कर लिया है। उसकी दो सन्तानें भी हैं और अब वह उसको छोड़कर भाग गया है। बहिन बहुत दुःखी है। मैं उसको वापस चलने के लिए कह रहा हूं। अभी तो वह मानी नहीं। आशा है मान जाएगी।···

"लेकिन चौधरी तुम कहां हो?"

"मैं और सोना यहां एक अंग्रेज़ फौजी अफसर की नौकरी में थे। सोना उसकी पत्नी की नौकरी करती थी। मुझे सोना के चरित्र पर सन्देह हुआ तो क्रोध में मैंने उसको मार डालने का यत्न किया। इसपर मुझे कोठी से निकाल दिया गया है। सोना अभी वहीं है।"

"जब कहां जा रहे हो?"

"मुझे आज्ञा हुई है कि मैं नदी पार क्रिस्तानों की बस्ती में चला जाऊं। जब मैं वहां चला जाऊंगा तो फिर वे मेरी पत्नी को वहां भेज देंगे। और यदि उसको विश्वास हो गया कि में अब उसको मारूंगा नहीं, तो मेरी पत्नी मुझको मिल जाएगी।"

"तो तुम ईसाइयों की बस्ती में जा रहे हो?"

"मैं अभी निश्चय नहीं कर पाया हूं।"

"चलो, लुग्गी के घर चलो । वहां बैठकर विचार कर लेंगे। मैं तो समझता हूं कि तुम्हें वहां चले जाना चाहिए और सोना के मन में विश्वास उत्पन्न कर उसको लेकर अपनी बस्ती में आ जाना चाहिए।"

"परन्तु अब हम अपनी बस्ती में रह सकेंगे क्या?"

"हां, क्यों नहीं? अब मैं वहां का चौधरी हूं और पंचायत को ही मैंने पुरोहित बनवा दिया है।"

"अर्थात् भगवान का आदेश पंचायत बताती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, सन्तू वहां से भाग गया है। वह और साधू दोनों बदमाश थे। उनकी बदमाशी पकड़ी गई थी।"

चीतू के साथ धनिक लुग्गी के घर पहुंचा। चौधरी को देख लुग्गी चकित रह गई। लुग्गी ने बताया, "एक दिन बाज़ार में बड़ौज मिला था। उसकी पत्नी बिन्दू को एक पादरी भगाकर ले गया है और वह उसकी खोज में गया है।"

धनिक लुग्गी की बात सुन विस्मय में मुख देखता रह गया। फिर उसने बताया, "बिन्दू शिलांग में सोना से मिली थी। सोना को उसके विषय में संदेह हुआ था, किन्तु बिन्दू से पूछने पर उसने इनकार कर दिया। उसने बताया था कि वह साहब की नौकरी करती है। साहब भला आदमी है और वह उसके साथ कलकत्ता गई है।

"बड़ौज तो उसी दिन यहां से चला गया था। उसने बताया था कि वह शिलांग जाना चाहता है। उसके पास कुछ था नहीं। मैंने उसे दस रुपये दिए थे।"

धनिक ने कह दिया, "मुझे तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी नागजाति का स्त्रीधन ये ईसाई छीनकर ले जाएंगे।"

चीतू का कहना था, "हम सब कबीलेवाले एक-दूसरे से बैर रखते हैं। एक-दूसरे की सहायता करने की हमारी रुचि नहीं है। साथ ही, हममें ऐसे बहुत हैं जो मूर्ख हैं और हमारे कबीलों के पुरोहित जनसाधारण को भड़काते रहते हैं। उनको एक-दूसरे से लड़ाते रहते हैं और इस प्रकार अपना उल्लू सीधा करते हैं।"

धनिक इन बातों को समझ नहीं सकता था। वह विस्मय में बितर-बितर देख रहा था। चीतू ने अपनी बात समझाते हुए कहा, "मैंने नदी के इस पार के कबीलेवालों की एक बहुत बड़ी पंचायत बुलाई है। अगली पूर्णिमा के दिन वह हमारी बस्ती में होगी। साधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा सन्तू के रहते तो यह हो नहीं सकती थी।

"मैं चाहता हूं कि अब सब कबीलेवाले परस्पर लड़ना छोड़ दें और आपस में एक-दूसरे की सहायता करें, तो इन नगरवालों की भांति हम धनी और शक्तिशाली हो सकते हैं।"

चौधरी इन नीति की बातों को समझ नहीं सकता था। उसने कहा, "क्या इससे हम अंग्रेजों और क्रिस्तानों से लड़कर जीत सकेंगे?"

"नहीं, लड़ने की आवश्यकता नहीं। आपस में नहीं लड़ेंगे तो हम जहां चाहेंगे, जा सकेंगे और व्यापार कर सकेंगे।"

यह समझ कि चीतू जो कहता है ठीक भी हो सकता है, धनिक चुप रहा। उसने अपने विषय में बात चला दी और पूछने लगा, "क्या सोना छूट सकती है?"

"तुम उसको घर पर रखोगे?"

"मैं उसको मार डालूंगा। वह अनिष्ठावान है।"

"तो फिर वह तुम्हारे पास क्यों आएगी?"

चौधरी इस बात को समझ नहीं सका। उसने कहा, "वह मेरी पत्नी हैं। मैं उसको मार सकता हूं। ऐसा मैंने देवता के सामने वचन दिया है।"

"किस देवता के सामने?"

"विवाह के समय अपनी बस्ती के देवता के सामने।"

"देवता तो कुछ कहता ही नहीं था। यह तो साधू पुरोहित कहलाता था। अब जब से पंचायत पुरोहित बनी है, देवता ऐसी कोई बात नहीं कहता।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि वह रूठ गया है।"

"नहीं चौधरी, वह वहीं पर है। हमने उसका मन्दिर पक्का बनवा दिया है। अन्तर केवल इतना है कि साधू और सन्तू के स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हम हैं और हम सब निर्णय सोच-विचारकर किया करते हैं।

"अभी हमने दो लड़कियों का विवाह नन्दी कबीलेवालों के लड़कों से स्वीकार किया है। देवता ने आपत्ति नहीं की। लड़कियां भी प्रसन्न हैं और उस कबीले से हमारी मित्रता हो गई है। हमारी पंचायतें इकट्ठी बैठकर विचार करती हैं।"

"यह सब तुमने किया है?"

"यह सब भगवान ने किया है। मैं जब उसका नाम लेकर बात कहता हूं तो पंच मान जाते हैं। और इस प्रकार कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं होता।"

उत्साहित हो धनिक ने कह दिया, "मैं अपनी बस्ती में चलूंगा।"'

"यही तो कह रहा हूं।"

"पर मैं विचार करता हूं कि सोना का क्या होगा?"

"तुम पंचायत के सामने वचन दो कि तुम उसको प्यार से रखोगे शोर मारोगे नहीं, तो मैं उसको छुड़ाने का यत्न कर सकता हूं।"

"कैसे करोगे?"

"लुम्डिंग में एक वकील है। उससे कहकर लिखा-पढ़ी करबाऊंगा। वह गांधी बाबा को माननेवाला है। वह ही ये सब बातें मुझे बताता है।"

दो दिन तक उस वकील से बातचीत होती रही। वकील ने जनरल से बात की और फिर सोना से बात की। अन्त में उसने बताया, "सोना ने सौगन्धपूर्वक बताया है कि वह धनिक के पास रहना नहीं चाहती है। वह मिसेज़ माइकल की नौकरी में प्रसन्न है। यदि उसका पति धनिक उसको न मारने का वचन दे तो उसको पुनः नौकर रखा जा सकता है। अब वह जंगल में नहीं जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील ने बताया कि कानून धनिक की सहायता नहीं कर सकता। इसपर धनिक, चीतू और लुग्गी ने जंगल में जाने का निर्णय कर लिया। उनका विचार इस बात को आगामी पूर्णिमा के दिन होनेवाली बड़ी पंचायत में रखने का था।

धनिक और लुग्गी को बस्ती में वापस लेने में चीतू को किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई। पंचायत वालों को उसकी सूझ-बूझ पर विश्वास था। चीतू ने कबीले के व्यापार के लिए एक कबीले की दुकान खोल दी थी! उसको एक घोड़ा-ठेला ले दिया था, जिसपर माल लादकर कभी लुमडिंग और कभी सिलचर तक ले जाता था। अब कबीले के सब परिवारों को नगरों में जाने की अवश्यकता नहीं थी। वे अपनी खालें, हड्डियां तथा जड़ी-बूटियां इस दुकान में दे देते थे। वे माल को लादकर नगरों को ले जाते थे और रुपया वसूल कर, जिसका जितना होता था, दे देते थे।

इससे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधर रही थी। इस कबीले की सुधरी हालत को देखकर ही दूसरे कबीले के लोग इनकी पंचायत में आने के लिए तैयार हुए थे।

इसपर भी चीतू की पूर्ण बुद्धि और चतुराई कबीलेवालों को यह समझाने में सफल नहीं हुई कि सोना और बिन्दू के लिए झगड़ा न किया जाए। सबके सब स्त्री-पुरुष अपने कबीले की स्त्रियों को वापस लाने के लिए लड़ मरने की बात करते थे।

पंचायत ने निर्णय दिया कि अंग्रेज़ी सरकार को लिखा जाए कि इन दोनों औरतों को वापस किया जाए। यदि वे वापस न करे तो एक दिन दो गोरी औरतों को चुरा लिया जाए और जब तक सोना और बिन्दू वापस नहीं कर दी जातीं, तब तक उन औरतों को यहां रखा जाए। फिर भी कुछ न हो, तो उनसे दो युवकों का, जो उनको पसन्द करें, विवाह कर दिया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचायत के इस निर्णय को चीतू पसन्द नहीं करता था, परन्तु जानता था कि इसपर यदि उसने अपनी रज़ामन्दी प्रकट न की तो उसको चौधरी पद से हटा दिया जाएगा। इस कारण वह चुप रहा। इस निर्णय को कराने में धनिक का बहुत बड़ा हाथ था।

चीतू ने एक बात कर दी। उसने कहा कि सरकार से झगड़ा करने से पूर्व हमें अन्य कबीले वालों को अपना साथी बना लेना चाहिए। इस कारण कुछ भी कार्यवाही करने से पूर्व हमें सब कबीलेवालों की एक पंचायत बुलाकर उसमें निर्णय कर लेना चाहिए।

लुमडिंग के वकील निर्मलचन्द भट्टाचार्य के जनरल माइकल से बात करने के बाद माइकल ने समझा कि सोना के विषय की बात अब टल गई है। उसने अपनी पहली योजनानुसार धनिक को ईसाइयों की बस्ती में भेजना आवश्यक नहीं समझा। इस कारण उसने उसके जंगल में लौट जाने में कोई आपत्ति नहीं की। इसपर भी सोना सोफी से कहती रहती थी कि नागजातीय उसको मार डालने का यत्न करते रहेंगे। माइकल और सोफी इसको सोना के मन का केवल भय ही मानते थे।

धनिक को लुमडिंग से गए दो मास हो गए थे कि सेना के एक कर्नल लौंगवुड स्ट्रिकी की पत्नी और युवा लड़की लापता हो गई। कर्नल लौंगवुड ने रिपोर्ट की कि उसकी पत्नी मिसेज स्ट्रिकी और लड़की सैल स्ट्रिकी अंधेरा होने के बाद बाज़ार से कुछ सामान खरीदकर आ रही थी कि कुछ लोग उनको पकड़कर उठा ले गए। सड़क पर खड़े कुछ लोगों ने उनको छुड़ाने का यत्न किया, किन्तु उन उठानेवालों ने अपने भाले-बरछे निकाल लिए। उन्होंने दो को बुरी तरह घायल कर दिया और इस प्रकार वे उनको ले जाने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल हो गए।

इस रिपोर्ट पर कमांडिंग जनरल ने आज्ञा दे दी कि स्काउट जंगलों में जाकर औरतों का पता करें। तीन सौ स्काउट इस काम पर लगा दिए गए। अपने हेडक्वार्टर को जनरल ने औरतों के अपहरण की सूचना भेज दी और नियमित सेना को उनके ढूंढ़ने के लिए भेजने की स्वीकृति मांगी।

अभी हेडक्वार्टर से कोई सूचना नहीं आई थी कि जंगल में गए हुए स्काउट ने आकर बताया कि महानदी के किनारे पचास सहस्र नागजातीय कबीलों के लोग अपने अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित एकत्रित हो रहे हैं और दोनों अंग्रेज़ औरतों को वहां बन्दी बनाकर रखा हुआ है।

इस सूचना के मिलने पर इनको छुड़ाने के लिए जनरल ने सैनिक अभियान की स्वीकृति मांगी। हिन्दुस्तान में ब्रिटिश सरकार की पूर्ण मशीनरी क्रियाशील हो गई। एक ओर सैनिक अभियान के लिए माइकल को कमाण्ड मिला और दूसरी ओर वाइसराय के एक सचिव सर भूपेन्द्रनाथ को नागाओं को समझाने के लिए उनके पास भेज दिया गया।

चीतू ने महापंचायत बुलाई, जिसमें तीन सौ के लगभग कबीलों के पंच एकत्रित हो गए। पंचायत पूर्णिमा के दिन बैठी और कई बातों के विषय में चीतू की सम्मति से निर्णय हुए। परन्तु जब सोना और बिन्दू का प्रश्न उपस्थित हुआ तो चीतू की सम्मति को स्वीकार नहीं किया गया। यों तो प्रायः सब कबीलों की लड़कियां और लड़के ईसाई बनाने के लिए बरगलाकर ले जाए गए थे, और अब भी समय-समय पर वह सब होता रहता था, परन्तु सोना और बिन्दू की बात नई-नई थी। अतः इनको छुड़ाने के लिए एक युद्ध-समिति बना दी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस युद्ध-समिति ने अंग्रेज़ सरकार और ईसाइयों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर युद्ध के योग्य सब युवकों को एकत्रित कर लिया और दूसरी ओर दस मनचले युवकों को दो अंग्रेज़ औरतों के अपहरण के लिए भेज दिया।

युद्ध-समिति का विचार था कि इस प्रकार वे अपनी औरतों को छुड़ाने में सफल हो जाएंगे।

मिसेज़ स्ट्रिकी और मिस स्ट्रिकी के अपहरण के दो सप्ताह के भीतर ही सर भूपेन्द्र एक सुदृढ़ सैनिक टुकड़ी के साथ महानदी के तट पर नाग सैनिकों के एकत्रित होने के स्थान से पांच मील के अन्तर पर पहुंच, डेरा डालकर बैठ गया। अगले दिन उसने दो स्काउटों के हाथ नागाओं के पास सन्देश भेजा कि सरकारी सचिव उनसे मिलना चाहते हैं।

नागा लोगों ने चीतू को इस कार्य पर नियुक्त कर दिया और चीतू अपने शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित, नर-मुण्डों की माला धारण किए अपने बीस सहायकों के साथ सचिव के शिविर पर जा पहुंचा।

सबको शिविर में प्रविष्ट होने दिया, किन्तु कुछ दूर जाकर केवल चीतू और सौतकी को ही सचिव के सम्मुख जाने की स्वीकृति मिली। सौतकी प्रोढ़ावस्था का व्यक्ति था। वह चीतू को युद्ध-समिति की राय से सूचित करने के लिए भेजा गया था।

सचिव ने चीतू से पूछा, "तुम मुण्डमाल धारण करके क्यों आए हो?"

चीतू ने कहा, "यह हमारा जातीय पहरावा है। कोई व्यक्ति तब तक नेता नहीं बन सकता जब तक कि वह कम से कम पांच शत्रुओं को मारकर उनके मुण्डों की माला न पहन ले।"

"यह तो बहुत भयंकर है।"

"श्रीमानजी, नहीं। बन्दूक से तो शत्रु के मारने में बहादुरी प्रकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होती। हाथों-हाथ युद्ध में बहादुरी प्रकट होती है। दोनों ओर से एक-दूसरे को मारने की स्वीकृति होती है। हम इसको भयंकर बात नहीं मानते। भयंकर बात तो तब होती है जब सौ गज़ दूर खड़े शत्रु को गोली मारकर मारा जाता है।"

"और उसके हाथ में भी बन्दूक हो तो?"

"दोनों निर्दयी और भीरु कहलाएंगे।"

सचिव हंस पड़ा। उसने कहा, "अच्छा इस बात पर फिर विचार कर लेंगे। पहले यह बताओ कि तुमने कोई अंग्रेज़ औरत कैद कर रखी है?"

"हां, दो हैं। परन्तु हमने उनको मान के साथ और सब प्रकार के आराम में रखा हुआ है।"

"उनको छोड़ दो।"

"उनको तो हम छोड़ देंगे; किन्तु हमारी दो औरतों को, जिनका विवाह हो चुका है, सेना और ईसाइयों ने बलपूर्वक पकड़कर रखा हुआ है।"

"यह तो हमको पता नहीं। उसका पूर्ण वृत्तान्त बताओ तो जांच-पड़ताल करेंगे।"

"एक का नाम सोना है। उसको लुमडिंग के कमांडिंग जनरल की बीवी ने छिपाकर रखा हुआ है। दूसरी का नाम बिन्दू है। वह स्टोप्सगंज के मास्टर स्टीवन्सन के पास है।"

"यह हम जांच करेंगे और यदि यह बात ठीक हुई तो उन औरतों को छुड़ा दिया जाएगा। तुम इन औरतों को छोड़ दो।"

"हमारी औरतों के छूटकर आने पर ही हम उनको छोड़ेंगे।"

"जानते हो यहां किसका राज्य है?"

"यहां पर हमारा राज्य है। यह नागों का देश है। आदिकाल से हम यहां के राजा हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और अंग्रेज़ यहां पर क्या हैं?"

"असम देश के वे कुछ हो सकते हैं, किन्तु नागादेश के वे कुछ नहीं हैं।"

"उनकी शक्ति को जानते हो?"

"जानता हूं। इसपर भी हमारा एक-एक आदमी मर जाएगा, किन्तु अपनी औरतों को दूसरे के अधिकार में नहीं रहने देगा।"

"देखो मैं वचन देता हूं कि तुम्हारी औरतें, यदि वे आना चाहेंगी तो आ जाएंगी। तुम इन निरपराध औरतों को छोड़ दो।"

"आपके वचन की बात मैं अपनी पंचायत में रखूंगा। यदि पंचायत को विश्वास हो गया तो हम उनको छोड़ देंगे ।"

"सब पंचायत को यहां ले आओ। मैं उनको समझा दूंगा। देखो, यदि अड़तालीस घंटे के अन्दर ये औरतें नहीं छूटीं तो फिर युद्ध होगा और तुम्हारे कबीलेवाले सब मार डाले जाएंगे। सुना है, पचास हज़ार आदमी एकत्र हुए हैं, वे सब चुटकियों में समाप्त कर दिए जाएंगे। पचास हज़ार औरतें विधवा हो जाएंगी। वे सबकी सब पकड़कर क्रिस्तानों के हवाले कर दी जाएंगी।"

चीतू इसको सुनकर कांप उठा। इसपर भी उसने कहा, "हम मरने से नहीं डरते। हां, औरतों की बात अवश्य है। मगर हमारे स्वर्ग में रहनेवाले देवता उनकी रक्षा करेंगे। इसपर भी मैं समझता हूं कि हमारी औरतों को ला दिया जाए। हम आपकी औरतें छोड़ देंगे।"

इस युवक की बात से सचिव प्रभावित हुआ था। उसने कहा, "देखो, सरपंच! यह रक्तपात मत कराओ । जैसे तुम्हारी औरतें तुमको प्यारी हैं वैसे ही अंग्रेज़ औरतें अंग्रेज़ों की हैं। इसलिए लड़ाई से नहीं, सुलह से काम होना चाहिए। तुम यहां पंचायत को बुलाओ। मैं उन औरतों की खोज करता हूं। जहां भी मिलेंगी, लाने का यत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूंगा यदि उन्होंने तुम्हारे पास जाना स्वीकार किया तो तुम्हें मिल जाएंगी।"

दो दिन की अवधि दी गई। सचिव के शिविर में पंचायत होने का निर्णय हुआ। सचिव ने तीव्रगामी अश्वों पर सोना और बिन्दू को लाने के लिए सैनिक भेजे। विवश जनरल को सोना को शिविर में भेजना पड़ा। बिन्दू का पूर्ण इतिहास कि वह अपने प्रेमी के साथ इंग्लैंड गई है, उसके पास लिखा हुआ आ गया।

चीतू जब अपने सजातियों की पंचायत में आया तो उसको अपने साथियों को समझाने में बहुत कठिनाई अनुभव हुई। पंचों का कहना था कि भवानी उनके पक्ष में है। अंग्रेज़ उनकी शक्ति देख डर गया है। आज रात ही आक्रमण कर देना चाहिए।

चीतू ने बताया, "मैं वचन दे आया हूं कि दो दिन के बाद पुनः वार्तालाप होगा। तब तक सचिव भी नाग औरतों को लाने का यत्न करेगा।"

पंचों ने कहा, "उसके जतन का विश्वास नहीं किया जा सकता। उसने यह दो दिन की अवधि तो अपनी सेना को यहां एकत्रित करने के लिए मांगी है। अभी तो अंग्रेज़ी सेना आई नहीं, किन्तु हमारी सेना लड़ने के लिए तैयार खड़ी है।"

"परन्तु इस समय आक्रमण से क्या अन्तिम विजय हो जाएगी? हम इस सचिव को मार देंगे और उसके साथ दो-तीन सौ सैनिकों को मार पाएंगे। परन्तु इतने से ही विजय तो नहीं मिल जाएगी। न ही इससे हमारी स्त्रियां छूट जाएंगी। फिर तो अंग्रेज़ी मुख्य सेना आ जाएगी। उनके पास बहुत बढ़िया शस्त्रास्त्र हैं। अतः हमारी पचास सहस्र नाग स्त्रियां विधवा हो जाएंगी, इसपर भी लाभ कुछ नहीं होगा।"

परन्तु पंच मद्य पिए हुए थे, और अपनी अपूर्व सैनिक शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर उन्हें भरोसा था। चीतू की बात उनकी समझ में नहीं आई। इसपर भी चीतू ने कह दिया, "हमें अपने वचन का पालन करना चाहिए। दो दिन की प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए। हमको एक महान देश के सचिव का विश्वास करना चाहिए।"

वचन की बात सुन पंच चुप हो गए। इसपर भी सबके मन में यह भय समाया हुआ था कि उनका नेता भूल कर आया है। घंटे-घंटे बाद समाचार आते थे कि तोपों और बन्दूकों के साथ अंग्रेज़-सेना उनकी ओर बढ़ती चली आ रही है।

अगले दिन पंचायत की बैठक हुई और उसमें चीतू को बेठने नहीं दिया गया। यथार्थ में चीतू पंचायत का बन्दी बन गया था। आज की पंचायत ने निर्णय कर दिया कि युद्ध अवश्यम्भावी है, अत: युद्ध की तैयारी कर दी जाए।

पचास सहस्त्र सैनिक रात-भर युद्ध के लिए शृंगार करते रहे। स्त्रियां एवं बच्चों को दूर जंगल में भेज दिया गया। अंग्रेज़ औरतों को भी उनके साथ कर दिया गया। सबने भोजन किया, साहस बांधने के लिए शराब पी और पंक्तिबद्ध होकर आक्रमण के लिए आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे।

इस दिन सूर्य निकलते ही समाचार आया कि उनका पूर्ण शिविर अंग्रेज़ सैनिकों से घिरा हुआ है। इस समाचार से तो नाग-पंचायत आग-बबूला हो गई। चीतू को पंचायत में उपस्थित किया गया और उसपर आरोप लगाया गया कि उसने सचिव को वचन देकर धोखा खाया है। वह शत्रु से मिला है। चीतू ने प्रश्न किया, "इसका प्रमाण क्या है?"

"फिरंगी सेना ने हमारे शिविर को घेर लिया।"

"उन्हें ऐसा न करने देते।"

"उनकी सेना अधिक है, हम रोक नहीं सकते थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सचिव को सन्देश भिजवाना था कि वह ऐसा न कराए।"

"हमारी वह सुनता नहीं।"

"परन्तु अभी युद्ध आरम्भ नहीं हुआ। उसको कह दिया जाए कि अंग्रेज़ औरतें तभी वापस की जाएंगी जब सैनिक घेरा उठा लिया जाएगा। अन्यथा यहां युद्ध होते ही उनकी जंगल में हत्या कर दी जाएगी।"

"तुमने हमको फंसा दिया है।"

"यह बात गलत है। हमारी शक्ति कम है। इस कारण हम फंस गए हैं। हमको अभी नीति से काम लेना चाहिए। झगड़े से हमारी विजय नहीं हो सकती।"

इसी समय सचिव का सन्देश आया कि दो नाग औरतों में से एक मिल गई है। वह इस समय सचिव के शिविर में विद्यमान है। दूसरी स्त्री के विषय में यह पता चला है कि वह स्वेच्छा से इंग्लैंड चली गई है। इसपर भी उसको वापस बुलाकर लाने में एक मास लग जाएगा। हम वचन देते हैं कि उसको भी वापस कर देंगे। अब पंचायत को अंग्रेज़ औरतों को यहां भेज देना चाहिए। और युद्ध नहीं होना चाहिए।

इस समाचार पर चीतू ने सचिव के कथनानुसार करने के लिए कहा। एक तो अंग्रेज़ औरतें जंगल में भेज दी गई थीं। दूसरे सचिव के कहने पर कि सोना को भेज दिया जाएगा और बिन्दू को विलायत से लाया जाएगा, किसीको विश्वास नहीं आया। केवल चीतू ही था जो सचिव की बात पर विश्वास करता था।

पंचायत ने सचिव के कथन का यह उत्तर भेजा कि एक घंटे के भीतर घेरा उठा लिया जाए, तभी स्त्रियों के विषय पर बातचीत की जा सकती है। इस उत्तर पर पुनः सचिव ने आग्रह किया कि पहला सरपंच आ जाए और उसको सोना नाम की स्त्री दिखा दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाएगी और उसको वह औरत दे दी जाएगी। युद्ध की आवश्यकता नहीं रहेगी।

इसके उत्तर में चीतू को मृत्युदण्ड दे दिया गया और उसका सिर काटकर एक भाले की नोक पर लगा सचिव के पास भेज दिया गया। चीतू के सिर को देख सचिव को क्रोध चढ़ आया। अभी अंग्रेज़ी सेना आक्रमण करने अथवा सोना को भेजने के विषय पर विचार ही कर रही थी कि नाग सैनिकों ने अपना अभियान आरम्भ कर दिया।

इसपर तोपें दागने की आज्ञा दे दी गई, और दो घंटे में ही पचास सहस्त्र सैनिक परास्त कर दिए गए। अधिकांश मारे गए। घायलों एवं अवशिष्ट नागों को बन्दी बना लिया गया।

जनरल माइकल तो किसी प्रकार के वार्तालाप में विश्वास नहीं रखता था, उसका कहना था कि यह विद्रोह किया गया है और इसको शक्ति से कुचल देना चाहिए। वार्तालाप तो भारत सरकार चाहती थी। सन् 1921-22 के स्वराज्य-आन्दोलन को सरकार ने दबाया था और वह नहीं चाहती थी कि इस विशाल हत्या से वह स्वराज्य-आन्दोलन इन वनवासियों में घुस जाए और वे देश के नेता गांधी के अनुयायी बन जाएं।

सैनिक विरोधी होने पर भी वार्तालाप हुआ। परन्तु सैनिक दृष्टि से तैयारी को सचिव महोदय रोक नहीं सके। सेना, जनरल की आज्ञा से युद्ध को आवश्यक समझ, अपनी गतिविधि को चलाती रही। सचिव को जब पता चला कि दो नाग औरतें इधर हैं तो उसने उनको शिविर में लाने की आज्ञा दे दी।

सोना को यह विदित नहीं था कि नागजातीय बहुत बड़ी संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में एकत्रित हो, युद्ध की घोषणा कर चुके हैं। यह बात कि युद्ध में वह ही कारण है, उसको तो क्या, मिस्टर तथा मिसेज़ माइकल को भी विदित नहीं था। जब सरकार के सचिव की आज्ञा हुई कि सोना नाम की औरत को उसके सामने उपस्थित कर दिया जाए, तो जनरल माइकल ने सोना को बुलाकर पूछा, "तुम अपने कबीले में जाना चाहती हो?"

"नहीं।"

"भारत सरकार को यह कहा गया है कि तुम यहां बलपूर्वक रोकी गई हो।"

"यह गलत है।"

"तुम्हें हमारे अफसर के सामने जाकर यह बात कहनी होगी।"

"कह दूगी।"

"तुमको यहां लुमडिंग में सोफी की सेवा में रहने का हठ करना होगा।"

"कर दूंगी।"

इस प्रकार सिखा-पढ़ाकर सोना को सचिव के शिविर में पहुंचा दिया गया। पंचायत के साथ वार्तालाप के लिए निश्चित दिन प्रातः-काल ही सोना सचिव के सम्मुख उपस्थित कर दी गई। सचिव ने एक प्रौढ़ावस्था की सुन्दर औरत को सामने खड़ा देखा तो चकित रह गया। उसको नाग सरपंच का यह कहना सत्य प्रतीत हुआ कि अंग्रेज़ अधिकारियों ने उनकी औरतों को पकड़ रखा है। इसपर भी उसने पूछ लिया, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"सोना।"

"लुमडिंग में क्या करती हो?"

"जनरल साहब की पत्नी की नौकरी करती हूं।"

"तुमको वहां रहने पर किसीने विवश कर रखा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मैं अपनी इच्छा से वहां नौकरी कर रही हूं। मेरा घर-वाला मुझको मार देना चाहता था। इस कारण मैं उसके पास जाना नहीं चाहती।"

इसपर सचिव महोदय ने बताया, "देखो, तुम्हारे लिए पचास हज़ार नाग लड़ने-मरने के लिए तैयार हो गए हैं। वे तुमको वापस मांग रहे हैं। तुमको वापस करने के लिए वे तुम्हारे बदले में दो अंग्रेज़ औरतों को पकड़कर ले गए हैं और उनको कैद कर रखा है। यदि तुम वापस नहीं जाती तो युद्ध होगा। युद्ध में अंग्रेज़ी सेना की विजय होगी। तोपों, बन्दूकों और हवाई जहाज़ के मुकाबले में नाग सैनिकों के बरछे, भाले और तीर कुछ भी काम नहीं कर सकेंगे। हज़ारों नाग मारे जाएंगे, तुम्हारी जाति की हज़ारों औरतें विधवा हो जाएंगी। और फिर वे नगरों में जाकर पेशा करेंगी। अथवा क्रिस्तान होने के लिए विवश हो जाएंगी। इस कारण तुम अपने भाईबन्दों को जाकर समझाओ कि तुम वहां पर स्वेच्छा से रहती हो। तुमको किसीने रोक कर नहीं रखा हुआ है।···उनके पास जाकर तुम युद्ध रोकने का यत्न करो।"

सोना ने अंग्रेज़ी सेना को एकत्रित होते देखा था। उनके साथ तोप और टैंक बगैरह भी देखे थे। वह जानती थी कि नाग सैनिकों के पास तो तीर-कमान के अतिरिक्त अन्य कोई प्रबल अस्त्र है ही नहीं। इस कारण वह युद्ध को नाग सैनिकों के पक्ष में नहीं मानती थी।

साथ ही उसको यह पता चला कि यह सब झगड़ा केवल उसके कारण ही हो रहा है, तो उसे अपने व्यवहार पर लज्जा अनुभव होने लगी। उसने वापस जाने के लिए अपनी रज़ामन्दी प्रकट कर दी।

सचिव ने सन्देश भेज दिया इसपर सैनिक घेरा उठा लेने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बात कर दी गई। साथ ही अंग्रेज़ औरतों को जंगल में मार डालने की धमकी दी गई। इसपर तो सैनिक अधिकारी तुरन्त आक्रमण करने की राय देने लगे। इसपर सचिव ने युद्ध टालने का अन्तिम प्रयत्न करने के लिए चीतू सरपंच से बातचीत करने का सन्देश भेज दिया और उसके उत्तर में चीतु का सिर भाले पर टंगा हुआ आ गया।

अब सचिव के सम्मुख युद्ध रोकने का कोई उपाय नहीं था। इसपर भी उसकी सम्मति यही थी कि कोई ऐसा उपाय किया जाए जिससे हत्याएं कम हों। परन्तु सैनिक अधिकारियों ने इस सम्मति की ओर ध्यान नहीं दिया। उनका विचार था कि शत्रु को अधिक से अधिक हानि पहुंचानी चाहिए, जिससे फिर सौ वर्ष तक किसीमें ऐसा विद्रोह करने का साहस न हो।

सचिव को कह दिया गया कि उसका काम पूर्ण हो गया है। यह अब सेना के विचार का प्रश्न है कि कितनों की हत्या करे और किस प्रकार करे। सोना को पुन: लुमडिंग भेज दिया गया।

इसी बीच सचिव के शिविर में आक्रमण हो गया और उसके उत्तर में तोपें दाग दी गईं। जिस टुकड़ी ने शिविर पर आक्रमण किया था, उसका गोलियों की बौछार से स्वागत किया गया।

दो ही घण्टे में युद्ध शान्त हो गया। अन्य दो घण्टों में गिनती की गई। बीस सहस्त्र नाग मारे गए और बीस ही सहस्त्र घायल हुए। लगभग दस सहस्त्र बन्दी बना लिए गए। शेष भाग गए।

अंग्रेज़ औरतें नहीं मिलीं। इसपर नाग बन्दियों को पीट-पीटकर बहकाया गया। इससे यह विद्वित हुआ कि नाग औरतों के साथ ही उनको भी घने वन में भेज दिया गया है। उस वन की ओर एक शक्तिशाली टुकड़ी भेज दी गई।

तीन दिन के भीतर पचास सहस्त्र के लगभग बच्चे और औरतें पकड़-पकड़कर सैनिक कैम्प में ले आई गईं। बहुत-से बच्चों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूढ़ी औरतों को तो मार्ग में ही मार दिया गया। शिविर में लाई जानेवाली युवा स्त्रियों की संख्या पर्याप्त थी। उनके साथ सैनिकों ने बहुत बुरा व्यवहार किया। कोई भी स्त्री बलात्कार से बच न सकी।

तदनन्तर भारत सरकार के मन में भय समा गया कि इस अभि-यान की सूचना यदि भारत की जनता को ज्ञात हो गई, तो न जाने देश में कितना बड़ा विप्लव हो जाए। इस कारण सरकार की ओर से निम्न प्रकार की एक विज्ञप्ति निकाल दी गई—

"दो अंग्रेज़ औरतें नाग कबीलेवालों द्वारा अपहरण कर ली गई थीं। उनको ढूंढने और प्राप्त करने के लिए एक सैनिक टुकड़ी वनों में भेजी गई। तीन दिन की खोज के बाद महानदी के पार घने जंगलों में औरतें पाई गईं। कुछ नाग योद्धाओं ने उनके लाने में बाधा उपस्थित की और उनसे एक झड़प हो गई। उस झड़प में पांच नागजातीय योद्धा मारे गए। दो हिन्दुस्तानी सिपाही घायल हुए। औरतें सुरक्षित अपने अभिभावकों के पास भेज दी गई हैं। अब सब शान्ति है। बीस नागजाति अपराधी पकड़े गए हैं। उनपर उपयुक्त ट्रिब्युनल में अभियोग चलाया जाएगा।"

कुछ युवा तथा सुन्दर नाग औरतें लुमडिंग की छावनी में लाई गईं और उनको वेश्यावृत्ति के लिए विवश किया गया। शेष सबको स्टोप्स बस्ती में भेज दिया गया।

सोना जब से सचिव के शिविर से लुमडिंग में लाई गई थी, वह आत्मग्लानि से भर गई थी। सचिव ने उसको बताया था कि सारा झगड़ा उसके कारण ही हुआ है। उसको यह भी बताया गया कि उस सैनिक झगड़े में सहस्रों ही नाग मारे गए तथा घायल हुए।

इस स्थिति से वह अपने को महापापिनी समझने लगी थी। इसके बाद जनरल माइकल उसके सहवास के लिए आया तो उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्कार कर दिया।

"क्यों?" उसका प्रश्न था।

"मैं समझ गई हूं कि मेरा व्यवहार ठीक नहीं है। मैंने घोर पाप किया है और मुझे उसके लिए प्रायश्चित्त करना चाहिए।"

"तो फिर यहां किसलिए ठहरी हो? जहां चाहो, जा सकती हो।"

"मेम साहब कहेंगी तो उनकी नौकरी छोड़कर चली जाऊंगी।"

"हम तुमको हुक्म देते हैं कि यहां से चली जाओ।"

"अच्छी बात है। प्रातःकाल चली जाऊंगी।"

रात के भोजन के बाद जनरल ने सोना को कमरे में बुलाया था। वही पर यह वार्तालाप हुआ। जब सोना को निकल जाने को आज्ञा हुई तो वह कमरे से निकल आई। सोफी अभी भी ड्राइंगरूम में बैठी हुई अपने गिटार पर कोई विरह-गीत गा रही थी। सोना को जाते देख उसे रोककर उसने पूछ लिया।

सोदा रुक गई और उसने घूमकर सोफी की ओर देखा। सोना का मुख श्वेत हो गया था। मानो उसमें रक्त हो ही नहीं। उसकी आंखें भी तरल हो रही थीं।

"क्या बात है सोना?" सोफी से पूछा।

"मुझे हुक्म हुआ है कि मैं यहां से चली जाऊं।"

"क्यों, क्या कसूर किया है तुमने?"

"मेरा मन आज उनकी बात मानने के लिए तैयार नहीं हुआ।"

"क्यों तैयार नहीं हुआ?"

"अपने सजातीयों के इतनी बड़ी संख्या में मारे जाने के कारण ···और···और···"

"और क्या?"

"बहुत बड़ी संख्या में सजातीय स्त्रियों के साथ बलात्कार किए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Central Library 167976 Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar

जाने के कारण।"

"किसने बताया है तुमको ?"

"आज एक नाग औरत मेरे पास आई थी और उसने अपनी तथा अपनी बहिनों की दुर्दशा का बखान किया था।"

"परन्तु तुमको इसमे क्या? तुम भी तो साहब को प्रसन्न करती हो।"

"ठीक है सरकार! पर मैं स्वेच्छा से अपने को अर्पण कर रही हूं। उन औरतों के साथ तो बलात्कार किया गय है।"

"स्वेच्छा से!" सोफी के मुख से निकला। उसने गिटार भूमि पर रख दिया और उठकर खड़ी हो गई। अनिश्चितमन वह कभी सोना के मुख पर और कभी बैडरूम के द्वार की ओर देखने लगी। फिर कुछ विचार कर पूछने लगी, "अब कहां जा रही हो?"

"अभी तो अपने कवार्टर में जाऊंगी ; परन्तु कल प्रातःकाल ही कोठी छोड़ देने की आज्ञा है।"

"अच्छा, कल जाने से पहले मुझसे मिल लेना।"

"क्या होगा सरकार इससे? मेरे लिए आपकों साहब से झगड़ा नहीं करना चाहिए। हम तो नौकर आदमी हैं। यहां नहीं, कहीं और नौकरी मिल जाएगी।

"कोई बात नहीं, किन्तु तुम मिलकर जाना।"

सोना चली गई। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि अब वह जनरल की सेवा मे नहीं रहेगी। वह भागकर जंगल में जाना चाहती थी। परन्तु कहां? किसके पास? और फिर अकेली जा कैसे पाएगी? वह कुछ निश्चित नहीं सोच सकी।

अनिश्चित योजना के साथ रात-भर सोना अपने बिस्तर पर करवटें बदलती रही। प्रातः:काल उठ, स्नान आदि नित्यकर्म से निवृत्त हो, उसने अपने आवश्यक सामान की गठरी बनाई और उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठा सोफी के कमरे में जा पहुंची।

सोफी घुड़सवारी का बाना धारण किए हुए अपने कमरे में खड़ी थी। उसके हाथ में घोडा हांकनेवाला बेंत भी था। जब सोना उसके सामने आकर खड़ी हो गई तो उसने कहा, "सोना, मेरे साथ चलोगी?"

"कहां सरकार?"

"मैं स्टोप्सगंज के कैम्प अस्पताल में जा रही हूं। वहां बहुत-से युद्ध में घायल वनवासियों को रखा हुआ है, उन्हें परिचारकों की बहुत कमी पड़ रही है।"

सोना इसका अर्थ नहीं समझ सकी। उसने पूछ लिया, "पर सरकार! हम वहां जाकर क्या कर लेंगे?"

"मैं वहां की हालत अपनी आंखों से देखना चाहती हूं; और जो सेवा हो सकेगी, कर लेंगे।"

"आप हम गरीब लोगों के लिए क्यों कष्ट करेंगी, मैं अपने-आप ही वहां चली जाती हूं।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चल रही हूं।"

सोना परेशानी में मुख देखती रह गई। सोफी ने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, मानों वह अपनी किसी प्रिय वस्तु पर अन्तिम दृष्टिवात कर रही हो। इसके बाद दोनों कमरे से निकल बाहर खड़े दो घोड़ों के समीप जा पहुंची। एक साईस ने दोनों की लगामें पकड़ी हुई थीं। सोफी ने उसके हाथ से लगामें ले लीं। उनमें से एक लगाम सोना को पकड़ाते हुए बोली, "चलो चलें।"

दो सहस्र से अधिक आहत वनवासी स्टोप्सगंज से कुछ अन्तर पर एक अस्थायी अस्पताल में पड़े थे। उस अस्पताल का प्रबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसी बस्ती के ईसाई कर रहे थे। अस्पताल का खर्चा हिन्दुस्तान की सरकार दे रही थी। सोफी माइकल नार्थ ईस्टर्न फ्रण्टियर एजेन्सी के क्रिश्चियन मिशन की प्रबन्धक कमेटी में थी। अतः उसको इस अस्पताल के विषय में पूर्णा जानकारी थी।

पिछली रात जब सोना ने बताया था कि अपनी सजातीय बहिनों की दुर्दशा से दुःखी होने के कारण वह माइकल को प्रसन्न करने में असमर्थ है तो सोफी को सोना के भावों में यथार्थता प्रतीत हुई थी। वह भी अब तक वनवासियों के साथ हुए अत्याचार की बहुत कहानियां सुन चुकी थी, और वह उनसे प्रसन्न नहीं थी ।

सोना के स्वेच्छा से समर्पण करने की बात सुनकर वह बलात्कार और पति-पत्नी के सम्बन्ध में अन्तर समझने लग गई थी। विवाह को तो वह एक सामाजिक व्यवहार-मात्र समझती थी। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी सम्बन्ध तथा बलात्कारजनित वासना-तृप्ति में अन्तर वह इच्छा-अनिच्छा को ही समझती थी। इस कारण उसको हिन्दुस्तानी सैनिकों के वनवासी स्त्रियों के सम्बन्ध में अत्याचार का भास होने लगा था।

एक बात उसकी समझ में यह भी आई कि एक अनपढ़ और असभ्य कही जानेवाली जाति की महिला भी इतनी बारीकी से विचार कर सकती है, जितनी उस जैसी सभ्य जाति की महिला। इससे वह अपने पति से कहकर सोना के भावों का आदर करने की बात सोचने लगी। पहले तो वह जाकर उसी समय सोना को मिले आर्डर को रद्द करने का यत्न करनेवाली थी। किन्तु यह विचार कर कि इस समय उसका पति शराब के नशे में मस्त होगा और बात की श्रेष्ठता को समझ नहीं सकेगा, उसने अपना विचार प्रातःकाल तक के लिए स्थगित कर दिया।

सोना के जाने के बाद वह अपने पति के शयनकक्ष में गई तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उसको पीटने के लिए दौड़ा। सोफी भागकर बाहर चली आई। वह जानती थी कि सोना का सौन्दर्य एवं शरीर-गठन इस अवस्था में भी उससे उत्तम है। इससे उसके चले जाने पर उसका पति निराशा और क्रोध में विवेक त्याग बैठा था। उसको अपने पति पर दया आ गई। अपने सोने के कमरे में जा किवाड़ भीतर से बन्द कर वह लेट गई।

वह लेटी-लेटी विचार करती रही और वह फिर इस निर्णय पर पहुंची कि उसके पति का व्यवहार सर्वथा अयुक्तिसंगत है। इस से उसका मन सोना के प्रति उत्कट सहानुभूति से भर गया।

रात-भर के विचार का एक परिणाम निकला कि उसको अपना शेष जीवन ईसाई मिशन के कार्य पर लगा देना चाहिए, जिससे कि इस प्रकार के उजड्डु पति का खिलौना बनने से बचा जा सके। यह निश्चय करते ही वह उठी और घर छोड़ने की तैयारी करने लगी। उसने अपना पत्र लिखने का पैड निकाला और उसपर अपने पति को निम्न पत्र लिखा—

"माई डियरेस्ट[1]...... !

मैं आज आपको सदा के लिए छोड़ रही हूं। आपके जीवन में औरतों से खिलवाड़ होती देख-देखकर अब मैं ऊब गई हूं। ऊंट की कमर तोड़नेवाला उसकी पीठ के बोझे का अन्तिम तिनका आपके सोना के प्रति व्यवहार ने प्रस्तुत कर दिया है। आप किसी औरत के मन के कोमल उद्‌गारों को समझ नहीं सकते। सदा उनको अपनी वासना-तृप्ति के लिए केवल मशीन ही समझते रहे हैं। यह अब मेरे लिए असह्य हो गया है।

मैं जा रही हूं और चाहती हूं कि आप मेरे पीछे न आएं,

1. मेरे प्रियतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा मुझे पुलिस में रिपोर्ट करनी पड़ेगी।

मैं आपसे घृणा करने लगी हूं। आप इस पत्र के आधार पर मुझसे तलाक प्राप्त कर सकते हैं।

—सोफी"

इस पत्र को लिफाफे में बन्द कर उसपर अपने पति का नाम तथा पता लिखकर अपनी मेज़ पर रख, वह कपड़े पहन जाने के लिए तैयार हो गई। दिन मिकलते ही उसने अर्दली को कहकर दो घोड़े ज़ीन कसवाकर मंगवा लिए और सोना की प्रतीक्षा करने लगी। उसको विश्वास था कि वह आएगी।

सोना आई तो दोनों स्टोप्सगंज की ओर चल पड़ीं। वहां पहुंच वे वहां के वार्डन, मिस्टर वीडन पाल, के घर के सामने जा खड़ी हुईं। वीडन पाल मिसेज़ सोफी माइकल को जानता था। अत: उसको अपने मकान के बाहर घोड़े से उतरते देखकर बाहर आया और गुडमार्निंग कर उसको घर के भीतर चलने के लिए कहने लगा। सोफी ने कहा, "हमारे घोड़ों की देखभाल होनी चाहिए। यह सरकारी माल है। साथ ही मेरी नौकरानी भी मेरे साथ आएगी।"

वार्डन दोनों को अपनी कोठी के भीतर अपनी पत्नी के समीप ले गया। मिसेज़ पाल भी सोफी को जानती थी और यह विचारकर कि वह उस पूर्ण विभाग के मिशन की प्रबन्धक कमेटी में है, उसकी आवभगत करने लगी।

सोफी ने बताया, "सुना है कि यहां के कैम्प अस्पताल में नर्सों की बहुत कमी है। मैं देखने आई हूं कि मैं इसमें किस प्रकार सहायता कर सकती हूं।"

"हां, बहुत कमी है। पहले युद्ध के तुरन्त बाद तो बहुत ही कठिनाई हो गई थी। उस समय से यहां की प्राय: सब औरतें, यहां तक कि स्कूल की छात्राएं तक भी इस काम पर नियुक्त कर दी गई थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बहुत-से आहत ठीक होकर चले गए हैं, इसपर भी दो सहस्त्र से अधिक अभी यहीं पर हैं। इनके लिए हमारे पास केवल दस नर्सें हैं। कुछ औरतें स्वेच्छा से आकर अपना थोड़ा-थोड़ा समय दे रही हैं।"

"तो ठीक है। हम कल प्रात:काल देखेंगी। हम दो तो अपना समय देने का विचार करके आई हैं।"

"परन्तु आप यह कष्ट क्यों करेंगी? यहां के लोग यह कर रहे हैं। आप कब तक यहां रह सकेंगी! अब तो ऐसे रोगी हैं जो प्राय: जीवन-भर अस्पताल में ही रह जाएंगे। कुछ तो इस प्रकार लंगड़े-लूले हो गए हैं कि वे पहचाने भी नहीं जा सकते। कोई कह नहीं सकता कि वे मनुष्य हैं भी कि नहीं ।"

सोफी के मन ने निर्णय कर लिया था। वह अपने दुराचारी पति की सेवा में जाने के स्थान पर इन अपाहिजों की सेवा में अधिक सुख प्राप्त करने की आशा कर रही थी। वार्डन ने घोड़ों को अस्तबल में भेज दिया। वहां उनकी मालिश कर घास-दाना आदि खाने के लिए दे दिया गया, जिससे कि अगले दिन वे लौट सकें।

इधर सोफी ने अगले दिन अस्पताल देखने का कार्यक्रम बना लिया। रात को भोजन के समय वार्डन, उसकी पत्नी, वहां का पादरी और बस्ती के कुछ बड़े-बड़े लोग और उनकी पत्नियां आई हुई थीं।

भोजन के समय बातचीत होने लगी। अस्पताल में रोगियों की चर्चा पर मिसेज़ काले बोलीं, "जो कुछ इन लोगों के लिए किया जा रहा है वह तो इनको स्वर्ग-तुल्य ही मानना चाहिए।"

मिसेज़ काले स्वयं नाग जाति की थीं। उनका पति भी नाग-जातीय ही था। दोनों ईसाई हो चुके थे। पुरुष तो बस्ती के गिरजाघर में क्लर्क था और उसकी पत्नी स्कूल-अध्यापिका थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोफी ने कहा, "कल हम आपका बताया हुआ स्वर्ग देखने के लिए जाएंगी। इस अस्पताल के लिए सरकार कितना रुपया दे रही है?"

वार्डन ने बताया, "दस लाख स्वीकार हुआ था। हमने अब और मांगा है। हमारा विचार है कि एक पक्का अस्पताल बन जाए, जिससे रोगियों को लुमडिंग और सिलचर न जाना पड़े।"

"उसके लिए क्या मांगा गया है?"

स्थायी अस्पताल की इमारत और प्रारम्भिक व्यय के लिए तीस लाख रुपया तथा चालू खर्च के लिए पांच लाख रुपया वार्षिक का अनुदान। इससे पांच सौ बेड का अस्पताल खूल जाएगा।"

"अच्छी बात है। इसपर भी मैं यही कह सकती हुं कि खर्चे कम से कम किया जाए, तो अधिक से अधिक दुःखित लोगों की सहायता हो सकती है।"

"यह तो हम कर ही रहे हैं।" पादरी का कथन था।

अगले दिन उठते ही सोफी ने वार्डन से कहा, "मैं यहां कई दिन के लिए रहने को आई हूं, इस कारण सरकारी घोड़े लुमडिंग भेजने का प्रबन्ध कर दीजिए।"

"कब तक रहने का विचार है?"

"अभी निश्चय नहीं कर सकी। इसपर भी दो सप्ताह तक तो रहूंगी ही। इतने दिन तक इन घोड़ों को यहां बांधकर रखना ठीक नहीं है।"

वार्डन ने एक आदमी के द्वारा घोड़ों को लुमडिंग भेज दिया; और सोफी तथा सोना अस्पताल देखने के लिए चली गईं। अस्पताल में दो सहस्त्र से ऊपर रोगी थे। दो सौ खेपे लगाए गए थे। और प्रत्येक खेमे में दस से पन्द्रह तक घायल पड़े थे। दस नर्सें थीं। एक-एक के अधीन बीस-बीस खेमे थे। वे इतने अधिक रोगियों को देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी नहीं सकती थीं। पूर्ण अस्पताल के लिए केवल दो डाक्टर थे।

घायलों को अस्पताल में आए बीस दिन तक हो चुके थे। अनेकों घायल ऐसे थे जिनकी अभी पहली पट्टी भी नहीं हो पाई थी। अनेकों ऐसे हो गए थे जिनके घावों में कीड़े पड़ गए थे। घायलों को भूमि पर चटाइयों पर लिटाया गया था।

सोफी वहां पहुंची तो दोनों डाक्टर आ गए। घायलों की शोचनीय अवस्था देखकर सोफी ने कहा, "यदि आपके पास उचित प्रबन्ध नहीं है तो आपने सरकार को लिखा क्यों नहीं?"

"हमने लिखा तो है; परन्तु सरकार की अपनी मजबूरी है। वह यह प्रकट होना राज्य के हित में नहीं मानती कि इतने बड़े युद्ध और फिर उसमें तीस हज़ार की हत्या की बात पब्लिक में फैल जाए।"

घायलों की दुर्दशा देख सोफी अत्यन्त दुःखी थी। उनके मन में एक बात आई कि तुरन्त अमेरिका से धन और जन की अपील की जाए। उसने 'क्रिश्चियन मिशन फॉर ईस्ट' की अमेरिकन शाखा को एक कॉन्फीडेंशल पत्न लिखने का विचार कर लिया। वह लिखना चाहती थी कि यदि तुरन्त सहायता न भेजी गई तो कुत्तों की मौत सहस्रों मनुष्यों के मर जाने की सम्भावना है।

सोना तो घायलों की अवस्था देख-देख रो रही थी। प्रत्येक कैम्प में हाय-हाय मची हुई थी। वह अनेकों घायलों को ऐसा पाती थी कि उनकी चिकित्सा यदि वनवासियों के तरीके से हो जाती तो अब तक तो वे ठीक हो गए होते। इस कारण उसने सोफी को कहकर डाक्टर से पूछ लिया, "इन घायलों को अपने देश की जड़ी-बूटियों से चिकित्सा क्यों नहीं करने दी गयी है ?"

"सरकारी अस्पतालों में 'क्वेकरी' चलने नहीं देना चाहते।"

'क्वेकरी' सुनकर सोफी को धनिक की चिकित्सा का स्मरण हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आया। वह हंस पड़ी और पूछने लगी, "आपको किसने कहा है कि वह 'क्वेकरी' होती है?"

"इनमें एक व्यक्ति था। उसने यही बात कही थी, जो यह औरत कह रही है। मैंने उसको एक घायल के घावों पर दवाई लगाने की स्वीकृति दे दी।

"वह स्वयं तो 'बम्ब ब्लास्ट' से अन्धा हो गया है, उसको दिखाई नहीं देता। उसने अपने एक साथी को समझाकर जंगल में से एक जड़ी मंगवाई। उसपर कितनी ही मिट्टी लगी हुई थी और मुझे विदित नहीं था कि यह क्या वस्तु है। उसने मिट्टी-सहित जड़ी को पिसवाकर अपने तथा अपने साथी के घावों पर लगया दिया। मैं मना करता रहा कि घाव के सैप्टिक[1] होने की सम्भावना है, परन्तु वह नहीं माना। उन दोनों को लाभ अवश्य हुआ, परन्तु में वैसे अनसाइंटिफिक[2] इलाज़ की इस अस्पताल में स्वीकृति नहीं दे सका।"

सोफी हंस पड़ी। उसने कहा, "डॉक्टर, यू आर एन ईडिएट![3] मैं अभी तुम्हारे अफसरों को लिखती हूं कि तुम्हें वापस बुला लिया जाए। कहां है वह अंधा आदमी, जिसने वह दवा बताई थी?"

डाक्टर के माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसने कहा, "में तब तक इस अस्पताल में काम नहीं करूंगा जब तक कि तुम हमारे काम में हस्तक्षेप करना बन्द नहीं करोगी।"

"वैरी गुड। यू गेट अवे फ्रॉम हियर। आइ एम राइटिंग टु एथॉरिटीज़।"[4]

"परन्तु तुम कौन हो?"

1. विषैला 2. अवैज्ञानिक 3. तुम मूर्ख हो, डाक्टर! 4. बहुत "अच्छा। दूर हो यहां से। मैं अधिकारियों को लिखती हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस विभाग के मिशन की प्रबन्धकर्त्री समिति की सदस्या हूं। मैं आज्ञा देती हूं कि तुम यहां से चले जाओ।"

डाक्टर वार्डन का मुख देख रहा था। वार्डन के माथे पर पसीने की बूंदें झलकने लगी थीं। इस झगड़े में वह मिशन का कल्याण नहीं देखता थ। परन्तु सोफी अपने निश्चय पर डटी हुई थी। यों तो बार्डन और पादरी दोनों को ही आज्ञा देने की क्षमता उसमें थी, इसपर भी वे कुछ जाहिल लोगों की सहायता के लिए सरकार से मिलनेवाली सहायता का तिरस्कार नहीं करना चाहते थे। इससे वार्डन ने डाक्टर का क्रोध शान्त करने के लिए उसकी बांह में बांह डाली और उसे अस्पताल से बाहर ले गया।

सोफी और सोना उस अंधे वनवासी को ढूंढ़ने के लिए चल पड़े। पादरी जॉन उनके साथ ही था। उसने साथ-साथ चलते हुए बताया, "मैं उसे जानता हूं, वह कैम्प संख्या एक सौ तीन में है। उसने मुझे कहकर अपने कैम्पवालों का डाक्टर से चोरी-चोरी इलाज किया है और वे सबके सब ठीक हो गए हैं। वे जाना चाहते हैं, परन्तु मैं अपनी पवित्र पुस्तक में से उन्हें उपदेश सुनाने के लिए रोके हुए हूं। उनको अच्छा खाने-पीने को मिल रहा है। इस कारण भी वे रुके हुए हैं।"

सोफी मन में विचार कर रही थी कि इस पादरी ने उन भले लोगों को इस प्रकार इस मूर्ख डाक्टर के अधीन रखा हुआ है ताकि वह उनको ईसाई बना सके। इस प्रकार 'हीदन्ज़' अर्थात् विधर्मियों को बल तथा छल से ईसाई धर्म के झण्डे के तले लाने की बात स्मरण कर हंस पड़ी। उसके मन की अवस्था ऐसी थी कि वह पादरी को भी दो-चार जली-कटी सुनाने लगी थी। परन्तु जब तक वे उस अन्धे के कैम्प में पहुंच गए थे। अन्य कैम्पों की अपेक्षा उस कैम्प में 'हाय-हाय' कराहने के शब्द के स्थान पर हंसी-ठट्ठे की ध्वनि सुनाई दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी।

इससे सोफी पादरी की मूर्खता को भूल गई और कैम्पवालों में जाकर उससे पूछने लगी, "हां, तो कौन है वह आदमी?"

इनको आया देख वहां के रोगी मौन हो गए। वे पादरी के साथ एक गोरी औरत और साथ ही अस्पताल के आठ-दस अंधे कर्मचारियों को आता देख समझ गए थे कि कोई बड़ी औरत आई है।

सोना ने नज़र दौड़ाई तो धनिक को हाथों से अपना सिर पकड़े एक कोने में बैठे देख लिया। उसे देखकर वह स्तब्ध रह गई। वह बोलना नहीं चाहती थी। उसको भय लग रहा था कि उसको यदि कहीं यह विदित हो गया कि मैं यहां हूं तो यहां भी उसका गला दबा-कर हत्या कर देगा। उसने सोफी को अपने होंठों पर उगली रखकर ऐसा ही संकेत कर दिया।

सोफी समझ गई कि लुमडिंग से धनिक अस्पताल का कम्पाउण्डर यहां मिल गया है। परन्तु उसके अंधा हो जाने की बात स्मरण कर वह कितनी ही देर तक उसको निहारती खड़ी रही। पादरी ने समीप आकर कहा, "यही आदमी है, जिसने अपने के कैम्पवालों को ठीक किया है।"

सोफी ने पादरी को बताया कि वह इसको जानती है। सोफी की आवाज़ सुनकर धनिक ने मुख उठाया और जिस ओर से आवाज़ आई थी उसने उधर को मुख किया। परन्तु अगले ही क्षण यह अनुभव कर कि वह तो देख सकता ही नहीं, उसने पुनः मुख नीचा कर लिया। सोफी ने उसके मुख की रेखाओं से उसके मन के भावों का अनुमान लगाकर कहा, "धनिक! मेरी आवाज़ पहचानते हो?"

"ओह! जरनैल की बीवी! पहचान गया हूं।"

"सुना है, तुम्हारी आंखें खराब हो गई हैं।"

"हां, भाग्य का खेल है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमने यहां भी अपनी चिकित्सा आरम्भ कर दी है?"

"हां, परन्तु यहां डाक्टर दूसरों का इलाज नहीं करने देता।"

"मैं तुम्हें स्वीकृति दिलाने के लिए आई हूं; परन्तु आंखों के बिना तुम यह काम कर कैसे सकोगे?"

"यदि सोना होती तो मैं कुछ तो अवश्य ही कर लेता।"

"सोना आना चाहती है; परन्तु वह डरती है कि कहीं तुम उसकी हत्या न कर दो।"

"वह मूर्ख है जो मरने से डरती है। औरत पति के हाथ से मरे तो स्वर्ग जाती है। परन्तु अब तो उसके डरने की बात ही नहीं रही। सुना है, सहस्त्रों घायल पड़े हैं जिनको तुम्हारा डाक्टर ठीक नहीं कर सकता!"

"तुम वचन दो, उसे मारोगे नहीं तो मैं बुला सकती हूं।"

"यदि आप चाहती हैं कि घायलों की मरहम-पट्टी करूं तब तो उसको बुला दीजिए ।"

"वड़ थोड़ी देर में आ जाएगी।"

चिकित्स-कार्य आरम्भ हो गया। सोना घावों और अन्य चोटों को देखकर अपने पति को समझाती थी। वह उसको जड़ी का नाम बताता था। जड़ी ढूंढ़कर लाई जाती। उसको कूट-काटकर घावों पर लगा दिया जाता।

एक दिन में ही सैकड़ों घायलों की मरहम-पट्टी हो गई। उसी सायंकाल को जब सोफी वार्डन के घर पहुंची तो डाक्टर ने एक लम्बी-चौड़ी शिकायत लिखकर तैयार कर रखी थी। उसमें सोफी पर यह आरोप लगाया गया था कि वह डाक्टर के कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप कर रही है। इस कारण वह चाहता था कि उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैम्प अस्पताल से वापस बुला लिया जाए।

वह बात जानकर सोफी मुस्कराई और बोली, "डाक्टर, तुमने यदि यह शिकायत भेजी तो मैं यहां के हस्पतालों की पूर्ण अवस्था, जो मैं देखकर आई हूं, और अस्पताल की गन्दगी का पूर्ण वृत्तान्त लिखकर भेज दूंगी।

"साथ ही मैं यह भी बता देना चाहती हूं कि मैं यह हस्तक्षेप जनरल की पत्नी होने की हैसियत से नहीं, प्रत्युत ईसाई मिशन की प्रबन्ध-समिति की सदस्य होने के नाते कर रही हूं।

"मेरी राय मानो तो इस रिपोर्ट को फाड़ डालो और कल से जितना काम तुम कर सकते हो, करो। शेष तुम हमारे ऊपर छोड़ दो। हम तुम्हारे रोगियों की चिकित्सा में हस्तक्षेप नहीं करेंगे और तुम हमारे काम की टीका-टिप्पणी मत करना।"

"कितने घायलों की पट्टी कर दी गई है?"

"आज तो दो सौ के लगभग की ही हो पाई है। कल इससे अधिक की हो जाएगी।"

"तो मैं क्या करूं?"

"हम आपके अधीन दस कैम्प कर देंगे। आप उनको ही निपटा दें तो ठीक है।"

वार्डन पाल के समझाने पर डाक्टर मान गया। उसने अपनी रिपोर्ट फाड़ डाली।

अस्पताल के वे सब घायल जो धनिक की चिकित्सा से ठीक हो गए थे, अब दवाई बनाने में लग गए। सोना दो-तीन नागों को साथ ले, जंगल से जड़ी-बुटी एकत्र करके लाती थी। रात-भर औषधि तैयार होती थी और अगले दिन सोना की देख-रेख में घायलों पर उसका प्रयोग होता था। डाक्टर जब तक ब्रेकफास्ट[1] कर अस्पताल

1. नाश्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आता, सहस्त्रों रोगियों की मरहम-पट्टी हो चुकी होती। डाक्टर ने अनुभव किया कि उसके लिए दस कैम्प भी नहीं रह गए थे जहां उसको चिकित्सा करने का अवसर दिया गया था। जो कुछ रोगी ऐसे थे जिनको अभी तक दवा नहीं मिली थी, वे भी डाक्टर की दवाई लगवाने के लिए राज़ी नहीं हुए। कुछ ऐसे ही थे जिनकी हड्डी टूट गई थी। उनकी हड्डी ठीक करने का काम तो एक अन्य घायल करता था।

जब तक चौधरी धनिक की चिकित्सा आरम्भ नहीं हुई थी तब तक नित्य ही लगभग एक सौ रोगी देह छोड़ देते थे। पहले ही दिन मृतकों की संख्या कम हो गई और तीन दिन के निरन्तर परिश्रम के बाद अस्पताल में मृत्यु होनी बन्द हो गई। अधिक बुरी अवस्था के घायल तो पहले ही मर चुके थे।

एक सप्ताह में ही स्थिति वश में आ गई। अब सोफी के कहने पर घायलों को सरकारी धन से अच्छा खाने-पीने को मिलने लगा था। ओषधियों पर व्यय तो शून्य के बराबर ही हो रहा था।

इन दिनों धनिक और सोना को एकान्त में बैठकर बातचीत करने का मौका मिला। दोनों एक दिन नदी के किनारे बैठे थे। सोना ने कहा, "यदि तुम लुमडिंग से न आते तो तुम्हारे साथ वह दुर्घटना न होती।"

"मैं वहां रहता तो अवश्य तुम्हारी हत्या कर देता और फिर मुझको भी फांसी चढ़ा दिया जाता। अब जीवित तो हूं।"

"मुझे विश्वास था कि मैं तुम्हें समझाती तो तुम मेरी हत्या का विचार छोड़ देते।"

"क्या समझातीं तुम? सब कुछ तो मैं जान गया था, और क्या बता सकती थीं तुम?"

"जानने की बात तो कुछ नहीं थी, परन्तु समझने की बात तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। मेरा बड़े साहब से सम्बन्ध था और मैं अपने देवताओं के राज्य से बाहर दूसरे देवताओं के राज्य में थी, उन देवताओं का आदेश था कि बड़े साहब मेरे पति हैं।"

"तुम झूठ कहती हो।"

"नहीं, सत्य कहती हूं। मुझे बार-बार वे स्वप्न में आकर बताते थे और मेरे मन के संशय दूर हो रहे थे। जब मुझे पंचायत के हाथ में देने के लिए सरकारी सचिव के शिविर में लाया गया तो मुझे विश्वास था कि अपने अधिकार में लेते ही पंचायत मुझे मार डालेगी। मैंने वहां के देवताओं का चिन्तन किया तो मुझे विदित हुआ कि पंचायत और उसके साथ सहस्रों नाग जाति के लोग मरे पड़े हैं। वे मुझे मारना तो दूर, प्रत्युत छू भी नहीं सकते। इससे निर्भीक हो, मैं वहां गई और स्वयं को पंचायत के हाथ में देने के लिए कह दिया।"

"इसपर भी अपने देवता तुमको दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ेंगे। मुझे तो वे अपना साधन नहीं बना सकते। इसपर भी यह निश्चित जानो कि तुम्हारे पाप का दण्ड दिए बिना वे तुम्हें छोड़ेंगे नहीं।"

"जब देवताओं की ऐसी ही इच्छा है तो मैं डरती नहीं। परन्तु मैं बताती हूं कि मेरा मन कहता है कि मैंने कोई पाप नहीं किया। मैंने स्वेच्छा से आत्मसमर्पण किया था। मैं साहब से प्रेम करने लगी थी।"

धनिक इस बात का अर्थ नहीं समझ सका। सोना ने समझाया, "अपने-अपने देश के देवताओं के नियम हैं। उनके देवता का नियम है कि प्रेम-सम्बन्ध से पाप नहीं होता। जब प्रेम न रहे तो सम्बन्ध टूट सकता है।—इसीसे अब मैं सम्बन्ध छोड़ आई हूं।"

इसपर धनिक हंस पड़ा और बोला, "यह प्रेम क्या वस्तु है, जो कभी होता है और कभी नहीं होता?"

"बड़े साहब की हमारे साथ सहानुभूति और व्यवहार ऐसा था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उसे बड़ा व्यक्ति मानती थी। और उसके प्रति भक्ति को ही प्रेम मानती हूं। बाद में मुझे मालूम हुआ कि वह शैतान है तो में उसके प्रति भक्ति के स्थान पर घृणा करने लगी और इस कारण उसको छोड़कर आ गई हूं। अब उससे मेरा प्रेम नहीं है।"

"इसको ही हमारे देवता अनिष्ठा कहते हैं और इसका दण्ड मृत्यु है।"

"तो मैं उन देवताओं के अधीन नहीं होऊंगी।"

धनिक ने हंसते हुए कहा, "यह तुम्हारे वश में है क्या?"

"नहीं होगा, तो मारी जाऊंगी।"

धनिक ने बताया, "मैं ईसाई हो गया हूं। पादरी ने मुझे बताया है कि दया और क्षमा करनेवाले को भगवान सीधा स्वर्ग देता है। इसलिए मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है ।"

सोना ने धनिक के चरण-स्पर्श किए। धनिक को जब इसका अनुभव हुआ तो उसने पूछा, "यह क्या कर रही हो?"

"मेरे अपराध क्षमा कर देने पर में आपका धन्यवाद कर रही थी।"

"इसका फल तो देवताओ ने मुझे दे दिया है।"

"क्या दिया है?"

"तुम मिल गई हो।"

"हां, यदि देवता मेरे मन में बड़े साहब के लिए घृणा पैदा न करते तो मैं यहां न आती ।"

एक और सप्ताह बीतने पर सौ सवा सौ घायलों को छोड़कर अन्य सबको अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। अब ये नाग लोग पंचायत करने लगे थे कि वे कहां जाएं।

धनिक का विचार था कि सबके सब ईसाई हो जाएं। सोना का विचार था कि इस प्रकार ईसाई होने से कोई लाभ नहीं। वे इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बस्ती में रहें और यदि उनकी अन्तरात्मा उनको ईसाई होने की प्रेरणा दे तो ईसाई बनें, अन्यथा अपने देवताओं को मानें।

पादरी इस बात को इनकार नहीं कर सका। इसपर भी उसकी धारणा थी कि उस बस्ती में रहने पर एक न एक दिन ये नाग लोग ईसाई हो जाएंगे।

वह जानता था कि इनको सुखों की आदत पड़नी चाहिए। वह सुख यदि इनको ईसाइयों द्वारा उपलब्ध होगा तो ये सब प्रभु के गल्ले की भेड़ें बन जाएंगे।

कुछ लोगों ने कहा कि वहां उनके अपने देवता नहीं हैं, इसपर सोना ने उनको एक मार्ग बताया और तदनुसार नदी के किनारे नाग-देवता की प्रतिष्ठापना कर दी गई।

बस्ती का पादरी इस बात को पसन्द नहीं करता था। परन्तु सोफी के समझाने पर कि यह एक स्वतः बदल रही परिस्थिति है, इसमें बाधा डालने से प्रतिक्रिया होगी और सबके सब लोग बस्ती छोड़ जाएंगे, पादरी खामोश हो गया।

सोफी की योजना के अनुसार एक नवीन बस्ती बनाई गई। सोफी ने अमेरिका को पत्र लिखा था, इससे वहां के धर्मप्रचार के लिए बीस हज़ार डालर की प्रथम किस्त आ गई। इस धन से, नदी के दूसरी ओर एक नई बस्ती का निर्माण होने लगा। इस बस्ती में जहां मदर मरियम की मूर्ति के साथ गिरजाघर बनने लगा वहां नाग-देवताओं का मन्दिर भी बन गया।

सोफी को अपने पति को छोड़कर आए एक वर्ष से अधिक हो गया था। उसको इन वनवासियों को सभ्य बनाने और उनके मन में ईसाई धर्म की प्रेरणा करने का काम इतना रुचिकर प्रतीत हुआ कि अपने पति की सुधि कभी आई ही नहीं।

नई बस्ती का, जिसका नाम सोफीगंज रखा गया था, निर्माण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य वेग से हो रहा था कि एक दिन जनरल माइकल वहां आ धमका।

सोफी ने अपने लिए अपने ही पैसे से एक बंगला बनवा लिया था और उसमें वह सोना और धनिक के साथ रहती थी।

अपने पति को आया देख सोफी परेशानी अनुभव करने लगी। इस पूर्ण अवधि में उसने स्वयं को वनवासियों के कार्य में इतना लीन कर लिया था कि उसको पति के विषय में विचार करने का अवसर ही नहीं मिला। वास्तव में वह अपने और अपने पति के विषय में विचार करने से बचने के लिए ही यह सब यत्न कर रही थी। अब वह आया तो उसको इस विषय में विचार करने के लिए विवश होना पड़ा।

वार्डन ने जनरल साहब की आवभगत की और उसको सोफी के बंगले पर ले गया। साथ ही उसने सोफी के पास भीं सूचना भेज दी। वह नई बस्ती के निर्माण के लिए गई हुई थी और सोना भी उसके साथ ही थी। परन्तु धनिक बंगले के बरामदे में बैठा था।

वार्डन ने धनिक से कहा, "चौधरी! जनरल साहब आए हैं।"

"सत्य! लेकिन क्यों आए हैं?"

"सोफी को ले जाने के लिए।"

धनिक गम्भीर विचार में लीन हो गया। वार्डन ने पूछा, "उनसे मिलोगे?"

बिना विचार किए ही उसने अपने मन की ग्लानि के कारण कह दिया, "नहीं, कोई आवश्यकता नहीं है।"

वार्डन को विस्मय तो हुआ, परन्तु बोला कुछ नहीं। सोफी आई तो माइकल के सामने जाकर खड़ी हो गई।

"ओह, तुम आ गई हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुडमार्निंग।" यह औपचारिक स्वागत कर वह उसके सम्मुख बैठ गई। फिर कुछ विचारकर बोली, "आप किसी सरकारी काम से आए हैं क्या?"

"नहीं, मेरी इस विभाग से बदली हो गई है। मैं अब कराची जा रहा हूं। इस कारण मैं अपनी पत्नी को साथ लेने के लिए आया हूं।"

"आपके आने के पूर्व मैंने आपको एक पत्र लिखा था। क्या वह आपको मिला नहीं?"

"मिला था।" माइकल ने जेब से उस पत्र को निकालकर सामने मेज़ पर रख दिया—"यही है न? मैं इसीके विषय में बात करने के लिए आया हूं।"

"हां कहिए, क्या चाहते हैं आप?"

"मैं चाहता हूं कि तुम इस चिट्ठी को उठाकर फाड़ डालो।"

"फाडने के लिए तो मैंने नहीं लिखी थी।"

"मैं तब की बात नहीं कह रहा। मैं तो आज की बात कह रहा हूं। इसके लिखने में जो भी कारण रहे थे, अब तो वे नहीं हैं।"

"हैं तो, यह देखिए!" इस समय सोना उनके लिए चाय बना-कर ले आई थी। सोफी ने उसकी ओर ही संकेत किया।

"मुझे विदित था कि यह यहां है। परन्तु मैं इसको लेने के लिए नहीं आया। मैं तो तुमको साथ ले चलने के लिए आया हूं।"

"तो कोई अन्य मिल गई होगी?"

"नहीं, मैं तुम्हारी सौगन्ध खाकर कहता हूं कि जब से तुम आई हो, मैंने औरत का मुख तक नहीं देखा।"

सोफी उसका मुख देखती रही। माइकल आगे बोला, "मुझे तुम्हारे यहां के कार्य के विषय में भी सब ज्ञात है। डाक्टर ने तुम्हारी शिकायत की थी, वह मेरे पास जांच के लिए आई तो मैंने धनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सफाई दे दी और फिर यहां के विषय की रिपोर्ट भिजवा दी अब फादर जॉन ने तुम्हारे कार्य की रिपोर्ट अमेरिका तथा यहां के विभागीय मिशन को भेज दी है। मिशन ने सरकार को लिखा है और मुझे मेरे अधिकारियों ने कहा है कि मैं तुम्हें लेकर कराची चला जाऊं। वहां ते मुझे बसरा जाने के लिए कहा जाएगा। पुनः हिन्दुस्तान में आने का अवसर नहीं मिलेगा। इसलिए अपना सब कुछ समेटकर ले जा रहा हूं और उस सब कुछ में तुम सबसे मूल्यवान हो!"

"इस मूल्य का ज्ञान कब से हुआ है?"

"जब से तुम मुझे छोड़कर आई हो। मैं अपने किए पर पश्चात्ताप करता हूं।"

"मुझे विचार करने के लिए अवसर चाहिए।"

"हां, रात के समय तो इस प्रदेश में यात्रा हो नहीं सकती। प्रात:काल तक तुम तैयार हो जाओ। सोना और उसके पति को यहीं रहने दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

बड़ौज स्टोप्सगंज से भाग गया। अब तक वह वनवासियों के वस्त्र आदि सभी चिह्न उतार चुका था। अब वह यूरोपियन ढंग का पहरावा पहनता था। अत: जब वह लुमडिंग में पहुंचा तो वहां घूमनेवाले सहस्रों वनवासियों में वह मिल गया।"

एकाएक उसे लुग्गी मिली और उसने उसको बिन्दू के विषय में बताया। लुग्गी ने अपने विषय में सारी बात बताकर कहा, "इन क्रिस्तानों के रिवाज हमसे भिन्न हैं। औरतों की मिष्ठा का ये लोग कुछ भी मूल्य नहीं समझते। इनमें जो भले विचार के हैं, वे भी पति-पत्नियों को छोड़कर दूसरा विवाह कर लेते हैं। जब तलाक हो जाता है तो दूसरे पुरुष अथवा स्त्री से सम्बन्ध बनाने में पाप नहीं मानते।

"इन्हींमें एक पंथ ऐसा भी है जिसे तलाक की स्वीकृति नहीं मिलती। कभी होती भी है, तो बहुत जांच-पड़ताल के बाद। वे लोग बिना पत्नी को छोड़े अविवाहित पत्नियां रख लेते हैं। एक रात के लिए भाड़े पर पत्नियां लेना तो इनमें—विशेष रूप से सैनिक छावनियों में—बहुत होता है।"

"अब तुम्हारा घरवाला कहां है?"

"मुझको यों ही छोड़कर वह भाग गया है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं बिन्दू को ढूंढ़ने के लिए निकला हूं।"

"कहां ढूंढ़ोगे उसको?"

"जहां भी वह मिल जाए। एक सप्ताह तक इस नगर में ढूंढूंगा, फिर अगले नगर में चला जाऊंगा।"

तब तक लुग्गी को सोना तथा धनिक के उस नगर में होने का ज्ञान नहीं था। इसी कारण वह उसको इस विषय में किसी प्रकार की सूचना नहीं दे सकी थी। सोना शिलांग में बिन्दू से मिलकर लौट चुकी थी और यदि कहीं वह मिल जाती तो कुछ तो सूचना उससे मिलती ही। इस प्रकार एक सप्ताह लुमडिंग में रहकर बड़ौज सिलचर चला गया। गौहाटी पहुंचते-पहुंचते उसके पास सब धन समाप्त हो गया। अब वह काम ढूंढ़ने लगा। उसकी समझ में आया कि यदि वह किसी पादरी की नौकरी करे तो बिन्दू को ढूंढ़ने का काम कुछ सरल हो सकता है। इसके साथ ही वह किसी ऐसे व्यक्ति की नौकरी करना चाहता था जो प्राय: घूमता रहे। ये दोनों शर्तें एक ही व्यक्ति में पूरी होनी कठिन थीं। इसपर भी वह यत्न यही कर रहा था।

गौहाटी में उसको मज़दूरी का ही काम मिला। दिन-भर की मेहनत-मशक्कत से उसे केवल चार आने मिले। वह स्टेशन पर खड़ा-खड़ा सामान ढोने का काम ढूंढ़ रहा था। चार आने में पेट तो भर गया, परन्तु शेष कुछ बचा नहीं। इससे अगले दिन फिर काम की खोज में स्टेशन के बाहर जाकर खड़ा हो गया।

दिन के बाद दिन बीतने लगे। नित्यप्रति उसकी मज़दूरी चार से आठ आने तक होती थी। जब कभी कोई पादरी यात्री दिखाई देता तो वह उसके पास जाकर अपनी सेवाएं उपस्थित कर देता। कई बार तो उसके मन में अपने प्रति सहानुभूति उत्पन्न करने के लिए वह मज़दूरी भी नहीं लेता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे निरन्तर प्रयत्न का फल मिला। एक गौरवर्णीय पादरी स्टेशन पर उतरा तो वह एक हिन्दुस्तानी का बोझा उठाता-उठाता रुक गया और पादरी के सामने जाकर बोला, "कुली चाहिए सरकार!"

पादरी उसके मुख पर देखकर कहने लगा, "उस बाबू का सामान क्यों नहीं उठाया?"

उसके मुख से अनायास निकल गया, "फादर! मैं आपकी सेवा में खुशी अनुभव करता हूं।"

"परन्तु मेरे पास देने के लिए एक पैसा भी नहीं है। पादरी ने समझा कि यह उसको यूरोपियन समझ उससे चोखी रकम की आशा में एक बंगाली बाबू का सामान छोड़कर उसके पास आया है। इससे उसने मज़दूरी की बात कर दी थी।

"आप कुछ नहीं देते तो भी मुझे सन्तोष होगा।"

"क्यों?"

"इसलिए कि आप फादर हैं। मुझे आपकी सेवा में आनन्द प्राप्त होता है।"

इसपर पादरी को हंसी सूझी। उसने कहा, "देख लो, मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं है।"

"कहां चलना है फादर?"

"बड़े गिरजाघर में।"

बड़ौज सामान सिर पर रख चलने के लिए तैयार हो गया। पादरी भी चल पड़ा। यह गिरजाघर स्टेशन से पौन मील के अन्तर पर था। पादरी और कुली पैदल ही वहां पर पहुंचे। ये अभी चार-दीवारी के पास पहुंचे ही थे कि गिरजाघर के आउट-हाउस से एक पादरी भागा-भागा आया और गुडमानिंग कहकर बोला, "आपने तो आने की सूचना भी नहीं भेजी!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ आवश्यकता नहीं समझी। यह भला पुरुष मिल गया है और कुछ लिए बिना ही सामान लाने के लिए तैयार हो गया है।"

स्थानीय पादरी ने बड़ौज को एक बार देखा और फिर बोला, "आजकल यहां चोर बहुत घूम रहे हैं।"

आनेवाला पादरी हंस पड़ा और बोला, "बताओ, यह सामान कहां पर रखवाना है।"

वह बड़ौज को उसी मकान में ले गया जहां से स्वयं आया था। आगे-आगे स्थानीय पादरी था। पीछे-पीछे बड़ौज सामान उठाए हुए। उसके पीछे बाहर से आनेवाला पादरी।

एक सुसज्जित कमरे भें सामान रखा गया। बड़ौज ने सलाम किया और वह बाहर को चल पड़ा। वह मकान की सीढ़ियां उतर रहा था कि कमरे में दोनों पादरियों के हंसने का शब्द सुनाई दिया।

बड़ौज पादरी से नौकरी के विषय में कहना चाहता था, परन्तु स्थानीय पादरी की त्यौरियां देखकर वह चुप ही रहा। फिर किसी दिन बात करने के विचार से वह वहां से चल पड़ा।

बरामदे से निकल गिरजाघर के बाहर खुले मैदान से गुज़रता हुआ वह फाटक की ओर जा रहा था कि उसको पीछे से आवाज़ सुनाई दी, "कुली! कुली!"

बड़ौज ने घूमकर देखा, स्थानीय पादरी अपने हाथ के संकेत से उसको वापस बुला रहा था। वह लौट पड़ा।

जब बह बरामदे में खड़े पादरियों के समीप पहुंचा तो स्थानीय पादरी ने पूछा, "क्या मज़दूरी चाहिए?"

"कुछ नहीं, फादर!"

"क्यों?"

"फादर के पास देने के लिए पैसा नहीं है।"

"तुम ईसाई हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां।"

"इस प्रकार मज़दूरी कर कितना नित्य कमा लेते हो?"

"चार-पांच आना तक।"

"आज अभी तक कितना पैदा किया है?"

"अभी तो कुछ भी नहीं हुआ।"

"खाना खाओगे?"

बड़ौज ने प्रातः से अब तक कुछ खाया नहीं था। इससे वह उसका मुख देखता रहा। पादरी ने उसे चुप देख कहा, "अभी यहीं ठहरो। भोजन कर लो, फिर बाद में और बात करेंगे।"

बड़ौज बैठने के लिए स्थान ढूंढने लगा था। पादरी ने बरामदे में रखी एक कुर्सी की ओर संकेत कर कहा, "उसपर बैठ जाओ ।"

बड़ौज अपने मैले कपड़ों और साफ-सुथरी कुर्सियों में अन्तर देख बैठने में झिझक अनुभव कर रहा था। पादरी ने उसे बांह से पकड़ते हुए कहा, "आओ भाई! बैठ जाओ। भोजन में अभी कुछ समय है।"

बड़ौज बैठ गया तो दोनों पादरी भीतर चले गए। समय पर बड़ौज को भीतर बुलाया गया और उसको वाश-वेसिन में हाथ और मुख धोने के लिए कहा गया। फिर उसको उसी मेज़ पर खाने के लिए बिठाया गया, जिसपर वे दोनों और एक अंग्रेज़ औरत बैठे थे।

बड़ौज संकोच से बैठ रहा था और उसने भोजन भी संकोच से ही किया। भोजन के बाद पुनः हाथ धोए गए। फिर स्टेशन से आने-वाले पादरी दे पूछा, "क्या नाम हैं तुम्हारा?"

उसने स्टोप्सगंज के पादरी का दिया हुआ नाम बता दिया, "बड़ौज ग्रीन।"

"बपतिस्मा कहां मिला था ?"

"स्टोप्सगंज में।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम नाग हो?"

"जी।"

"नौकरी करोगे?"

यह बात बड़ौज के मन की थी उसने सिर हिलाकर स्वीकार किया, तो पादरी ने पूछ लिया, "क्या वेतन लोगे?"

"जिससे रोटी-कपड़ा चल सके।"

"क्यों, विवाह इत्यादि नहीं करोगे क्या?"

बड़ौज अपनी बात बताना नहीं चाहता था। इस कारण मौन उसका मुख देखता रहा।

"तुम्हारे पास कुछ सामान आदि है? मेरे साथ शिलांग चलना होगा।"

"जो कुछ इस शरीर पर है, इसके अतिरिकत अन्य कुछ नहीं है।"

"तो ठीक है, चलो चलें।"

इसपर दूसरे पादरी ने अंग्रेज़ी में कहा, "यह व्यक्ति सन्देहात्मक चरित्र का प्रतीत होता है। मैं तो आपको इसे नौकर रखने की राय नहीं दूंगा।"

इसपर उस औरत ने अंग्रेज़ी में कहा, "दुर्भाग्य से मैं एक नाग औरत को नौकर रख बैठी थी। छः मास की नौकरी के बाद जब मैं उसपर विश्वास करने लग गई तो मेरा सब कुछ लेकर वह भाग गई।"

बड़ौज उनकी बातों को सुन रहा था और वह कुछ-कुछ भाव भी समझ रहा था। वह अंग्रेज़ी में बात तो नहीं कर सकता था, इसपर भी उनकी बातचीत में से स्टील, नाग गर्ल, रन अवे इत्यादि शब्दों से समझ गया कि वे उसपर चोर होने का संदेह कर रहे हैं। किसी अन्य परिस्थिति में तो वह दो-चार जली-कटी सुनाकर चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देता। परन्तु किसी पादरी की नौकरी में जाने की बात उसके मन में समाई हुई थी। इसीसे वह बिन्दू को पाने की आशा लगाए हुए था। अत: उसने तीनों को सम्बोधित कर कहा, "सर! मैं आपके वार्तालाप का अर्थ समझ रहा हूं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि नाग लोग चोर नहीं हैं। वे योद्धा होते हैं। योद्धा कभी चोर नहीं होता।

"जिस लड़की की बात ये मेमसाहब कर रही हैं, उसका अवश्य किसी गोरे से प्रेम हो गया होगा और उसके कहने पर ही उसने चोरी की होगी। प्रेम तो मनुष्य को अन्धा बना देता है।"

पादरी इस कुली के मुख से एक सिद्धान्त की बात सुनकर चकित रह गया। उसने कुछ देर तक उसके मुख पर देखकर पूछ लिया, "तो तुम अंग्रेज़ी पढ़े हुए हो?"

"नहीं, मेरी पत्नी अंग्रेज़ी पढ़ा करती थी। उससे कुछ शब्दों को सुन आपकी बात का अभिप्राय समझ गया हूं।"

"तो तुम विवाहित हो?"

"जी।"

"कहां है तुम्हारी पत्नी?"

"एक गोरे पादरी के साथ भाग गई है।"

इससे तो पादरी इस युवक की ओर देखता रह गया। फिर उसने बात बदलते हुए कहा, "ये यहां के स्कूल की मुख्याध्यापिका हैं। बहुत भली औरत हैं। इनकी बात झूठ नहीं हो सकती। परन्तु मैं इन्हें बता रहा था कि तुम ईमानदार व्यक्ति प्रतीत होते हो। साथ ही मेरे पास कभी कुछ अधिक तो रहता नहीं, जो कोई चुराकर ले जाए।...अच्छा तुम पांच मिनट में तैयार हो जाओ। शिलांग के लिए डाक की बस दो बजे जाती है।"

बड़ौज और पादरी बस में साथ-साथ बैठे थे। दोनों मार्ग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें करते रहे। इन बातों में पादरी ने बताया, "मैं कलकत्ता के आर्चविशप का प्राइवेट सेक्रेटरी हूं। कलकत्ता के अधीन बंगाल, असम और बर्मा है। आजकल मैं असम प्रान्त के दौरे पर चला हुआ हूं। मुझे किसी सुदृढ़ और बहादुर युवक की आवश्यकता थी। मुझे आशा है कि तुम मेरा कार्य कर लोगे।

बड़ौज ने भी अपना पूर्ण इतिहास उसको बता दिया। साथ ही उसने यह भी बताया कि वह अपनी पत्नी को ढूंढ़ने के लिए निकला हुआ है। पादरी ने पूछा, "क्या करोगे ढूंढ़कर?"

"मेरा विश्वास है कि झूठे प्रलोभन देकर उसका मास्टर उसको भगाकर ले गया है। मेरा मन यह भी कहता है कि अब तक वह अपनी भूल समझ गई होगी। मैं उसको इस अवस्था से निकालना चाहता हूं।"

आर्चबिशप के प्राइवेट सेक्रेटरी का नाम रेवरेंड सैमुएल पार्ल था वह रोमन कैथोलिक मताबलम्बी होने के कारण विवाहिता स्त्री के पतित होने को बहुत बड़ा पाप मानता था। इसी कारण उसने उस स्कूल मास्टर का नाम पूछा जो बड़ौज की पत्नी बिन्दू को भगा-कर ले गया था। बड़ौज ने कह, "उसका नाम सैमुएल स्टीवन्सन था।"

"स्टीवन्सन!" विस्मय से पार्ल के मुख से निकल गया।

रेवरेंड पार्ल ने डाक्टर चैस्टर बावेल को सैमुएल स्टीवन्सन और बिन्दू की कहानी बताई तो उसकी खोज आरम्भ हो गई। स्टोप्सगंज से पता चला कि वह शिलांग में होने वाली मिशन-कांफ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए गया था और वहां से वह फिर लौटा नहीं। बम्बई से उसका पत्र आया था कि वह इंगलैंड जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिन्दू के विषय में सूचना मिली कि वह नाबालिग थी और उसने तथा उसके पति ने झूठ बोलकर कि वे बालिग हैं, विवाह रजिस्टर करवा लिया था। बाद में जब विदित हुआ कि वे नाबालिग हैं तो दोनों का विवाह नाजायज़ मान लिया गया। यह आशा की जा रही थी कि जब वे दोनों वयस्क हो जाएंगे तब विवाह स्वयमेव नियमानुकूल हो जाएगा, परन्तु उससे पूर्व ही मास्टर स्टीवन्सन उसको अपनी प्राइवेट सेक्रेटरी बनाकर कान्फ्रेंस में ले गया।

साथ ही यह समाचार मिला कि बिन्दू एक सुन्दर गौरवर्णीय लड़की है और स्टीवन्सन उसके सम्मोहन में ग्रस्त प्रतीत होता है।

कैथोलिक चर्च द्वारा ही इंग्लैण्ड में स्टीवन्सन का पता मालूम किया गया, और उसके विषय में जानकारी प्राप्त की गई। स्टीवन्सन के बैंक से विदित हुआ कि वह भारतवर्ष में कुल्लू के समीप मनाली नाम के स्थान पर रहता है; और नियम से प्रति छः मास में उसके पास रुपया जाता रहता है।

आर्चबिशप ने उसको पत्र लिखा कि जब से वह स्टोप्सगंज से आया है, उसका पता मालूम नहीं हुआ। इस समय 'चर्च' को उस जैसे योग्य और लगन से कार्य करनेवाले युवकों की सेवाओं की बहुत आवश्यकता है। क्या वह बता सकता है कि उसकी रुचि अब इस काम की ओर है, अथवा नहीं?

इसके उत्तर में स्टीवन्सन ने लिखा—

"डियर फादर,

मैंने विवाह कर लिया है और यहां आनन्द से विवाहित जीवन व्यतीत कर रहा हूं। यहां पहाड़ी लोगों में मैं धर्म-कार्य भी कर रहा हूं। अब यहां से हिन्दुस्तान के धूल-धूसरित और धूप से जलते हुए मैदानों में जाने को जी नहीं करता। यदि इस ओर का कोई कार्य हो तो करूंगा। अभी तक मैं और पत्नी यहां एक स्कूल खोले हुए हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और इन सर्वथा असभ्य पहाड़ी गद्दी लोगों में सभ्यता और शिक्षा का प्रसार कर रहे हैं।"

अब आर्चबिशप डाक्टर बावेल और रेवरेंड सैमुएल पार्ल में विचार-विनिमय होने लगा कि मिस्टर ग्रीन को उसकी पत्नी का पता बताया जाय अथवा नहीं। मानवता के नाम पर बातचीत होती थी। रेवरेंड पार्ल का कथन था, "मानवता के नाते बिन्दू बड़ौज को मिल जानी चाहिए। यदि वह उसके पास न रहना चाहे तो फिर उसकी इच्छा है। उस स्थिति में वह आर्चबिशप पोप से सिफारिश कराकर उसका विवाह रद करवा दे और स्टीवन्सन को उसके साथ नियमित-रूपेण विवाह कर लेने की स्वीकृति दी जाए।"

आर्चबिशप को इस योजना में दो बातें सन्देहजनक प्रतीत होती थीं। एक बड़ौज अपने मनोद्गारों को वश में नहीं रख सकेगा और बीवी को देखते ही उसमें अपने बाप-दादाओं का रक्त खौल उठेगा। वह बिन्दू पर और, सम्भव है, स्टीवन्सन पर घातक आक्र-मण कर बैठे।

दूसरी बात यह थी कि एक स्त्री जिसपर प्रभु की कृपा हो चुकी है, और वह भगवान के प्रकाश का ज्ञान पा चुकी है, पुनः वनवा-सियों के असभ्यतापूर्ण व्यवहार में रत हो जाएगी। वह प्रकाश से पुनः अज्ञान के अंधेरे में चली जाएगी। यह तो एक भारी पाप हो जाएगा।

इस प्रकार दो बड़े पादरियों में वाद-विवाद चलता रहा। और बड़ौज अपने स्वामी के साथ बंगाल, बिहार, असम और वर्मा के देशों में घूमता रहा। इस सब समय में आर्चबिशप का प्राइवेट सेक्रे-टरी रेवरेंड पार्ल मिस्टर स्टीवन्सन से पत्र-व्यवहार करता रहा। वह उससे गहरे सम्बन्ध पैदा करने का यत्न करने लगा।

साथ ही वह स्टीवन्सन को अपने धर्म-सम्बन्धी कार्यों के विषय में लिखते रहने के लिए प्रोत्साहित करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार सन् 1929 आ गया। इस समय बड़ौज को विवाह कर लेने के लिए कहा गया। असम की पहाड़ी लड़कियों से उसका सम्पर्क स्थापित करवाया गया। विचार यह था कि यदि वह भी विवाह कर किसी स्थान पर रहने लगे तो दो परिवार प्रभु की कृपा के पात्र बन जाएंगे।

इन दिनों रेवरेंड पार्ल को शिलांग में स्थायी रूप से पादरी और प्रॉक्टर नियुक्त कर दिया गया था। बड़ौज उसके साथ वहीं पर था। वहां खासी जाति की कई लड़कियों ने उसके साथ विवाह का यत्न किया, परन्तु बड़ौज सदा ही इनकार कर देता था। एक बार रेवरेंड पार्ल ने बड़ौज को बुलाकर कहा, "अब तुम पढ़-लिखकर ज्ञानवान हो गए हो। तुमको जीवन में स्थिरता प्राप्त करने के लिए विवाह कर कोई पक्का काम करने लगना चाहिए।यदि तुम चाहो तो, मिस सील का पिता आया था और वह तुमसे अपनी लड़की का विवाह करना चाहता है। मिस सील कान्वैंट स्कूल में पढ़ाती है। तुमको भी वहां पढ़ाने का काम मिल सकता है।"

"परन्तु फादर! मुझे विवाह नहीं करना। यदि आप मुझे अपने काम से निकालना चाहते हैं तो बता दीजिए। मैं चला जाऊंगा।"

"यह बात नहीं, ग्रीन! मैं समझता हूं कि जब तक तुम विवाह कर पिता नहीं बन जाते, तुम उस बिन्दू का विचार नहीं छोड़ सकोगे। भगवान जाने वह कहां है, क्या करती है, किसके पास रहती है!"

"मैं नित्य स्वप्नों में उससे मिलता रहता हूं और कभी-कभी तो वह मुझे बहुत दु:खी प्रतीत होती है।"

"यह सब मानसिक भ्रान्ति है। स्वप्नों पर तो मुर्खों का ही जीवन चल सकता है।"

"तो फिर मैं जाऊं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मेरा यह अभिप्राय नहीं। यों तो तुम मेरे लिए भी बहुत लाभकारी सिद्ध हो रहे हो।"

बड़ौज अब बाइबल का ज्ञाता हो गया था और रेवरेंड पार्ल के स्थान पर, कभी गिरजाघर में सरमन भी दिया करता था। उसकी बाइबल और विशेष रूप में 'सरमन ऑन दी माउण्ट' पर विवेचना बहुत ही सुन्दर हुआ करती थी।

एक दिन रेवरेंड पार्ल के नाम एक बड़ा सा लिफाफा आया लिफाफा रजिस्टर्ड था। भेजने वाले का नाम लिखा था सैमुएल स्टीवन्सन और पता था 'बिन्दू ग्रोव, मनाली, कुल्लू (कांगड़ा), पंजाब।'

स्टीवन्सन और बिन्दू का नाम पढ़कर बड़ौज का हाथ कांपने लगा। उसके हृदय की गति तीव्र हो गई। हस्ताक्षर कर डाकिये से रजिस्ट्री ले वह भीतर के कमरे में आकर विचार करने लगा कि यह क्या है, क्यों है और क्या वह इस लिफाफे को खोलकर देख ले?

वह मन में विचार करता था कि यदि ये स्टीवन्सन और बिन्दू वही हैं जिनकी वह खोज कर रहा है, तो उनका पता रेवरेंड पार्ल को था। इसपर भी उसने उसे बताया नहीं।

एक बार तो उसके मन में विचार आया कि चिट्ठी खोल ले। परन्तु अगले ही क्षण उसने यह निश्चय कर लिया कि वह बिना खोले यह लिफाफा रेवरेंड को दे दे और फिर उसको अपने मन का संशय बताकर उससे पूछे। पत्र खोलने से तो वह चोर बन जाएगा। वह सदा पार्ल को कहा करता था—'वनवासी चोरी नहीं करते। वे किसी दूसरे की स्त्री का अपहरण नहीं करते। स्त्रियां प्रायः अर्धनग्न रहती हैं, इसपर भी बलात्कार की घटनाएं नहीं होतीं।' बड़ौज का कहना था कि यह सब दुर्गुण तो नगरों की सभ्यता के हैं।

पार्ल कहता था कि अच्छे-बुरे लोग तो सभी स्थानों पर होते हैं; परन्तु बड़ौज इस बात को नहीं मानता था। अब वह विचार करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था कि वह इस लिफाफे को खोल देगा तो वह चोर बन जाएगा और अपने को अपने इस व्यवहार से झूठा सिद्ध कर देगा।

यह तो वनवासियों की मान-मर्यादा का प्रश्न था। इस कारण वह उस पत्र को खोलता-खोलता रुक गया। अन्य पत्रों के साथ उसने वह लिफाफा भी रख दिया और धैर्य पूर्वक रेवरेंड पार्ल की प्रतीक्षा करने लगा।

पार्ल कहीं बाहर निरीक्षण के लिए गया हुआ था। वह तीन दिन तक नहीं आया। जब वह आया तो बड़ौज ने सारी डाक उसके सम्मुख रख दी। डाक देकर वह प्रतीक्षा में उसका मुख देखता रहा।

रेवरेंड ने एक-एक कर सारी डाक खोलकर पढ़ी और उसमें से कई पत्र बड़ौज को उत्तर लिखने के लिए दे दिए। जब उस रजिस्ट्री लिफाफे की बारी आई तो उसके आने के स्थान को पढ़कर पार्ल एक क्षण तक विचार करता रहा। फिर उसने उस पत्र को एकान्त में देखने के लिए एक ओर रख दिया। बड़ौज को आभास मिल गया कि उस पत्र को एक ओर रखते समय पार्ल के हाथ कांप रहे थे और चौर्य दृष्टि से वह बड़ौज की ओर देख भी रहा था।

जब सब डाक देखी जा चुकी तो पार्ल ने वह बन्द लिफाफा और कुछ खुले पत्र उत्तर देने के लिए अपने पास रख लिए थे। उन्हें उठाकर वह अपने सोने के कमरे की ओर चल पड़ा।

उसके इस व्यवहार से बड़ौज के सन्देह की पुष्टि होती गई। उसने भी इस विषय में अपना व्यवहार निश्चय करने के लिए एकान्त में जाना उचित समझा। वह अपने कमरे में जा अपने पलंग पर लेटकर विचार करने लगा। उसको विश्वास नहीं आता था कि रेवरेंड पार्ल सदृश धर्मात्मा व्यक्ति इतने काल तक झूठ बोलकर उसको भ्रम में डाल सकता है। इसपर भी इस रजिस्टर्ड पत्र के विषय में पार्ल के व्यवहार ने उसको संदेह में डाल दिया था। सैमुएल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टीवन्सन और बिन्दू, इन दो नामों का एकसाथ होना घटना-मात्र भी हो सकती है और इस प्रकार ये कोई अन्य लोग भी हो सकते हैं। इसपर भी उसका मन कहता था कि वह उसकी बिन्दू और उसके प्रेमी का ही पत्र है।

उसने अपनी इस शंका का समाधान करने का अपने मन में निश्चय कर लिया। वह रात्रि के भोजन के समय की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगा। उस समय वे दोनों एकसाथ बैठकर भोजन किया करते थे।

आज भोजन के समय कुछ अन्य लोग भी आमन्त्रित थे। मिस नेमी सील और उसका पिता जैकब सील भी आए हुए थे। एक अन्य दम्पती भी थे। इस प्रकार छः व्यक्ति भोजन के लिए बैठे थे।

भोजन में इधर-उधर की बातें होती रहीं। मिस सील मिस्टर ग्रीन से बातें करती रही। वह यत्न कर रही थी कि बड़ौज उसको 'प्रपोज़'[1] करे। आज वह अपने सर्वोत्तम पहरावे में थी और उसने श्रृंगार भी कौशल से किया हुआ था।

बड़ौज का मन उसमें नहीं अटका, वह तो बिन्दू पर लगा हुआ था। आज उसके मन में अन्य कोई विचार आ ही नहीं रहा था। उसका विचार था कि भोजन के समय वह उस रजिस्टर्ड पत्र की चर्चा चलाएगा। परन्तु चार बाहर के व्यक्तियों को देखकर उसने यह उचित नहीं समझा। भोजनोपरान्त रेवरेंड और दोनों अन्य पुरुष, बातें करते-करते बरामदे में चले गए। बड़ौज भी उनके पीछे जाना चाहता था, परन्तु मिस सील निर्णयात्मक बात करने के लिए उसके साथ-साथ चलती हुई कहने लगी, "मिस्टर ग्रीन! मैं आज आपसे एक विशेष बात करने के लिए आई हूं।"

1. विवाह के लिए प्रस्ताव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ौज ठहर गया। प्रश्न-भरी दृष्टि से वह उस लड़की की ओर देखने लगा। उसके इस प्रकार देखने पर मिस सील ने कहा, "आइए, तनिक लॉन के एकान्त में चलते हैं।"

बड़ौज समझता तो था, किन्तु अपने मुख से वह बताना नहीं चाहता था कि उसको उसकी बात का ज्ञान है। इस कारण उसने कह दिया, "ठीक है, रात भी बहुत सुन्दर है, चांदनी छिटकी हुई है।"

दोनों बरामदे से निकल गिरजाघर के सामने वाले घास के मैदान में चले गए। वहां टहलते हुए बड़ौज ने पूछ लिया, "कहिए, मिस सील! क्या कहना चाहती हैं आप?"

"फादर पार्ल ने आपके साथ मेरे विषय में कोई बात की है क्या?"

"हां, की तो थी, परन्तु मैंने उसका उत्तर उसी समय दे दिया था।"

"मैं वह उत्तर सुनने को बहुत उत्सुक हूं।"

"देखिए मिस सील! मेरा विवाह हो चुका है। वह विवाह कैथोलिक चर्च में हुआ था। जब तक उसका मुझसे तलाक स्वीकार नहीं हो जाता, तब तक मैं दूसरा विवाह नहीं कर सकता।"

"वह विवाह तो रद्द हो गया है। आप दोनों उस समय अल्प-वयस्क थे। आपको विवाह करने का अधिकार ही नहीं था।"

"मुझको इस विषय में कोई सूचना नहीं मिली।"

"इसकी आवश्यकता नहीं। यदि आपने झूठ बोलकर किसी मजिस्ट्रेट के सामने विवाह किया होता तो आपपर सरकार मुकदमा चलाती और आपको दण्ड मिलता। परन्तु गिरजाघर में ऐसा नहीं होता। वहां झूठ बोलने का दण्ड नहीं मिलता । वहां तो प्रायश्चित्त ही करना पड़ता है। वह आपको अगले विवाह से पूर्व करने के लिए कह दिया जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किन्तु मुझे विश्वास है कि मेरी पत्नी अभी तक मेरी प्रतीक्षा में बैठी है।"

"आप किस प्रकार जानते हैं यह?"

"मेरा मन इस बात का साक्षी है।"

"यही तो इग्नोरेंस[1] है! स्वप्न की बातों पर विश्वास पढ़े-लिखे लोग नहीं करते।"

"मैं अपनी गिनती पढ़े-लिखों में नहीं करता।"

"यदि आपको यह विश्वास हो जाए कि आपकी पत्नी अपने पति के साथ सुखी है, तो फिर आप मुझसे विवाह की स्वीकृति दे देंगे?"

बड़ौज इस प्रश्न पर गम्भीर हो गया। उसकी समझ में कुछ इस प्रकार आया कि आज के खाने पर मिस सील और उसके पिता का आना और आज के आए रजिस्टर्ड पत्र का परस्पर कुछ सम्बन्ध है।

वह प्रश्न-भरी दृष्टि से सामने खड़ी लड़की के श्रृंगारयुक्त मुख को देखता रह गया। नेमी सील मुस्कराती हुई उसकी ओर देख रही थी। बड़ौज ने उसको इस मुद्रा में देखकर पूछ लिया, "तुम यह सब कैसे जानती हो?"

"आपने इस बात का कोई पक्का प्रमाण नहीं दिया कि वह आपकी प्रतीक्षा कर रही है। उसकी अनुपस्थिति में मेरी धारणा ठीक है कि वह किसीके साथ बैठी सुख का भोग कर रही है।

"देखिए, दो समानान्तर रेखाएं मिलतीं नहीं। इसको सिद्ध करने के लिए हम मान लेते हैं कि वे मिल गई हैं। उनके मिलने से एक त्रिकोण बन जाता है, जिससे समानान्तर रेखाओं की दूसरी शर्त कि उनको काटनेवाली रेखा दोनों रेखाओं से समकोण बनाती

1. अज्ञानता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है, गलत हो जाता है। इससे हमारा मानना कि समानान्तर रेखाएं मिलती हैं,गलत सिद्ध हो जाता है।

"इसी प्रकार विवाह की बात है। पति-पत्नी परस्पर मिलते हैं। जो पति-पत्नी नहीं मिलते, वे समानान्तर रेखाओं की भांति नहीं मिलते। बिन्दू बड़ौज से नहीं मिलती, इससे सिद्ध होता है कि बिन्दू और बड़ौज समानान्तर रेखाओं की भांति अविवाहित हैं।"

बड़ौज हंस पड़ा। उसने कहा, "यह युक्ति ठीक नहीं है। कारण यह कि पति-पत्नी रेखाएं नहीं होतीं, वे सजीव प्राणी हैं। रेखाओं और मानवों में समानता नहीं होती।"

"तो आपको किस प्रकार विश्वास आएगा?"

"इसकी आवश्यकता ही क्या है?"

"आवश्यकता है मुझको आपसे विवाह करने की।"

"तो इस आवश्यकता के लिए अनिश्चित बात को निश्चित मान लेना चाहिए क्या ?"

"आप एक बात बताइए कि यदि कभी आपको विश्वास हो जाए कि आपकी बिन्दू विवाह कर चुकी है, तो आप मुझसे विवाह कर लेंगे? यदि आप इस बात का आश्वासन दें तो मैं प्रतीक्षा कर सकती हूं।"

"कब तक?"

"जीवन-पर्यन्त।"

"तो मैं एक आश्वासन दे सकता हूं। यदि मैंने कभी अपना दूसरा विवाह किया, तो मैं मिस नेमी सील से करूंगा।"

सील इस आश्वासन से सन्तुष्ट नहीं थी। इसमें दो बातें थीं। एक तो यह कि यदि वह दूसरा विवाह करेगा, तब की बात थी। दूसरे वह विवाह करेगा तो मिस नेमी सील से। अर्थात् कहीं भूल से वह मिस नहीं रही तो वह उससे विवाह नहीं करेगा। अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जीवन-भर अविवाहित रहे। इसपर भी उसमे इस आश्वासन के लिए बड़ौज को धन्यवाद दिया। अब उसने कुछ पांव फैलाने के लिए कह दिया, "मैं आश्वासन की गारंटी चाहती हूं।"

"क्या गारंटी चाहती हो?"

"एक लविंग किस[1]।"

"नहीं, यह समय से पूर्व है। इतना कह वह मकान की ओर लौट पड़ा। इससे तो मिस सील मृतिवत् उसको जाते देखती खड़ी रह गई।

अगले दिन रेवरेंड पार्ल बहुत प्रातःकाल एक आवश्यक काम से गौहाटी चला गया। सदा से भिन्न इस दिन वह अपने सोने के कमरे को ताला लगा गया।

रजिस्टर्ड पत्र के पार्ल के हाथ में जाने के समय से पार्ल का व्यवहार एक ही बात प्रकट करता था। वह यह कि उस पत्र का बड़ौज के साथ सम्बन्ध है; इससे ही उसको छिपाकर रखा जा रहा है। एक पत्र, जिसका भेजनेवाला सैमुएल स्टीवन्सन है, भला उसके साथ क्या सम्बन्ध रख सकता है, जिसमें बिन्दू नहीं।

इतना विचार कर वह इस विषय में अपने व्यवहार का निश्चय करना चाहता था। इस समय उसको वह पता स्मरण हो आया जो भेजनेवाले ने लिफाफे पर बायें हाथ की तरफ लिखा था। उन पिछले तीन दिनों में जब पार्ल दौरे पर था, वह यह पता पचास बार पढ़ चुका था। उसको यह कण्ठस्थ हो गया था।

उसने अपनी पॉकेटबुक निकाली और वह पता उसपर लिख

---

1. प्यार-भरा चुम्बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिया। पता था—सैमुएल स्टीवन्सन, बिन्दू ग्रोव, मनाली, कुल्लू, कांगड़ा।

अब उसके सामने दो मार्ग थे। एक, पार्ल के सोने के कमरे को कोई चाबी लगाकर खोल ले और उस पत्र को ढूंढ़कर पढ़ ले। दूसरे, तुरन्त उक्त पन्ने पर जा पहुंचे और अपनी आंखों से देख ले।

पहला मार्ग तो उसे चोरी प्रतीत हुआ। दूसरा मार्ग मानयुक्त था। परन्तु क्या वह बिना छुट्टी लिए वहां से जा सकता है?

दोनों अपराधों में बिना छुट्टी के जाना छोटा अपराध प्रतीत हुआ। इस कारण उसने जाना स्वीकार कर लिया।

इसके उपरान्त विचार करने की बात थी कि वह बताकर जाए अथवा अपने मालिक को बताए बिना जाए। इसमें नीति यह समझ आई कि बताए बिना जाना चाहिए।

इतना निर्णय कर उसने कार्यालय की और शेष मकान की चाबियां गिरजाघर के चौकीदार को देकर कह दिया, "मैं एक अत्यावश्यक कार्य से दो-तीन दिन के लिए जा रहा हूं। फादर से मेरे लिए छुट्टी मांग लेना।"

इतना कह वह अपना छोटा-सा बिस्तर और जितना भी धन उसके पास था, जेब में रख पंजाब चल पड़ा।

फरवरी मास का मध्य था। उस क्षेत्र में अभी तक बर्फ पड़ी हुई थी। सब ओर सफेद ही सफेद दिखाई देता था। भूमि, पेड़ पहाड़, और मकान सब बर्फ की श्वेत चादर ओढ़े प्रतीत होते थे। मनाली अति सुन्दर स्थान था। भ्रमण करनेवालों के लिए तथा अफसरों के लिए महकमा जंगल का एक डाकबंगला था। इस वादी में इस बंगले के अतिरिक्त केवल एक मकान और था, जो किसी पैसेवाले का प्रतीत होता था। इसके अतिरिक्त दो-तीन लकड़ी के खोखे-से खड़े थे, वे भी बर्फ से ढके थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ौज वहां पहुंचा तो कुली, जो उसका सामान उठाकर लाया था, उसे डाकबंगले के बाहर ले आया। इसको ताला लगा था और इसके वैरे तथा चौकीदार का कहीं चिह्न दिखाई नहीं देता था। कुली ने सुझाव दिया कि ताला तोड़ दिया जाए। बड़ौज ने कह दिया, "तोड़ डालो।"

ताला तोड़कर उसने डाकबंगले पर अधिकार कर लिया और सामान का ढेर जो यहां-वहां पड़ा हुआ था, कुली की सहायता से झाड़-पोंछकर लगा दिया गया। बड़ौज ने कुली को वहीं अपनी नौकरी में रह जाने के लिए राज़ी कर लिया।

भोजन की व्यवस्था एक समस्या थी। उन कुटियावालों से, जो डाकबंगले से कुछ अन्तर पर थी, सम्पर्क स्थापित किया गया। बर्फ के कारण वहां तक जाना कठिन तो था, परन्तु खाने के बिना रहना भी कठिन था। इसमें कुली भारी सहायक सिद्ध हुआ। एक रुपये की वस्तु के तीन-तीन रुपये देकर चावल, दाल, अण्डे, मुर्गी उपलब्ध किए गए; और कुली ही बड़ौज के लिए पाचक का काम करने लगा।

सूर्यास्त से पूर्व बड़ौज देख आया कि बस्ती में एक ही बंगला और है और उसका नाम बिन्दु ग्रोव है। उस बंगले में कोई रहने-वाला था तो, किन्तु उस समय बर्फ पड़ी होन के कारण सब मकानों के भीतर थे। खिड़की के भीतर प्रकाश से ही रहनेवालों के अस्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता था।

शेष जांच के कार्य को अगले दिन के लिए छोड़ वह डाकबंगले में लौट आया। उस मकान में सैमुएल स्टीवन्सन और बिन्दू ही रहते थे। इस समय बिन्दू के तीन बच्चे थे—एक लड़का ओर दो लड़कियां। लड़का सबसे बड़ा था और उसकी आयु इस समय छः वर्ष की हो गई थी। एक लड़की चार वर्ष की थी और एक तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अभी एक ही वर्ष की थी। रात के समय डाकबंगले के एक कमरे में प्रकाश देखा तो बिन्दू ने अपने पति से कहा, "कोई डाकबंगले में आकर ठहरा है।"

"हां, सायंकाल मैंने एक कुली को उस बंगले से उन झोंपड़ों की ओर जाते देखा था।"

"कोई जंगल का अफसर होगा।"

"अफसर इस ऋतु में मरने के लिए आएगा क्या! कोई बर्फ का दृश्य देखने का शौकीन प्रतीत होता है।"

"परन्तु बर्फ देखने के लिए इतनी दूर आने की क्या आवश्यकता है?"

"यहां 'ग्लेशियर' का भव्य दृश्य भी तो है।"

"प्रात:काल उससे मिलने का यत्न करिए। अगर कोई भला व्यक्ति हुआ तो कम्पनी का लाभ उठाएंगे।"

"हां देखूंगा, उसके बाद ही उसे यहां लाने का निर्णय किया जाएगा।"

अगले दिन स्टीवन्सन को डाकबंगले में जाकर नये आए व्यक्ति से मिलने का कष्ट नहीं करना पड़ा। बड़ौज तो प्रकाश होते ही बिन्दू ग्रोव के बाहर चक्कर काटने लग गया था।

सबसे पहले बिन्दू कोठी के बाहर निकल आकाश की ओर देख उस दिन की ऋतु का अनुमान लगाने लगी थी आकाश साफ था। इससे धूप होने का अनुमान होने लगा। वह प्रसन्न थी इस समय एक हिन्दुतानी यूरोपियन पोशाक पहने, हाथ में नोकदार छड़ी से मार्ग टटोलते हुए कोठी के बाहर से गुज़रता दिखाई दिया। वह अभी विचार ही कर रही थी किस प्रकार इस अपरिचित व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पता करे कि वह कौन है और किसलिए यहां आया है कि वह व्यक्ति कोठी के भीतर आता दिखाई दिया।

स्टीवन्सन अभी सो रहा था। यदि जगता होता तो वह उसको बुला लाती और इस व्यक्ति से बातचीत करती। इस वीरान स्थान पर और इस ऋतु में किसी सभ्य व्यक्ति के दर्शन एक अति अप्रत्याशित बात थी। इस कारण बिन्दू वहां बरामदे में खड़ी-खड़ी उस आदमी के पहुंचने की प्रतीक्षा करती रही।

बिन्दू के मस्तिष्क में जो बड़ौज का चित्र था वह एक मकान बनानेवाले मिस्त्री का था, जो सप्ताह में एक बार हजामत बनाता था। उसकी छोटी-छोटी मूंछें थीं, सिर के बाल विचित्र थे। वह लुंगी और कुर्ता पहनता था और प्रायः पांव से नंगा होता था। बिन्दू उस बड़ौज को, उस सूट, टाई, कालर, हैट, बुट और फिर बढ़िया ओवर-कोट पहने व्यक्ति को पहचान न सकी। यह व्यक्ति तो 'क्लीनशेव्ड' था। अभी-अभी हजामत बनाकर आया प्रतीत होता था। सिर के बाल पढ़े-लिखे लोगों की भांति कटे थे। पांव में भी बहुत बढ़िया चमड़े का जूता था। वह बड़ौज को पहचान नहीं सकी। बड़ौज ने तो उसको कोठी के बाहर से ही देखा और पहचान लिया था। वह अभी अपने को प्रकट करना नहीं चाहता था, परन्तु जब उसको ज्ञात हुआ कि वह अपनी खोज का ध्येय पा गया है तो वह बिना इच्छा तथा प्रयास के ही उसकी ओर खिंचा चला आया था।

जब बड़ौज बिन्दू के सामने आकर खड़ा हुआ तो उसके मुख से निकल गया, "क्या आप श्रीमती स्टीवन्सन हैं?" यह उसने अंग्रेजी में पूछा था।

"गुडमार्निंग।" बिन्दू ने कहा और फिर बोली, "हां, मैं मैडम स्टीवन्सन हूं। क्या काम है कहिए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ौज समझ गया कि उसने अभी उसको पहचाना नहीं। इससे उसने बात बनाने के लिए कह दिया, "मैं कल यहां पहुंचा था। मैं यहां बर्फ का दृश्य देखने के लिए आया हूं। डाकबंगले में ठहर गया था! इस जनशून्य स्थान में इन्सान की सूरत देखकर मिलने की स्वाभाविक इच्छा से आपको देखकर भीतर चला आया हूं। उन कुटियावालों से कल यहां रहनेवाले सज्जन का नाम पता चला था। क्या मैं उनसे मिल सकता हूं?"

"वे अभी सो रहे हैं। आप बैठिए, अभी चाय बन जाएगी, तब तक वे भी जाग पड़ेंगे।"

यही तो बड़ौज चाहता था। जब तक बिन्दू उसको कोठी के ड्राइंगरूम में लेकर गई, बड़ौज ने निश्चय कर लिया कि वह अभी अज्ञात ही रहेगा। वह अपना परिचय तब तक नहीं देगा, जब तक वह उसको पहचान नहीं जाती और इस अज्ञात अवस्था में ही वह बिन्दू के मन की अवस्था जानने का यत्न करेगा।

बिन्दू ने उस आगन्तुक को बिठाकर पूछा, "आप कहां से आए हैं?"

बड़ौज ने इस ढंग से परिचय देना चाहा जिससे न तो उसे झूठ बोलना पड़े और न ही अभी बिन्दू उसको पहचान सके। उसने बताया—

"मैं बिज़नेसमैन हूं। मेरा कारोबार कलकत्ता, पटना, गौहाटी, शिलांग में है। इस वर्ष काम से पंजाब आया था तो किसीने इस स्थान के सौन्दर्य और ग्लेशियर के दृश्य की बहुत प्रशंसा की। अतः यहां आ पहुंचा हूं। इस समय इधर कोई आता नहीं। बहुत कठिनाई से तो कुली मिला। और फिर डाकबंगले का चौकीदार नहीं था। ताला तोड़कर उसमें ठहर गया हूं।

"मैं मिस्टर स्वीवन्सन से मिलना चाहता था। जस्ट फॉर दि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैक ऑफ सिविलाइज़्ड कम्पनी[1] ?"

"कितने दिन ठहरने का विचार है?"

"एक सप्ताह तो रहूंगा ही।"

"यह तो बहुत अच्छा रहेगा।"

इस समय बिन्दू की नौकरानी आई और उसको चाय बनाने के लिए कह दिया गया। जब वह चली गई तो बिन्दू ने पूछ लिया, "आपका शुभ नाम क्या था?"

"वी॰ जी॰ विलमौर।"

"आप तो हिन्दुस्तानी प्रतीत होते हैं?"

"हां, मेरा नाम विधि गिरीश है और विलमौर मेरा ईसाई होने का नाम है।"

"तो आप ईसाई हैं?"

"हां, रोमन कैथोलिक।"

"यह तो और भी अच्छा है।"

"क्यों, आप भी रोमन कैथोलिक हैं?"

"हां, और नहीं भी। हमारा चर्च तो यही है, परन्तु हम लोग बेमज़हब हैं।"

"क्यों?"

"हमने कभी इस विषय में विचार ही नहीं किया और फिर कुछ और भी बात है।"

"वह बताने की नहीं है क्या?"

"हां, मज़हब का सम्बन्ध मनुष्य की अन्तरात्मा से होता है। अभी तक यह ईसाइयत मेरी आत्मा को छू नहीं सकी।"

"सत्य···?

---

1. किसी सभ्य व्यक्ति की संगति के विचार से ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय मिस्टर स्टीवन्सन नाइट-सूट पर गाउन पहने हुए सोने के कमरे से बाहर निकल आया। बिन्दू ने परिचय करा दिया, "हियर इज़ माई हसबैंड मिस्टर स्टीवन्सन"[1] ।"

बड़ौज ने उठकर हाथ मिलाते हुए कहा, "मैं हूं वी॰ जी॰ बिल-मौर, कलकत्ता का रहनेवाला हूं।"

"स्टीवन्सन इस नये आनेवाले व्यक्ति को बड़े ध्यान से देख रहा था। उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि वह व्यक्ति देखाभाला है। परन्तु बहुत अधिक यत्न करने पर भी ऐसे आधुनिक परिधान में किसी ऐसे व्यक्ति को स्मरण नहीं कर सका, जिसको उसने कहीं देखा हो। इसके अतिरिक्त इस व्यक्ति का अंग्रेज़ी बोलने का ढंग सर्वथा 'ऑक्सोनियन' था। जब वह बहुत यत्न करने पर भी स्मरण नहीं कर सका तो बैठते हुए उसने कहा, "मैं विचार कर रहा था कि आपके कहीं दर्शन हुए हैं।"

"आप कभी कलकत्ता, पटना, गौहाटी इत्यादि स्थानों पर गए हैं?"

"कलकत्ता तो कई बार गया हूं।"

"तो फिर वहीं भेंट हुई होगी।"

बात समाप्त हो गई। इसी समय नौकरानी चाय लेकर आ गई। स्टीवन्सन ने कहा, "आज का दिन बहुत अच्छा प्रतीत हो रहा है। यदि आपको स्केटिंग का शौक हो तो हम आपको स्केट्स दे सकते है; और फिर बहुत मज़ा रहेगा।"

"मुझे भी प्रसन्नता होगी और मैं आपका आभारी रहूंगा।"

"आपके भोजन का क्या प्रबन्ध है?"

"उन झोंपड़ियों में से आटा, दाल, चावल, अण्डे, मुर्गी इत्यादि

1. आप हैं मेरे पति स्टीवन्सन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुली ले आया था, वह बना रहा होगा।"

"डाकबंगले का खाना नहीं खाया?"

"वहां कोई है ही नहीं। मैं तो ताला तोड़कर वहां पर घुसा बैठा हूं।"

"ठीक किया है। रहीम, मेरा मतलब है, वहां का खानसामा अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए कुल्लू गया होगा। आए तो उसको यहां भेज दीजिएगा, हम उसे समझा देंगे।"

इसपर बिन्दू ने कह दिया, "आप अपना खाना उठवाकर यहां ले आइएगा, यहां एकसाथ बैठकर खाएंगे और अभी एक घंटे में स्केटिंग के लिए चलेंगे।"

"मैंने कभी स्केटिंग की नहीं। आशा है, आप मेरे भद्दे खेल पर अच्छी प्रकार हंस पाएंगे।"

"श्योर[1]।" बिन्दू ने मुख गोल करके कहा।

बड़ौज देख रहा था कि बिन्दू पहले से कुछ अधिक ही सुन्दर हो गई है। हंसते समय उसके लाल अधरों में से अनार के दानों की भांति दांत अति लुभायमान प्रतीत हुए थे।

बिन्दू का यह कथन कि ईसाइयत उसकी अन्तरात्मा को छू तक नहीं गई, उसके मन में एक विशेष प्रकार की गुदगुदी उत्पन्न करनेवाला सिद्ध हुआ था। बड़ौज डाकबंगले में वापस आ गया। वहां बंगले का खानसामा कुली से झगड़ा कर रहा था। वह कुली को कह रहा था, "यह ताला क्यों खोला है?"

कुली, जो मुर्गी को छीलकर बनाने के लिए तैयार कर रहा था, कह रहा था, "मैं कुछ नहीं जानता। साहब सामनेवाले बंगले में गए हैं, आएंगे तो पूछ लेना।"

1. अवश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब बड़ौज वहां पहुंचा तो खानसामा कह रहा था, "साहब! साहब!! मैं कुछ नहीं जानता किसीको। उठाओ सामान और निकलो बाहर, नहीं तो पुलिस के हवाले कर दूंगा।"

"बाबा! वो साहब आ गए। उनको निकाल दो, मैं तो नौकर आदमी हूं।"

बड़ौज ने आते ही पूछा, "क्या है?"

"तो यह ताला आपने खोला है?"

"खोला नहीं, तोड़ा है। तुम कौन हो?"

"मैं यहां का चौकीदार हूं।"

"कौन कहता है, तुम चौकीदार हो! हमें तो कोई चोर मालूम देते हो।"

"चोर? मैं? तो पुलिस में जाना पड़ेगा?"

"पुलिस में जाने की ज़रूरत नहीं। यहां तुमको कोई जानता है? चलो उन बंगलेवालों से पुछवा दो कि तुम चौकीदार हो। अरे भाई! चौकीदार होते तो रात को यहां मौजूद होते। हमने तो परसों तुमको कुल्लू में घूमते देखा था।"

चौकीदार भौचक्का हो मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर बोला, "चलिए, स्टीवन्सन साहब की मेम मुझको बहुत अच्छी तरह जानती हैं, में उनसे पुछवा दूं।"

"तो साहब नहीं जानते क्या?"

"जानते तो वे भी हैं, पर कुछ तेज़ मिज़ाज हैं और नहीं कह सकते कि कब लट्ठ लेकर पीछे पड़ जाएं।"

"ओः! तो वे अपनी मेमसाहब पर लट्ठ लेके पीछे पड़ते होंगे?"

"वे बेचारी बहुत ही भली औरत हैं। आपने उनके बच्चों को देखा है, बहुत ही सुन्दर और मधुर बोलते हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होंगे। मैंने बच्चे नहीं देखे।···"

"देखो रहीम! तुमको ताले का मूल्य दे दूंगा और इनाम भी दूंगा। कल सायंकाल जब मैं आया तो द्वार बन्द देख बहुत परेशान था। यहां कोई दूसरी रहने की जगह नहीं। स्टीवन्सन से मेरा परिचय नहीं था। इसलिए ताला तोड़कर सो गया। अच्छा, एक घण्टे में मैं स्टीवन्सन साहब के साथ स्केटिंग के लिए जा रहा हूं, तुम भी चलना। तुमको इनाम दूंगा। तुम मुझे स्केटिंग करना सिखाना।"

"पर सरकार! मैं तो जानता ही नहीं। हां, अगर मेमसाहब चलें तो वह बहुत अच्छा स्केटिंग जानती हैं। साहब भी कभी पीछे रह जाते हैं।"

"फिर भी चलना। मैं अवश्य गिर पड़ूंगा। इस कारण तुम मुझे उठने और चलने में सहायता तो दे ही सकते हो।"

चौकीदार समझ रहा था कि कोई धनी आदमी है। सैकड़ों रुपये व्यय कर केवल स्केटिंग का शौक पूरा करने के लिए आया है। बहुत बड़े इनाम के लोभ में ताला तोड़ने की बात छोड़कर वह साथ चलने पर विचार करने लगा।

उसे चुप देख बड़ौज ने कह दिया, "यह कुली खाना बना रहा है। तुम इसकी सहायता कर दो और इसको समझाकर चलने के लिए तैयार हो जाओ।—अरे मोहन!" उसने कुली की ओर देखकर कहा, "खाना बनाकर तुम सामनेवाले बंगले पर चले आना। स्केटिंग करने के बाद हम भोजन वहीं पर करेंगे।"

बंगले के साहब से बहुत हेलमेल की बात सुन खानसामे के सब संशय दूर हो गए, और वह स्केटिंग-ग्राउण्ड मैं चलने के लिए तैयार होने लगा।

बड़ौज के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब बिन्दु को भी स्केटिंग के लिए जाने को तैयार देखा। बड़ौज ने पूछ लिया, "तो आप भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चल रही हैं?"

इसपर पति-पत्नी दोनों हंस पड़े। डाकबंगले के खानसामे ने बिन्दू को स्केट्स बांधे और उसके हाथ में एक लम्बी-सी छड़ी पकड़ा दी। छड़ी के नीचे लोहे की तीखी नोक लगी थी, जिससे स्केटिंग करनेवाला अपना सन्तुलन ठीक रख सकता है।

दिन-भर बिन्दू प्रसन्न रही। बड़ौज ने बिन्दू के बच्चे भी देखे। सत्य ही वे उसको बहुत प्यारे लगे। बिन्दू स्वयं हैरान थी कि उसके मन में जो उल्लास पैदा हुआ है वह पहले कभी अनुभव नहीं हुआ था। वे लोग भोजन के बाद विश्राम के लिए रिटायर हुए, तो बड़ौज डाकबंगले पर चला गया। उसको सायंकाल की चाय के लिए स्टीवन्सन के घर पर निमन्त्रण था।

जब स्टीवन्सन और बिन्दू सोने के कमरे में पहुंचे तो स्टीवन्सन ने बिन्दू से पूछा, "डार्लिंग, बहुत खुश मालूम होती हो आज?"

"हां, कदाचित् यह आज के खुले मौसम के कारण है।"

"खुले दिन तो यहां पहले भी आते रहे हैं। जब वह आदमी सैली का मुख चूम रहा था तब तुम्हारी आंखों में विशेष चमक उत्पन्न हो गई थी।"

बिन्दू ने अपने पति के गम्भीर मुख को देखा तो वह भी गम्भीर हो गई। उसने कह दिया, "मुझे तो ऐसी कोई बात अनुभव नहीं हुई। हां, इतनी बात अवश्य है कि जब कोई आदमी मेरे बच्चों की प्रशंसा करता है तो मुझको प्रसन्नता होती है। इसके लिए में विवश हूं। यह तो एक मां के लिए स्वाभाविक बात है।"

"परन्तु बिन्दू, वह सैली का मुख चूम रहा था और तुम्हारे हाथ तुम्हारे गालों पर क्यों चले गए थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझ तो इसका कोई स्मरण नहीं।"

"मुझको स्मरण है।"

"आपको तो व्यर्थ में मेरी निष्ठा पर सन्देह होता रहता है।"

"तो फिर तुम मेरे साथ विवाह क्यों नहीं कर लेतीं?"

"क्या होगा विवाह से? गिरजाघर की उस औरत की तस्वीर के सामने बात करने से अधिक पक्की हो जाएगी क्या?"

"तुमको उस औरत की मूर्ति में विश्वास क्यों नहीं होता?"

"नहीं होता, क्या करूं? आज तक ईसाइयों के इस देवता ने कोई चमत्कार भी तो नहीं दिखाया।"

इसपर स्टीवन्सन चुप हो गया। इस प्रकार के पूजा-पाठ में उसका अपना भी तो विश्वास नहीं था। इसपर भी वह समझता था कि उसके सामने वचन देने से बिन्दू उससे अधिक बंध जाएगी।

बिन्दू ने कुछ विचारकर कहा, "यदि आप कहते हैं कि विवाह कराने से अधिक घना सम्बन्ध हो सकता है, तो चलिए कल ही चलें। जहां आप कहें, चलने के लिए तैयार हूं।"

"इस वसन्त ऋतु में कलकत्ता चलेंगे।"

"तो इस मिस्टर बिलमौर का पता लिख लीजिए। इसके सामने ही हम विवाह करंगे।"

"नहीं, इसके व्यवहार ने तो मेरे मन में ईर्ष्या उत्पन्न कर दी है। आज स्केटिंग के साथ भी वह तुमको देख-देखकर आनन्द-विभोर हो रहा था। जब तुमने एक पांव पर खड़े होकर चक्कर लगाने आरम्भ किए, तो वह मन्त्रमुग्ध हो तुमको देखता रह गया था।"

"तो मैं क्या करूं? भगवान ने मुझे सुन्दर बनाया है, तो इसमें मेरा क्या दोष है?"

"डार्लिंग! क्या बात है, मैं समझ नहीं सका। मुझे यह आदमी जाना-बुझा-सा प्रतीत होता है और कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुमको यहां से ले जाने के लिए आया है। इसीसे मेरा हृदय धक्-धक् कर रहा है।"

अपने पति के इस कथन से तो बिन्दू अपने मन की बात पर विचार करने लगी। वह लेटी हुई विचार कर रही थी कि यह कौन व्यक्ति हो सकता है, जिसने उसके मन में इतना उल्लास भर दिया है। विचार करने पर उसको अपने पति का कथन सत्य प्रतीत होने लगा। उसे उस आदमी की ओर देखकर विशेष आनन्द की अनुभूति हुई थी। वह विचार कर रही थी कि क्या वह किसी ऐसी रूपरेखावाले आदमी को जानती है।

एकाएक उसे अपने प्रथम प्रेम की कथा स्मरण हो आई—वह दस-ग्यारह वर्ष की हो रही थी। एक दिन उसके मन में कुछ वन-पुष्प एकत्रित करने का विचार उत्पन्न हुआ और वह वन को चल पड़ी थी। वनवासी लड़कियों की भांति वह भी अर्धनग्नावस्था में थी। ढूंढ़-ढूंढ़कर पुष्प एकत्रित कर रही थी कि उसको एक आवाज़ सुनाई दी—'इनको अपने बालों में खोंसती जाओ न!'

उसने घूमकर देखा तो बड़ौज उसके पीछे खड़ा था। वह मुस्कराई तो बड़ौज ने उसकी झोली में से एक बड़ा-सा फूल उठाकर उसकी चोटी में खोंस दिया।

उसने उसको मना नहीं किया। जब वह फूल खोंस चुका तो उसने पूछ लिया, 'इससे क्या हुआ?'

'बिन्दू अद्वितीय सुन्दरी हो गई है।'

'सत्य?'

'हां!' यह कह उसने उसका मुख चूम लिया।

तब···तब···इसके आगे वह विचार नहीं कर सकी। उसके मन में तब का बड़ौज आ विराजमान हुआ था; और यह डाकबंगले वाला आदमी उसकी एक विकसित प्रतिकृति ही प्रतीत हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो वह बड़ौज है?' वह अपने मन से पूछ रही थी। 'निश्चय ही वही है। तो वह यहां क्या कर रहा है—मुझको देखने के लिए आया है?—तो उसके पति का यह सन्देह सत्य है कि वह उसको ले जाने के लिए आया है?'

ज्यों-ज्यों वह विचार करती थी, त्यों-त्यों उसको बड़ौज के आने का कारण स्पष्ट होता जाता था। फिर एकाएक वह अपने पलंग पर से उठी और अपने पति की ओर देखने लगी वह सो रहा था। वह कपड़े पहनकर कमरे से बाहर निकल आई। बाहर कोठी के लान में बच्चे बर्फ के गोले बना रहे थे। बिन्दू वहां आई और अपनी बड़ी लड़की सैली को साथ ले नौकरानी से बोली, "जब साहब उठें उनसे कहना कि मैं उस डाकबंगले पर हूं, वे वहां आ जाएं। चाय हम वहीं पर पिएंगे।"

मार्ग में जाते हुए सैली ने पूछा, "मम्मी! किधर जा रही हो?"

"उस आदमी से बात करने जिसने तुमको 'किस' किया था।"

सैली हंस पड़ी। उसने पूछा, "वह कौन है?"

"एक मित्र है।"

बड़ौज डाकबंगले के बरामदे में बैठा धूप सेंक रहा था। वह बिन्दू को इस प्रकार अकेली आती देख चकित रह गया। उसकी समझ में आया कि वह उसे पहचान गई है और उससे पृथक् बात करने के लिए आई है। इस कारण वह प्रसन्नता में उछलकर उठा और बिन्दू का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ा, "आइए मिसेज़ स्टीवन्सन! बहुत कृपा की आपने।"

इतना कह उसने सैली को गोद में उठाकर पुनः उसका मुख चुम लिया। बिन्दू को ऐसा अनुभव होने लगा मानो वह उसका ही मुख चूम रहा हो। इससे उसने कुछ डांट के भाव में मुस्कराते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा, "डोण्ड स्पाइल दि चाइल्ड।"[1]

"यह मेरे मन में किसीकी स्मृति हरी-भरी कर रही है। मैं उससे बहुत प्रेम करता था।"

"वह आपकी लड़की थी क्या?"

"नहीं।" बड़ौज ने उसकी आंखों की और देखते हुए कहा, "वह मेरी पत्नी थी।"

"तो उसका क्या हुआ?"

"इसपर बड़ौज खिलखिलाकर हंस पड़ा। इस समय तक दोनों बरामदे में पहुंच गए थे। बिन्दू आशा कर रही थी कि उसका पति किसी भी समय उसके पीछे-पीछे आ सकता है, उसके आने से पहले ही वह बात कर लेना चाहती थी। इस कारण उसने बैठते ही कहा, "देखो बड़ौज! अब मुझसे आंखमिचौली नहीं खेली जा सकती। प्रात:काल से ही यह खेल खेलते-खेलते मैं थक गई हूं। पहले तो मैं समझ नहीं सकी थी कि मैं क्या खेल खेल रही हूं। अब समझ गई हूं। बताओ, तुम यहां क्यों आए हो?"

"तुम्हें ले जाने के लिए ।"

"यह सम्भव है क्या?"

"इसमें असम्भव क्या है?"

"मैं बताती हूं। वह यहां का मजिस्ट्रेट है। इस सर्दी की ऋतु में कचहरी बन्द है। इसपर भी उसकी मजिस्ट्रियल पावर उसके पास है। वह तुमको कैद करा सकता है। यहां से धक्के दे-देकर निकलवा सकता है। तुमपर कोई झूठा-सच्चा अपराध लगाकर फांसी भी दिलवा सकता है।"

"मैं उसके ऐसा करने से पहले काम तमाम कर दूंगा।"

1. बच्चे को बिगाड़ो मत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब क्या होगा? तुमको पकड़कर फांसी पर लटकवा दिया जाएगा और ये बच्चे अनाथ हो जाएंगे। मैं तो विधवा हो ही जाऊंगी।"

"उसके पाप का फल उसको मिल जाएगा।"

"उसने पाप किया है क्या?"

"उसने एक अल्पवयस्क निर्धन की पत्नी को वाग्जाल में फंसा-कर, धन का लालच दिखाकर उसे पतित किया है।"

"पर ऐसा तो आज के संसार में सभी कर रहे हैं। ईसाइयत के प्रचार के लिए ही लाखों रुपये अमेरिका और इंग्लैंड से आते हैं। ये इसीलिए तो हैं, कि देश के निर्धन अंपढ़ लड़के-लड़कियों को प्रलो-भनों में डालकर ईसाई बना दिया जाए। उद्देश्य तो ठीक है। उपाय वैसा है, जिसके लायक यहां की जनता है।

"यही बात मेरे साथ हुई है। मैं कम शिक्षित थी और निर्धन की पत्नी थी। मास्टर धनी और अधिक पढ़ा-लिखा था। वह मुझको भेंट में बढ़िया पदार्थ देता रहा और मैं स्वेच्छा से उसके साथ चली आई। उद्देश्य तो ठीक ही था। अब मैं धनी आदमी की पत्नी बन गई हूं।"

"क्या अब भी तुम यहां स्वेच्छा से ही टिकी हो?"

"हां, परन्तु बात वही है। केवल रूल बदल गया है। मैं ईसाई नहीं हूं। परन्तु वातावरण के वशीभूत एक ईसाई की पत्नी हूं। मैं स्टीवन्सन की पत्नी नहीं हूं, परन्तु अपने बच्चों के सुख और प्रसन्नता के लिए इनके पास पड़ी हूं।"

"तुम झूठ बोल रही हो। मुझे धोखा दे रही हो जिसमे कि मैं यहां से बिना तुमको लिए लौट जाऊं। तुम बताओ मेरे साथ चलोगी अथता नहीं?"

"मैं तुम्हारे साथ जाना चाहती हूं, पर जा नहीं सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों?"

"इन बच्चों के लिए। मुझे ये बहुत प्यारे हैं। इनके लिए ही इनका पिता भी प्यारा है।"

"और मैं? तुम्हारा कुछ नहीं हूं क्या?"

"तुम···तुम···! मैं कुछ नहीं कह सकती। मेरा हृदय कुछ कहता है। वह प्रात:काल से ही कह रहा है। परन्तु मैं उसके कहने का अर्थ नहीं समझ सकती। इस कारण बताने में असमर्थ हूं।"

"इसका अर्थ मैं तो यह समझता हूं कि तुम मुझसे प्रेम करती हो, परन्तु सांसारिक और सामाजिक बन्धन इन बच्चों के द्वारा तुमको स्टीवन्सन के पास ठहराए हुए हैं। उसने तुमको सांसारिक सुख में लिप्त कर मुझसे हर लिया था और अब तुमको ये बच्चे दे दिए हैं। इस भेंट को स्वीकार कर अब तुम उसको छोड़ नहीं सकतीं।"

कुछ क्षण विचार कर बिन्दू बोली, "तुम्हारा अनुमान ठीक ही प्रतीत होता है। तुमसे प्रेम भी है और उसका अहसान भी है। अभी तो अहसान का पलड़ा भारी लग रहा है।"

"किन्तु बिन्दू, मैं अनुमान करता हूं कि तुम मेरी हो ,और इनका पिता चोर है। जैसे चोर किसी बच्चे को मिठाई के लोभ में फंसाकर उसके शरीर के आभूषण चुराकर ले जाता है, वैसे ही मेरे साथ हुआ है। मैं उस मिठाई के प्रलोभन को समझ गया हूं और अपने चोरी किए गए आभूषण को भी पा गया हूं। अब मैं अपना आभूषण यहां से ले जाऊंगा और देखूगा कि मुझको कौन रोकता है!

"सुना है, मेरी मां के साथ क्या हुआ? मेरे पिता और मेरी मां एक सैनिक अफसर की लुमडिंग में नौकरी करने लगे। उस सैनिक अफसर की पत्नी ने मेरी मां और पिता को धन दिया और फिर उस अफसर ने मेरी मां का अपहरण कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाद में जब मेरी मां को इस चोरी का ज्ञान हुआ तो वह उस अफसर को छोड़ मेरे पिता के पास चली गई। वहां उसने इन ईसाइयों को वही कुछ करते हुए देखा जो सैनिक अफसर की पत्नी ने उसके पति के साथ किया था। अमेरिका से बहुत-सा धन मंगवाकर हमारे सजातियों को सुख-सुविधा देकर ईसाई बना लिया और उनके गले में से उनके देवता-रूपी आभूषण को हर लिया। वे लोग जो वन में नंगे रहते हुए तथा लड़के-लडकियां इकट्ठे जल-क्रीड़ा करते हुए भी बलात्कार नहीं करते थे, वहां शरीर ढ़ककर रखते हुए भी, पक्के मकानों में रहते हुए भी और पुलिस और सेना के अधीन वही कुछ करने लगे जो स्टीवन्सन ने तुम्हारे साथ किया था।

"मां और पिता को सेना के अफसर के व्यवहार में और इन पादारियों के व्यवहार में अन्तर समझ में नहीं आया। इससे वे दोनों ईसाइयों की बस्ती को छोड़कर पुन: जंगल में चले गए हैं। मैं उनको मूर्ख समझता था, परन्तु आज तुम्हारी बात सुनकर समझ गया हूं कि वे ठीक हैं। वास्तव में तुम तो उस जाल में फंस गई हो जो ईसाइयों ने स्टोप्सगंज में फैलाया था। वहां के रहनेवाले सजातीय नाग भी अपने को सुखी और धर्मात्मा समझते हैं। अपनी पत्नियों को दूसरों की प्रेमिका बने देखकर भी अपने को वनवासियों की अवस्था से उन्नत स्थिति में मानते हैं।

"परन्तु मेरी मां और पिता की आंखें खुल गई हैं और वे अब यहां सुख और शान्ति अनुभव नहीं करते।"

"यही अवस्था मेरी भी है।"

"तो क्या तुम भी वन में जाकर रहना चाहते हो?"

"हां, किन्तु तुमको साथ ले जाकर, अन्यथा तुम्हारी हत्या करके।"

"में साथ तो नहीं जाऊंगी; हां, तुम मेरी हत्या कर सकते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चलो, में तुम्हारे साथ किसी एकान्त स्थान पर चलती हूं जहां तुमको कोई मेरी हत्या करते देख न सके और तुम सुख और शान्ति से अपने माता-पिता के पास जाकर रह सको।"

"ठीक कहती हो। इन ठगों के साथ ठगी करना पाप नहीं। किधर चलती हो?"

"मैं बताती हूं, आओ।"

बिन्दू उठी तो बड़ौज भीतर जाकर अपना रिवाल्वर ले, उसे अपनी पतलून की जेब में डाल, बाहर आ गया। बिन्दू ने सैली को गोद में उठा लिया और उसको लेकर अपनी कोठी के पिछवाड़े एक पहाड़ी टीले पर चली गई। वहां जाकर बोली, "जल्दी करो, अभी तो एकान्त है ।"

"परन्तु तुम इसको किसलिए लाई हो?" उसने लड़की की ओर संकेत कर पूछा।

"ताकि तुम मुझे मारकर मेरी निशानी अपने साथ ले जा सको।"

इसपर बड़ौज ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया। सैली ने देखा और न जाने उसने क्या समझा कि वह अपनी मां के गले से चिपक-कर चीखें मारने लगी। बिन्दू ने उसको चुप कराने के लिए लड़की का मुख चूमा और उसको एक ओर हटाने का यत्न किया। किन्तु लड़की पूरे बल से अपनी मां के गले से चिपक गई। साथ ही वह ज़ोर-ज़ोर से रो भी रही थी। जब बिन्दू उसको एक ओर नहीं कर सकी तो बड़ौज से कहा, "एक ही गोली से दोनों को चुप करा दो न।"

बड़ौज परेशानी में यह नाटक देख रहा था, वह लड़की को साथ ले जाने का विचार कर रहा था। परन्तु उसको रोते-चिल्लाते और मां से चिपटते देख वह हताश हो गया। उसने कह दिया, "यह मुझसे नहीं हो सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने रिवाल्वर फेंका और वैसे ही वहीं से कुल्लू की ओर चल पड़ा। बिन्दू देखती रह गई। जब वह जाता-जाता बहुत दूर बर्फ के टीले के पार चला गया, तो बिन्दू ने रिवाल्वर उठाया और डाक-बंगले की ओर चल पड़ी।

इस समय तक स्टीवन्सन डाकबंगले में पहुंचा हुआ था। वह खानसामे और कुली से पूछ रहा था, "मेमसाहब यहां आई थीं क्या?"

खानसामे ने बताया, "हां हुज़ूर, यहां आई थीं और यहां के साहब के साथ कोठी की तरफ चली गई थीं।"

वह अभी खड़ा विचार ही कर रहा था कि वे किधर गए होंगे कि दूर से सैली को गोद में लिए बिन्दू आती दिखाई दी। वह इसका अर्थ नहीं समझ सका।

बिन्दू आई तो रिवाल्वर, जो वह उठाकर ले आई थी, अपने पति को पकड़ाते हुए अचेत हो, उसके पांव में गिर पड़ी। प्रातःकाल से पड़ रहा मस्तिष्क पर बोझा अब उससे सहन नहीं किया जा सका।

ooo

Central Library
167976
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167976

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143

वर्ग संख्या.......GUR - V आगत संख्या 167976

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमांस से भरपूर एक रोचक उपन्यास

वनवासी लोकप्रिय उपन्यासकार गुरुदत्त का एकदम नई शैली में, नये कथानक में, रोमांस से भरपूर एक बहुचर्चित उपन्यास है। इसमें अपने ही देश के उन लोगों का चित्रण है जो सभ्यता-संस्कृति में हमसे इतने भिन्न हैं कि सहज विश्वास नहीं होता कि वे हमारे ही देशवासी हैं। हिन्दी उपन्यासकारों में गुरुदत्त को इस उपन्यास के जरिए एक नई पहचान मिली थी। इनकी रचनाएँ उद्देश्य लिए हुए होती हैं। वे भारतीय परम्पराओं और आदर्शों का समर्थन करती हैं। रोचक तो वे होती ही हैं। यह उपन्यास उनकी ये सभी विशेषताएँ लिए हुए है।

आवरण डिज़ाइनः स्कैनसेट

उपन्यास

FSC

ISBN 978-0-143-45487-8

9 780143 454878

MRP ₹150 (incl. of all taxes)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar